अध्याय - ५

चापाधि हिन्दी कविता का मुल्य विषयक अध्ययन

( १४६० - १५०० )
प्रधानमंत्री काव्या जब मनोरंजन पर पढ़ती थी तब हीवी शरीर के अंतर्राष्ट्रीय स्विचवालय एक नियत्त्व पिन्न प्रणाली का स्वर नहीं।

राजनीति तथ्यों के प्राचे के कहलाता एक नितांत्व पिन्न प्रणाली का स्वर नहीं।

राजनीति तथ्यों और पीड़ाबाट तत्त्वों के उपर आधार श्रेष्ठदाता से दूर - अन्य श्रेष्ठ यौगिक की मुद्रा है जिसे काव्या नहीं फांसी देती थी। अपर कायम जा गुज़ार है। क्योंकि 1964-65 के आसपास नयी काव्या या प्रधानमंत्री काव्या की गाँव (अपनी राह पर) प्रमुख फिल्मों की प्राप्त बनाई रही, जानकारी हम लेख की लामिकता जनता में अस्तित्व है, जानकारी है, फिल्म दर्खंड और निर्देश की अर्थता दोनों तरह में आवश्यक रही। किसी गुरुओं में देखा गया है कि प्रधानमंत्री काव्या ने श्रावण हीरो संस्करणों के पुत्र करते हैं जो तत्त्व प्रयोग किया।

वहलत लघु पूर्व की लुढ़ीयों की उड़े होने लगा। क्योंकि 1964 के आसपास फिल्म से बाहरी काव्याओं में नये कवियों की वांछनीयता और तत्त्व प्रयोग में एक अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्ययन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्यायन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्यायन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्यायन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा। कुछ साहित्य के लगभग बुद्धिविविधता की जो नयी चुरानी पीढ़ी काव्या ने अपने अध्यायन के लिए आधिकारिक रूप से अन्तर वस्तुक्तत होने लगा।

1. इस परामर्श की प्रथा के लिए कांग्रेस विश्वास, भारतीय विश्वास की परिवारी: विद्यान्त की पुष्पिका,

पृष्ठ ११-१५.
हैरावत् नामवरिष्ठ नेता ने इस विषय में कहा है: वन् १६६२ के आयोजन में महायुग का अन्त हुआ। १६६२ से स्वातंत्र्यपीठ हिंदी साहित्य का जो दूसरा शताब्दी जो आरम्भ हुआ उसे माना मंगल का शताब्दी यह बताई है। चीन के हार्मोनियम का प्रलय तीव्र स्वप्न मंगल था। आंदोलन के आगे नगर्ने व्याख्या तथा शताब्दी में प्रत्येक विश्वास का शताब्दी न थी। (स्वातंत्र्यपीठ के विषय का वातावरण था) साहित्य में

1. हैरावत् नामवरिष्ठ: स्वातंत्र्यपीठ हिंदी कविता, पृष्ठ २८५-२८६।
2. लेखक सूचना: नया काश्मीर: नये पृथ्वी, पृष्ठ २५४।
कह युगा पीढ़ी खरंज़ों में हुई जिनके न थो राष्ट्रीय मुनित संपर्क में हिस्सा किया था और न जिनके स्वाराम का कोई स्वर्ण देखा था। इस पीढ़ी के युगा साहित्यकार थे। मध्यकाल के ही है और दौरे से आने के कारण स्वाराम स्वाराम युग के प्रादूर तत्त्व में उच्च श्रृंखला में बोधिन रह गये थे। --- मनुष्यता समाजवाद निदान अन्तर्वेद को नहीं बलवत उन आदर्श को थी। और वह नी भाषा पढ़ाई कि कनून १४५० ईस १६६० तक की कविता में जीवन के दृढ़ता-विश्वास बिन्दुओं का, नीतियों का श्रवण कर एक विकास परे वातावरण में बोलता रहा। और कनून १६४० ईस १४५० होने वाली कविता की भारतीय विदेशिय यात्रा कि और कविता लापरवाही-राजनीतिक दलालों के रहस्य भाषायी निर्माण की अधिक सार्थक तथा अन्वेषण अर्थ सेने के मुद्रे से सम्बंध हुई है।

गोविन्द किशोर ने यह नीति आदर्श के विषय में लिखा है: सन १५५० के आध्यात्मिक चित्त कविता में एक ऐसा आध्यात्मिक श्रवण नचिकट हुआ जो हमारी बुद्धि की पहचान अन्वेषण उप से पुंजी , प्रागैतिहासिक और अविरल ज्ञाता है।

ढाँचा परस्य भाषाशास्त्र में सन १५५० की नीति आदर्श के वेदांतित करते हुए कहा कि सन १५५० को वेदांतित करने का मकरण है - उन वहुत-से उपरयोग की वेदांतित करना , जिन्हें हम ब्रह्मविलयानी समान को यही अधिक आयु यादी है। फिर चाल-पाबंद कवियों में नये और सिसू कहतालाला चाहे न गुड़े हो ( हलाली ऐसा लोचन गलत है। ) पर यही यह स्नातित कुछ संरचन बाहर की कविता कृष्ण में एक संपूर्ण परिसंचरण कर आया है, जिसे नबब अवधार नहीं लिखा था। और हो.... एक विश्वास मौद्र उद्यम ने आध्यात्मिक या भाषा की कविता में आया है ( आपका वह वसूली चित्रों में नहीं है, पर उसका स्वर्ण कविता में सबसे अधिक स्पष्ट हुआ है।)

उन उद्घाटक के नीति हिषण की, उसकी भाषा ज्ञाताओं -अन्य विभाग के बीच

---------------------------

1. नामग्रंथसंग्रह : श्रीकृष्ण किशोर चित्र, श्रीकृष्ण, पं. विद्याधर वर्मा, उदयपुर, जनवरी-मार्च १९७३।
2. गोविन्द किशोर : आदोचाना, जनवरी-मार्च, १६५२- पृ५६.
3. बदो : आदोचाना, जनवरी-मध्यमान, १६५२, पृ५६।
व्यक्त करने की जैसी कोशिश मिलते तो गाँव-गांव लोगों की कथित में निर्मलता है, पानी की कांपता में उपलब्ध नहीं है। २ यही ही दो शीर्षक नै चार-चार के बाद की कथिता नयी कथिता के लिए महत्वपूर्ण है तके बाद की कथिता का नवीन २० नै चार के बाद की कथिता का नवीन व्यक्त करनेके समय प्रतिष्ठानों की निर्मित के प्रति या के आस्था-प्रथा, भावना और अवशेष की अन्वेषान्वित प्रस्तुत करने लगती है अतः दुर्गे हौरर पर उसके द्वारा उल्लम्ब म्यान्य विश्वास द्वारा, जीवनसाधन रामायणक ख्यातिस्वरूप, नैषं- प्रतिभावत तथा धार्मिकता वाले दुर्गे आचरण का विरोध और बदलाव करता है। 

यह नयी काव्यालय के सीमान्त के प्रारंभ के पत्ते के विश्वास में इनका दावा ज्या जाता है कि एक के ६० और एक के ६२ के अभाव में गोमत्र की रीति का स्पष्ट एवं उद्भव होने के साथ सिर्फ़ उसी स्पष्ट दी जाती है। काव्यालय के सीमान्त का दूरार हौरर एक के ७० पर पहला है। ये गिरिश्रावमार माघुर, ग्रामिण रक्ष्य मान्यता नीचे नीचे इस प्राचीन वस्त्र की कथिता की अपनी समीक्षा का विश्वास बनाया है। अतः यह उपलब्ध काव्य अनुभवों के आचरण पर काव्यालय की प्रतिष्ठाओं को निर्देशित करता है तो एक के ६० तक के काव्य की दो सीमान्त के अन्तर्गत समलैंगिक होती है।

नामकरण:

---------------------

प्रयास: यह देखा गया है कि प्रत्येक काव्यालय का नामकरण अपनी विशेष प्रकृतियों को पूरीत लगना राखना होता है। नामकरण के लेखक के प्रति यही विशेषता युग की काठिन्या, भ्रामणाद, प्रतिष्ठा, प्राचीनता अथवा आदि के नाम सिद्ध होने काव्य-प्रकृतियों के थोक का है। एक के ६० तक के बाद की कथिता के लिए होने और एक नाम नै देने की अपेक्षा विद्वानों के तत्कालीन अभाव का नाम सुधारित किये हैं। गिरिश्रावमार माघुर ने नाम देने की मदद में यह दिया एवं जब नाम तो अलग नाम तो अलग है।

-------------------------------

१. दो प्रमाणप्रमाण दोरवस्त्र: नयी कथिता का प्रारंभ, पृ. २२०-२२१।
२. गिरिश्रावमार माघुर: नयी कथिता: दीघाद्र और संभावनाये, पृ. १४७।
हिंदी भाषा के लिए कविता के शीर्षक के परिवर्तन कराया है। हाँ, रामदास मिश्र ने अपनी पुस्तक अर्ज का हिंदी साहित्य: संवेदना और सूक्ष्मता में, "संग्रहित कलात्मक वीर्य और नये नारें का वीर्य" शीर्षक के लेख में इस कवितारा का नाम 'राज' की कविता की दिया है। जब भी प्रचलित कविता का नाम निर्देश हो जाता है, तब हाँ, राज को उल्लोक कविता बना दिया है। हाँ, राज का भाषा ठीक से नहीं है, लेकिन हाँ, राज कविता का नाम 'राज' के अंतर्गत है। प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होता है कि प्रतीत होती है।

-----------------------------
1. हाँ, रामदास मिश्र: अर्ज का हिंदी साहित्य: संवेदना और सूक्ष्मता, पृ ४४।
2. हाँ, राज कविता: आपकी कविता: नये बन्दर्म, पृ २०।
3. हाँ, परमाणु श्रीवास्तव: नयी कविता का परिपेक्ष, पृ १२७-१२८।
4. नवनिर्मित: नया काव्य: नया पुस्त, पृ २५४।
राजनीतिक परिवर्तन :-

नयी कविता के पूरे दौर के लाय ( सुविधा के लिए ही नहीं, सन् 1860 के बाद की खबर में ) राजनीति को प हो जार एक जीवन और अग्रिमार्थ सम्बन्धी माना गया और उस मानविक स्थिति के प्रति जवाबदेही का अनुभव किया गया , जो बाज़कार नये शिक्षित पर मुक्तातिथित होने की अपेक्षा रहती है । 2 जनवरी 1842 के आम-जुलाई के बाद फिर फ्रांस के बहुत होने की अवस्था रहती है । मानवता राजनीतिक चौवं उनका ही हार कपड़ा रहा । दो दखलदारी मिलनों के पश्चातः मछली बन जाते जिस्तित पुनः नहीं हुआ । मोह मोहाते शब्दों के बाद में मदद फिर, नैसर्गिक शिक्षा का तारी प्रभाव मानवीय जनता पर रहा । भारतीय जन-जीवन के बाद फिर फ्रांस के वर्ष-गिरि लोक अपने जमाने का प्रमाण किया । गांधीजी के लीपरा राजनीतिक उत्कृष्ट-शिक्षाएँ होने पर भी नैसर्गिक की आवश्यकता को तारी योजना की और विशेष रही । समयी

1. दा० परमाण्ड शोधक्षेत्र : नयी कविता का परिणाम , पृ १२०.
ग्राम-नैतिक का विकास कह-कहे उपरोधों से लाभ ही संख्य हो सकता था। अतः ग्रामों की आत्म सनिभिता का प्रति एक होने की संभावना दूर हो करी , राजकीय वलों में बसा मूली की कम स्वास्थ्यता के ५५-६५ वर्षों के बाद स्पष्ट दृष्टिगत होने को लगी।

यहाँ का लिहिन्दुस्तानी का प्रसन है नारायण बनसा की बासी को भूखिनाम बनाने के लिए मुज्ज़ा वल करने वाले राजकीय लोगों संबंध लक्ष्य में और राजीवे की दलने में अल्पका लहज़ा रहे। लोगों की फ़ूलें की चुराना के लिए वे हरम बाज़ार रहे। नारायण बनसा को फ़ो नैस्टिकी को। नैवेद्यत भारत में प्रभावक रहा , देश आन्तरिक लक्ष्य के अभाव में दृढ़ता-वर फ़ूल करने लगा था।

तोहफ़ातवाण: पूर्ण घटना - उनकी लक्षा सन् १६६२ में भारतीय राजकीय की चित्रकला पर चीन ने रेकिगरी के लिए दहलैत से उतरकर भारत पर तूफ़ान आक्रमण किया। बारें राजपूत में गहरी विषयावस्था का तत्कालिन है। गया - गान और देश शीर्ष लक्ष्य चाही गया (जलाभाव हो गया)। इसे देश ने स्थिति पर उस घटना तत्कालिन शुरा प्रभाव होगा भारतीय जन में अप्रत्यक्ष निराशा, मद्र, लोक और शब्द उगरे। दुःखी दृष्टि बनाने न करा, फिर उल्लेख मुख्य राजपूत को रेकिगरी दिया। तलाशी राजस्वासनी की बी. है। हृदय घातना का पूर्ण करना बापों घटना का तीना परिनाम था। देश के अन्य द्वारों के बेटे देशी विश्वनाथ शनिवार ने किया देश ने बिल्कुल अभाव न दे सके।

मामले- मामले- मामले- मामले- मामले- मामले नारायण नारायण का जीवन हो गया। तथा नारायण का जीवन बाबा की में रचना-मंगे की - मामले- मामले के रिहायश आयी। राजकीय विक्रम ने भारतीय व्यवस्थापी में विस्तार विद्यालाय और आस्था को हिला दिया।

फो नैस्टिकी का निमित: 

-------------------------

देश की विश्वास का परिवर्तन करने प्राकृति (तोहफ़ातवाणी की) इस घटना से फो नैस्टिकी के राजस्वासन की रेकिगरी का परिणाम हो गया। नारायण मामला भारत के क्षेत्र में १६६२ की बनता हुआ निवास हो गया। यहाँ देश में अलसामल का
वातावरण का भी गया। सिराजद्दौला अभिनव जनता के लिए आकर एवं वित्सवाद का संचार करने पाता कौन से पनें रहा है ऐसा प्रतीत हुआ।

पाकिस्तानी आक्रमण:

चीनी आक्रमण से राष्ट्र की प्रकृत जैतना पर आपात पुणवा की था, अब ने दार ल्ह आक्षेषण से पूर्व विद्यादेवित को वह ग्राम्य करे जंगले पूर्व ही। पाकिस्तान ने गुरार का कहाँ कीमत दे आरम्भ कर बैंस पर अनुश्रू आक्रमण किया। घटीवार काल-वाल में यह तुरंत पहला है जिले राजधानी (अपने सत्ताँ के लिए) राष्ट्रीय स्तर का महत्व समझाया। तलाकित थानानी महान कहाँ मास्टर की प्रतिज्ञा से लेव किसान बव जाने के नारे से जारी कर तुलं उठा। पाकिस्तानी आक्रमण का न एक रोक दिया गया, उन्हें प्रभावित कर माता ने नया वित्सवाद ग्राम्य की। नाराजगी लेखियों के आस्था वित्सवाद एवं अविभ लाभ की वह निकल थी। राष्ट्रीय लेख की जात के साथ अन्तरराष्ट्रीय विप विद्वान में नी प्रस्तु देखूहा।

राजनीतिक अभिवतायः

सन् ६२ के अभार जुनाव के बाद देश में राजनीतिक स्तर में अधिकार आयी। नक्षिय एक नशा को भुलते न भुलने पर राष्ट्रवाद मार्ग का गत उसका। राजनीति में नेर निर्मत अस्त का जो दर नामा, उन्हें बाच खंडी और दल-दल के नीति को अपना कर बेड और जनता की कहानी की। घुड़बुड़ कानूनी शब्द-शब्दकर पुल्ल मल्टिवन बने।

चिंता राज्यों में संवेदन घटते नै बनाना कार्यक्रम के लिए नम ढाटाये। उनमें परस्पर स्वार्थ मन्त्र दराने होने के (कारण ) ज़म्मू हाय कायम नहीं रह ताके। इस राजनीतिक अंधवस्त्रा, अंनिकाओं और अंधाराम-नवायराम की कुशलता राजनीति ने दूसरे दौर में जनता को निर्माण दिया। सन् ६५ में अलंका व अंकलानिक कार्यक्रम का विभाजन हुआ। एक फील कक्ष जों पुरा संसार के नाम से परिचित हुआ और दूसरा कार्यक्रम आई ने।

राजनीतिक अभिवतायः

वि. वृत्तांत राजीव : स्वातन्त्र्याध्यक्ष किस्मी कानिका। पूरा २०५,
नाम। इस तरह रमा (1901 का) या श्रीमती मुक्ति की राजनीति के चौथे में प्रबुद्ध लोगों का एकमात्र लक्ष्य का नया।

आर्थिक परंपरा का विश्वासः

स्वाभाविक परंपरा हिन्दू कौँता की चर्चा के अन्तर्गत युग परिवर्तन के अन्तर्गत आर्थिक परंपरा की चर्चा करते हुए दिखाया गया था। नीतियों व व्यवस्थाओं के लिये ग्राम-भारत में अनेक-अनेक समस्याएँ की स्थापना एक पहलु हुई थी। प्रथा 1946 के आरंभ से हिन्दी नीतियों व व्यवस्थाओं के मध्य सातारा के समय में मार्गीत जन-जीवन में कुछ विशेष आर्थिक परंपरा ही उपलब्ध थी। अंततः इस आरंभ में भी कि आज नहीं तो का नया प्रवेश मराठी वर्तमान में अद्वैत व उदार साधारण पर स्वागत-व्यक्ति उदार उद्देश्य, परन्तु जीवन एवं पालन कल्याण के आदर्शों के प्रसाधन यह आदर्श निरूपित ही नहीं। सुपर यथा लोक कल्याण के विशेष अधिकार उपयोग युद्ध की लोकार्ज को और मार्गीत लीबों की दुर्गापुर्ण के विशेष पुण्य जाने लगा।

राजनीतिक प्रसंगी कारण और आधार की कच्चाः

राजनीति में भाषाराम-सामाजिक की विशेषता और प्रकृति के दौरे से पूर्णता मार्ग से धर-धारित का बाह्य था। यह शक्ति अनुच्छेद नहीं होगा कि मार्गीत राजनीति में का कोई कारण अर्थ मुख्य की स्वीकृति ही था। ऐसा प्रश्न होने लगा कि आई (wealth) और स्वच्छन्द (power) दोनों सर्वस्वार्थ मुख्यों के रूप में आज के मानव का लक्ष्य के जाती की विशेषता यह रहे कि सांपर्क, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक अर्थ-मुख्य के प्राप्त के नैच आ गये।

समस्या का नया नाराः

सरकार ने अल्पकृति के दृष्टिकोण मानसामाजवाद का नारा जी प्रोत्साहित किया। विदेशी प्रतिष्ठान के माध्यम से - विद्यार्थी समाजों से जुड़ा हुआ और उत्पादन के समय पर वापसीय नियंत्रण रखना, देश का नियंत्रण रखना उसी समाजवाद का एक
राष्ट्रीय शीर्षक: जनाम जैनों के आर्थिक श्रीवेदना की रूपरेखा रहता ओर कोई निर्णय के लिए अन्तर्गत अनुसरण गतिविधियों का उत्तराधिकार, कार्यक्रम द्वारा कोई विशेष तरह महत्वपूर्ण था। राष्ट्र कार्यक्रम में योगदानों के स्वायत्त का निर्धारण की गई, वित्त अनुशंस्त की नीति के राज्य बदल न पाया उसके मुद्दों पर कई फाइल की गई। नीति बेसाधु का प्रत्यय बना फिट कर गया। नवी राज्य में मनोरंजन मूल्य जो रखी गई, उनी का फिट का आरक्षण का रहा। राज्य: एक गहरी तिरस्कार, आवाज ने पुनः वजन दिया। । गु. ४५ ते ५० तक चौड़े से जो धर्म थे तनु ६० तक बढ़े गये।

योगदानों मूल्यों की स्थापना के स्वायत्त नारों का उद्देश्य राजनीतिक

चीन ओर पाकिस्तान के आत्मनिर्भर के बाद नारों में देशों से बुद्धि होने लगी।
हरी मार्गों को कम करने के लिए प्रशिक्षण राज्यांतर के वक्तव्य प्रशिक्षण, प्रशिक्षण
किये जाने लगे, परन्तु मूल्यों की बढ़ी वृद्धि में इन विकासों से लोगे परिवर्तन नहीं
आया। घरेलू राज्य की यात्रा करते हुए जितना समय गया, लोगों में पंद्रहवार बढ़ाने
के बारे में कुछ विशेष अर्थशास्त्रीय कार्यक्रम अन्धवादा वहा। साल में अन्यों की ओर
के बाद बढ़ी हुई अन्धवादा के कारण, ग्रामों में ग्राम-उद्योगों की पुरातत्त्व की व्यवस्था
के अन्य से जान-गौरी फिर घोटे गया। ऐसा प्रत्यय हुआ आर्थिक मूल्यों का रचनात्मक
मानवीय मूल्यों में फिर घोटे हुए। परन्तु बाबूं की दोस्ती सहित होशियार मानवीय
मूल्यों की स्थापना में बढ़ गई।

आर्थिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रशिक्षण

चार महत्वपूर्ण विषयों के परवर्ती भी मानवीय का वह स्वायत्त रहने न हो जाया जो
स्वायत्त का पूर्व भरने का लंबा रहा। १८६६ के अंतर्गत राज्यों में-
विश्वास, उद्योग, तथा प्रशिक्षण का पुरातत्त्व एवं राजस्वाम अवल-मानव-सर्वरीत्व आवाज की
स्थापना में दीक्षित रहे। भारत में आर्थिक विषयों का वातावरण जन- ६० के परवर्ती
ओर भी गहराई पाता गया। एक ओर 'हिली' का रैली पुराने, ¿० चन्द्र महानगरों
की ऊँचाई हवाओं और चार्ल्स्टना रहा जो दुरवाये और वहुमान वाजी गरीबी महानगर
(342)

के पुटपाठों पर जीवन खिलातो, जन्मां, फली और पती रहो।

आत्मिक व्यांधका के चित्र - ग्रामों की स्पष्टता से फिलहाल, चौदहों के अभाव, चित्रों के उचित प्रभाव के अभाव के कारण गाये वासी की मातालेख लोकार्थी के बीसे फल 20-22 वषों के के परलोक में जल सकने में सक्षम न रहे रहें।


dharma परिस्थितियाँ:

स्वातंत्र्य दिन्दु कविता का मूर्खाव अभ्यास - अत्याचार चाँदी के परखेल के अन्तर्गत सामाजिक परिस्थिति की बच्चे हरेक वर्तमान में द्वितीय को एक महत्वपूर्ण अंग कहा जा रहा है। यही मध्यकाल का 60 लाख आबादी बुद्धिजीवियों के एक लाख लाख के हाथ में दूर रहा होता लगा। राजनीतिक वृष्टिघाटक, रसायन और गुरु-जीवित के वैकल्पिक का कारण उसकी मुद्रा बदलती गयीं। शरारत की खजा-फड़ का कारण यह अवसर यहाँ देखिए नहीं कर पाया, उसने अर्थीकार की मुद्रा ग़लत की। डोक्कापत, वोरान्यापत, मीठे शब्दावली के कारण बुद्धि-जीवित का धरा लगा गया। परम्परा वाद होता के लसा कोई अभिलेख नहीं था। मुख्य जों के लिए यह भाव जिन्हों ने दिशा पहल नहीं था, कारण राजनीति एवं अर्थ का मुद्रा की आन्तरिक संपत्तिवाद हों बिना यह देखा गृहार था। फिलहाल अभ्यास में सामाजिक स्वतंत्र की सबसे बड़ी स्थिति से बताया गया था तो जिस ठंडी परिस्थिताः के टटने की प्रक्रिया शुरु है कुछ की थी, अर्थात् परिस्थिता का बिंदु अपने समाज बीतने के लिए हारिया होता था रहा था। जब 60 के बाद यह प्रक्रिया महानगरों में तीजता है करी। पुराती छिड़कर और बर्षा मान्यताओं का स्वतंत्र तो हो भुला था अब समाज में विशेष वृद्धार्थ पर अलगाव की समय विकास का निर्णय है। राजनीतिक-बजाल-कौशी के कारण बुद्धिजीवियों बन के लिए अलगाव की मान्यता ही जीवन रहा। जब पुराती विरोध के लिए तत्वर था राजनीतिक बजाल-कौशी के वर्ष टटों नहीं अपनी उसका आधार लेकर बुनाई बीतने के वर्ष पुराने बर्षों के आबाद गये। देश के दूरियां तर 60 के बाद नीं एक तिथि समय ही है। अभिलेख का नामों में सत्य विरोध नहीं फिन्नु खालों गान्यों औरकर्कों के
भारत के दक्षिण दीर्घ दशक और वायुसेना गुरुओं में अन्य मनुष्य-मनुष्य का यह मेड ट्या नहीं हैं है। जब भी तो समाज में एक खाल रहते हए यह मनुष्य-सम्बन्ध का विशेष मूल्य फंस नहीं सकता। स्मृति-विश्वास चर्चा-गर्भाव, शृंग-विवरण के दशकों वे स्वास्थ्य मार्ग उजव हो नहीं रहा। महानायकों में पाश-पाश रहते हए भी मनुष्य का परिचय नहीं रहा। तो मैंने, नेत्र, शिक्षावाद, वैद्य स्थानीय मनुष्यों का पालन-पोषण को ही सल्ला? नैतिक मूल्यों का विस्तार तो हुआ, हुम्ब की जान यह है कि आत्मवाद को प्रश्न पिला। स्वास्थ्य-सांसारिक के चीजों अधिकार, आरक्षा और जन ने स्वास्थ्य लिया। वैद्यवाद मूल्यों में फ़र्मान गूढ़े-गृह उपाय का विषय का गया। वह पिला हुआ शब्द का गया।

अन्तर्राष्ट्रीय परिसंपर्क:

भारत के दक्षिण नीति दशक और वायुसेना गुरुओं में एक अन्य दशक एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए प्रशिक्षण ही था, किन्तु उसे दशक के बाद देखा गया कि 1862 में चीन ने लक्ष्य के बूढे महान देश पर - भारत पर आक्रमण किया और चीन और अमरीका की शक्ति पर पाकिस्तान, जो भारत का उत्तराधिकारी बना हो, राज्य रहा, उसने चन 1865 और जन 1869 में भारत पर आक्रमण किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि भारत की तरह वहाँ की दक्षिण नीति का पुरोहितकरण पाकिस्तान अहमद चीन के हायम्र की खुलसा बनाता नाम नम है। पाकिस्तान-भारत संघर्ष के बाद भारत के फ़र्मान नेत्र लाखवालुर शास्त्री के लिए ताज़ा काल नगर में ताज़ा चिन्ह ने फिर फ़र्मान और अन्य तीव्रताओं के द्वारा पाकिस्तान का राष्ट्रक बना।  पूरे नेत्र ने दिन के बाद भारतीय राजनीति में एक प्रतिरोधी प्रदर्शन पड़ा। शास्त्री के आगमन के बाद वह तय हुए था कि, किसी भी आंतरराष्ट्रीय मूल्यवाद को स्वर्ण और अन्य देशों को अपना बाहर पड़ गया। उदार विविधतां में दशक विविधतां के संघर्ष में दशक विविधतां के पक्षरथ का अभियान के उदार विविधतां में दशक विविधतां की पालन-पोषण कर उम्मीद ने उदार विविधतां में दशक विविधतां का अभियान कर या प्राप्त जारी रहे तो दशक विविधतां पर अभियान, शक्ति, और संघ का साधन।
(३५४)

यहा फिरा। कहीं ( कौशल्यकी ) लोकतंत्र का फल लेकर, कहीं लोकतंत्री पुलियों के लिए दुर्भाग्य संघर्ष करते देशों पर आक्रमण कर अपनी नीति का दारोगाण फूल किया। चीन और ल्यादों कम्युनिस्ट देशों में मारवेर्ड भी युगा करे के लिए युद्ध का कारण का।

वारिस्तिक पुस्तुमुखः

अधिकांश भिन्न वार्षिक पर्यवेक्षण के कारण वीणी मुल्यों का निविदन हुआ है जुड़ा था, जो के साथ आस्था, वंडास, अवस्थाप के वर वारिस्तिक में उपर रहे। परिचय के महत्त्वपूर्ण लेख - रहियो, जेन्स ज्ञान, स्टीफन विज्ञान, वार्ता, कामु, ताक्षणक, गिन्नल्य ज्ञापन के बी वारिस्तिक में भी वीणी की निस्सारता, वीर्य निर्माण फूल हुआ। पहली संस्कृति? बीसीके की नयी नीडी ने वीणी की संगीतिक के निर्देश प्रभाव लड़ा किया। कुल्लु-चोप का वर्ल्ड? नॉली, ग्राफ्का के वारिस्तिक में हुआ। यही विष्ट्रा ( इंवीडियॉ ) का बोल सारे विश्व वारिस्तिक में उपर आया। ओरेछी में न्यू राउटरी का आयोजन करा। हिन्दी में मो नया लेख की विष्णुरूप कार्य यादक है उद्दी। विश्व के देशों का निविदन और वारिस्त्रा ने चिनी चटनी की हि पर्यवेक्षक नारीली शरीर निष्कम १९४७ ईस्वी की गोष्ठ में प्रकाशित हुआ था, जबकि वहीं हिन्दी वर्ष में को स्थापित करने वाला प्रथम महत्त्वपूर्ण लेखन दक्षिणेन्द्रनेच्छर १९४७ में प्रकाशित हुआ है। इसके तो यहीं विष्ट्री होता है कि विसिन्दे देशों की वारिस्तिक और राज्यविधिक परिपत्रिकाओं में लगभग एक व्रत साधक कर रहे हैं।

अमेरिका के आफिस दार्शिक देश वे झटकर हिम्यो मुख्यों ने यही अपने को आगामी का नारी प्रमाण किया। देशों की मस्तिस दे कोचीं दूर रहने की बनकी दस नीव के इसके आचार में चित्रित हो भी का दीं। अमेरिका के एक युगा लेख स्लेन.

--------------------

५. रामलला चुडाईः हिन्दी वनकेलन, पृ २०५.
गिनकर का मास्त में - वानर शहर में आगमन उपालीचन कविता को प्रमाणित कर गया।

लेखन गिनकर :

"उसके अप्रौं जीवन है न केवल नये कविताय सुगुण कविता ने मी प्रेणता वनी।" परिस्थि प्रय ही जीवन है जीवन की मूली पीड़ी की प्रेणता करी। गिनकर परम्परा है नकारती और परिवारित वाड़ा में विप्लव करती अ- कविता रेते पीड़े पर ही विप्लव की कविता कार आयी। गिनकर जापुरा माधुर अ- कविता को अर्हतापुरा का नामकरण मानते हैं। धुतियद का प्रगौर भी हम ठारा की कविता पर लज्जा होता है। नयी कविता या प्रवृत्तीक कविता पर वो सबसे अधिक प्रभाव धुतियद का है बीं, सादृशी कविता पर भी जनक असर है। दृष्टी अत्यंत अनुष्ठान डाल, भारतीय एवं डाल का विज्ञान धुतियद के लाभप्य में है। धुतियद व्यक्तित्व को काव्य है अच्छास्वाद मानते हैं, एनर्जी काव्य के लिए दुर्भला को अभिविलय मानता है।

पावाण यह भी देता गया है फि धुतियद का जीवन-विषय निराल्ल अन्तर्यात, अर्बतुष्टि का है फि जिसके हो आमाशाज ही गया है। व्यक्तित्व में अन्तर्यात, संस्कृति के निष्ठनहीं तत्क, गुस्तार, हुड़तार मानवत्नाशी तत्व इतिहास हैं। रामायणीय या शिकितिय विद्वान का महत्व मी जग की कविता - सादृशी कविता में स्वीकार सफलता पड़ता है। रामायण के विषय में हम दर्श कहा गया है, काव्य की रचना प्रकृति के संदर्भ में रामायण-चौर वह प्रत्ययमुक्त प्रकृति है जो जाहरी परार्निष्ठताओं एवं नानाविश्वासों से उदयवर होकर उन्हीं परार्निष्ठताओं के प्रति एक आश्रीज जो अन्तर से तो तारात्म्यकाल एवं निर्क्ष लगता है, पर अन्तर से उनमें एक व्यक्तित्वात्मक संगति ( अर्थ हो ) प्राप्ति होती है ।

----------------------------------
1. कविता हुसैन : नया काव्य : नये सूक्ष्म
2. डॉ गौतम रानौड़ी : रचालनमीशर हिन्दी कविता पूरे १९५२ से उन्हों।
3. डॉ बैरेंडसिंह : अधृतक कविता : नये संदर्भ । पृ० ४५।
बहुपूर्वी संस्कृत का प्रेषण प्रापः

फिल्ड पृष्ठों में यह देखा गया कि वीरस्वरूप शताब्दी के पारंपरिक दक्ष के परमात्मा का जन्तु प्राण नित्य आया गया कि एक देश में होने वाली घटना का प्रमाण प्रापः। द्वितीय देश की जनता पर शायद ही किसी पहल न रह सके। यह कहना संभव नहीं होगा कि वो विश्वविद्यालय के बाद न केवल विश्वविद्यालय, पूर्व के देशों में की निराकर, अनान्य, विदेश, अत्यन्तर की अप्रतिमता उठी। एक ऐसा विषय दीर्घ प्रयोग किया गया कि किस मार्ग पर स्थित रहना और किस मार्ग पर चलना आवश्यक है? लेंट या जुनार का प्रापः या नूतन आदर की नौ लोट जाना या कि जन का विश्वास किसी विश्वास मार्ग पर विश्वास मार्ग में बढ़े रहना। विवेक के समस्या वाहिका पर ऐसा प्रापः प्रापः। विवाह के क्रम की तरह इसे नी उठे, अपनी दैविकता के कारण मनुष्य-विखरा किया न था तो विवाह को उलझन मिलने की दृष्टि में अवश्य प्रापः हुई। साध-साध यह नी देखा गया कि अपनी अन्तर्वक्ता मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने दिया। वह महीनों में बाल मार्ग पर स्थित रहना अथवा नूतन आदर की नौ लोट करने वाला मनुष्य अर्थात्: अपनी अन्तर्वक्ता (असे मनुष्य होने का एकावेश प्रापः साधन -गुण) गंभीर नहीं। केवल महीनों की दृष्टि का अनुभव , अनुभव हो जाने के कारण जीवन में एक रूपांतर -एक संघाट ( ८००००००००१ ) आ जाय, स्वाभाविक है, जिससे जीवन में एक प्रारंभ का चिकित्सा भावना हुई। हल्की के कारण अनुभव का अन्तर्वक्ता नहीं हुई। इसी अनुभव में ही विवेकिता को श्रद्धा दिया। हल्की अनुभव है उससे प्रापः मनुष्य हरस गुणाल कारण रहना है। उसकी सत्यता का एक मूल नहीं है। उसे इस प्रारंभ की विवेकिता से अपने को विवेकिता अन्तर्वक्ता अपनी अन्तर्वक्ता को इसका है।

लक्षण ५० के अनुसार विवेक वाहिका में जिसके विवाह साधना का प्रापः कहता रहा था हैः:- दृष्टि-विश्वास, नीति, विश्वास, हेतु, वैधिकता, अधिकाद, ज्ञान दर्शन जैसे विवेक लक्षण और विवाह कारण या प्रापः प्रापः ने किसी मार्ग में हम नहीं हैं। यह कहता अनेक से होना कि किसी किसी ने हेतु अन्तर्वक्ता वा पूर्वांत पर किसी चिन्ता का प्रापः प्रापः प्रापः नहीं किया गया ग्नित हुआ है।
किछु स्थान ने ऐसे-ऐसे किसी चिन्ता के अंपर स्वर के प्रमाण को गुणान्वित किया, न किया और उसकी क्षेत्र में उल्लेख बुद्धि उदारता। ऐसा तरह देखा जाय तो प्रमाण: प्रत्येक प्रमुख भूमिका या किंवा या किंवा यादवों के मनुष्य का प्रमाण प्रदीप स्थापित होता है। प्रमाण है प्रमाण के बिंदु का - मुद्दा हैं बंधु या किंवा या। साठौरी शाखा में चित्र का धारा के हृद में किसी शिक्षा चित्रकार को प्रभावित किया है तो परिवर्तक भूमि परिवर्तक का प्रमाण की नकार नहीं है।

पश्चिम के समाजसाधनी विकास यूनियन (शैरोपित) ने आगाजें और अंतर एक नामक पुस्तक में प्रदर्श की इस कक्षी लघुस्त्र का 6 बुद्धि व्यापक प्रविष्टारण किया। उन्होंने आधुनिक युग-संकेत को रंगिन-रंगी पारं परम्परा (आधुनिक वैन शैली कथावर) कहा है। उन्होंने युद्ध के निर्माण किया है कि वह संगठित बुद्धि एकल बुद्धि की कांग्रेसों के लिए बुद्धि की नीति का सही है। उन कंट के कार्य के ही उपाधि के शैरोपित में भाषाः : 1. ओर्जनाय - विलेन - अनुभूति - उदय (रींदको) और (2) अभियुक्त मनुष्य की दूसरे को अपेक्षा करना चाहिए, अभियुक्त को पात्रा बाह्योते। इस शैरोपित पर धातुकार या अनुभूति नहीं है।

आधर कोशिष्टा ने कहा दो यह आधुनिक कंट पर अपनी प्रत्यय पुस्तक 'योगी एक शीर्ष कामसूत्र में विषय के बिंदु के विचार किया है। उन्होंने वह संकेत से उच्चे का मार्ग दो रींदकों हैं बताया है। यह मार्ग है - आधुनिक और दुरा - कामसूत्र का या राजनीतिक। उन्हें ने इस दोनों की चर्चा करते हुए कहा है कि कामसूत्र का मार्ग बाहरी परंपरा तांत्रिक मार्ग में भाषा प्रवर्तक तांत्रिक लाखि है, वह मार्ग है रसगतात और पीर संहिता का। योगी

---------------------------------------------------------------
1. का ० विलेन द्वितीय : आधुनिक पौरोशिक और अपस्थारवाद पृ २।
2. कार्य ए, , स, , पृ ४।
(388)

सिखिया की केही मी स्वीकार नहीं करता परंतु वाहरी परिवर्तन की अवस्था आत्माकुरु प्रयत्न पर का देता है। कोस्तर के दौरान मानने की अवस्था की बात की है परंतु राजस्वाद इस संपत्ति दे उत्तरो का कोई निश्चित फा वे पुकाराते नहीं है। अस्तित्ववादी चिन्तक कीड़ागार्ड और दौस्तवाली के बया पश्चात या विपननकृत युग के प्रति एक- एक प्रवृत्तिया व्यस्त की है। वे दौरान आज के एक विषय के लिए आज का व्यक्ति उनमें अपनी पीढ़ा और व्यास का अंश में वभी मनुष्य का सार्थक कार्य में प्रवर्तित थे। या यदि मनुष्य के जीवन को एक सिद्धान्त विशेष और अर्थ देने के कारण प्रायोजन थे। अस्तित्ववादी चिन्तकों और वेदों के एकाधीपण, अवधानित, उकारा, अप्रैल, अश्र, तथाकथित-करण, केतन, निरंपण आदि जिन्होंने द्वारा आज की विज्ञान की एक नयी दृष्टि- छोप देने का प्रयत्न किया। उन्होंने मनुष्य के ज्ञान को गवी गवी घटावें परमात्मा को एक और रक्षा जिन्दगी की कैफी और श्रेष्ठ कठोर है आचार परमात्मा के का परस्करण और सपना का प्रयत्न किया। यहाँ आदि ने कीड़ागार्ड को पाश्चिम चिन्तक माना है किर्ती चालक ने कहा कि, लम्बे, सघने आधुनिक राजनीति और दर्शन पर निर्भर भी परस्करण दार्शनिक ने ऐसी गार्त होने से हाड़ी जैसी की कीड़ागार्ड ने। यह कहते हैं यदि आधुनिक शैक्षणिक वा को व्यवस्था की अवस्था में जिन्ही भी वाहरी पश्चात या सत्ता के हस्तलेख को अधिकारिता दिया, तब वह व्यवस्था का फल पाता है। मनुष्य को वैचारिकता समूह या व्यक्ति के द्वारा प्रति गार्त है, उकारा उन्होंने मनुष्यवाद का विश्वास किया, अस्तित्व के साथ सम्बन्ध जीवन की ही अवस्था की पक्ष पाता है। अस्तित्वादी जो आत्माकुरु या जाना आत्माकुरु की अवस्था की अवस्था-पहचानता है। कीड़ागार्ड की चित्रित भाषा यह है कि उसने अपने उदासी निरे तीर्थ भौतिकता के माध्यम से आपसी की आत्माकुरु का बना अनुभूत वर्तमानक उपकरण किया। यह प्रक्षेप के पत्र में विशेषकृत का जानवरों में कान्तित है आत्माकुरु निषेधात्मक के उपकरण किया।

6. ठाकुर शिखात् लिखः आधुनिक परिवर्तन और अभिवर्तवाद द 33.34
7. वृद्धि... द 20
8. दृष्टि... द 49.
अाधुनिक बिन्दुओं में दोस्तोवस्की का नाम अगणित है। दोस्तोवस्की ने ही सर्वप्रथम मनुष्य के अन्तःसतीय छोटे से, मनुष्य के स्वभाव के साथ-प्रस्ताव का विकास का विज्ञान प्रस्ताव किया। उन्होंने आमहारा जीव मनुष्य पर केंद्रित किया और मनुष्य को उनके स्वभाव-विकास मात्र के बने ही शरीर से ही से बाहर नहीं। परन्तु उनके अनेकों गहरायों में उद्योग को अधिकार की रोजगार की प्रभाव किया। नीली का तरह उन्होंने महत्व मानव की कहानी न हरके वर्तमान मनुष्य के उसके क्यालंबू स्वभाव के राष्ट्र म्यूमर किया। दोस्तोवस्की ने मनुष्य को नियुक्ति और के मुख्यालयों के मुख्य नियुक्ति के बिभेद स्वतन्त्रता की पार्टी की। दोस्तोवस्की की दशक नियुक्ति मनुष्य की प्रताप रहीं उसके लिए स्वतन्त्रता वहु-मूल्य रहा। उनके मद में स्वतन्त्रता का उपयोग करने का अल्प है: ऐसी मार्ग के उद्योग के ज्ञातकों का काम और उनहोंने करने के रोजगार उठाना। मनुष्य के आन्तरिक को अर्थ देने के लिए स्वतन्त्रता अवस्था आयोजन है। ये उद्योग में भागीदारी आत्मा की पूरी स्वतन्त्रता आत्मा करने वाले दशक में उनका पुरा विवरण था। ने बनास के छायी मनुष्य ने जनवर में ही शिक्षा के दर्शन करने वाले मनुष्य थे। मनुष्य का अन्तःसतीय धारा-मूल्यवादों का नियंत्रण वाले अर्थव्यवस्था से थे। कृतिसंगीत नीतियों का प्रभाव विस्तार की वर्तमान किवा करते समय अत्यंत जीवन है। ये महत्व मानव के दर्शन के पुरस्कृत माने जाते हैं। दर्शन की अधिकता तातकों उसके उत्तराधिकार उनके दर्शन के अंतर्गत है। परिवर्तन हुए बुरुखें के लिए भागीदारी वर्तमान के आन्तरिक उन्होंने निष्कर्षण के दर्शन का आग्रह किया। वह दर्शन की महत्व मानव का दर्शन रहे। महत्व मानव का ग्राम्य करने के लिए हरे निर्देश, भाषाविश्वा, और आत्मिक पूर्वों का मानवीय अभिव्यक्ति के नीतियों श्वसूतिय का अनुसरण आत्मा निर्णय पत्ता दिया गया है, दसलेह के उसे पूर्वों के प्रत्य अलग-अलग और स्वतन्त्रता की विशेषताएँ दूर स्वीकार करनी होतीं। मानव-मनुष्य स्वतन्त्र-सीत स्वर्णियों के साथ में, वाजनी और अन्य विद्वानों के साथ-साथ विषय के उपर लहरे हैं। नीली का वाजनी विद्वानों के लिए व्यापक रूप से, ऐसी विद्वानों का

1. डा० दिनफ्राब लिखा : अधुनिक परिसंधियों और अस्तित्तवों, पृ ५४।
2. वहीं
   पृ ५९-५२।
कहाँ है मरी हुई हो , मनुष्य में सत्य की अपेक्षा कमाल है। अपने वास्तविक अस्तित्व के अन्वेषण में प्रयत्न करते बालू दैहिक का कारणात्मक अत्याचार का ही परिणाम है। व्ही नासिकावाल का आयार कारा दैहिक ने चीज - मूल्यों का विचार किया। उनका कहना है कि मूल्यगण मानवीय आयार का प्रदर्शन -
क्रम है। यानी मूल्यों का व्यतीत क्रम का प्रयास है। उनके अनुसार दैहिक पर चुकाना है , यह सत्य है , पर इसके नी तीव्र सत्य यह है कि उसके स्थान पर अपी कोई जुड़ा कार्यक्रम नहीं है। यानी दैहिक तुग दुर्गे नासिका के बीच वे दूर रहा रहा है। व्ही नवे दैहिक का आयार दैहिक हमारे प्रयास के बाहर है और दृष्टि यह है कि व्ही जुड़े दैहिक का और मुनु अनुसूचि में बाजी का प्रभाव की रिश्ता नहीं होता परन्तु उसके वास्तविकता को नये अवस्था में उजागर करता है।

नीती है कि महत्व मानने के दर्जन में - मनुष्य रूप में रहने सत्य की अन्तर्दृष्टि का वार्ता ने दृष्टि करते हुए वह , सत्य की अन्तर्दृष्टि जैसी की जीवन नहीं है। हर लोग अपना भर्ती हैं। उनके दृष्टि का दैहिक दृष्टि है। - प्रतिरूप में स्वतंत्रता का बोल व्हा अस्तित्व की व्यक्ति और अपवाद निरस्तता। 2 अपनी एक कृतिशीतियाँ में यह प्रतीत रहते हैं। नमूना नासिका के माध्यम से उन्हें अस्तित्व की व्यक्ति का भास्त्र है।

उनके महत्व मुनु के के के अस्तित्व महत्वाकर्षण है, उसकी प्रति- गुणात्मक बाद में। उनका कहना है कि मुनु अपनी निर्देशित वे के लिए उपलब्ध ही है एवं नहीं। मुनु एवं व्ही व्ही नहीं भावना - नहीं भावना का नाथ बांध-प्रयासों में नहीं है जल्दा , यह नहीं ही जल्दा व्ही अपनी में ही हो भावना है। व्ही अपनी श्रेष्ठताओं के के लिए सत्य की उपलब्ध है, जबकि अस्तित्व का मुनु अर्थ है स्वतंत्रता।

1. या शिवमल भव : आयारिक परिवेश, और अस्तित्वाचार , पुस्तकों, 63.
2. यही , ... , ... , गु 63.
आयात मनुष्य मूल्य पर्यंत अपने को जो हो सकता है, काना के प्रमाण करता है। पर
एक युग विश्व है - अभिव सा विश्व, परम्पराओं, मिश्रण चरणार्थों से विच अहा
विश्व। जीवन और स्वतंत्रता का अर्थ है, वो कुछ है, वो और पूर्ण अवगत न-नै
भी का साधन। 3 आयात स्वतंत्रता की व्याख्या करते लार्स ने कहा, जिसके भी स्वतं
के ग्राह ग्राही मानवीय उच्चता का तपास है: उसकी प्रभृति स्तिथि घिराने की
है, जिस्तनात्मक स्थिति की और अस्त्रों की है, उसमें समय का
काल है। 3 लार्स का मानता है कि मनुष्य अपने पास का निर्णयता
है, उसे अपने पूर्ण जुड़ने है। मनुष्य ही यह ऐसा चेतन ग्राही है जिसके मीरा शे
मुझे यथा जन्मते हैं। वहाँ अधिक अवगत है कि मूल्य-निर्णय की स्वतंत्रता को कौन
लौटाने के प्रेरणा में भी अलगाव की समस्या का निराधारण करने का अपनी
कृतियों में प्रभाव दिखा है। मनुष्य के नीति और साहित्य, उनके मानसिक और माध्यम-
कुल दृष्टि की हैं वो एक अलगाव है, उसी पाठ की हैं । जब तक वह अलगाव रहेगा
मनुष्य कैसे है नीति ने बीतो विश्व की अनेक अवस्थाएँ नहीं बना। 2 दृष्टि नामक उनके अधिकार उपयोग का
नामक वीर्यक के अध्यात्मिक रहस्यमय श्मशान के विश्व शोधी में लगा है,
परिवर्तन उसकी उद्धृत ने ग्राही अवगत है। शाफत के पताकापार वह जीवन का
उपयोग अचूक पर निर्दर्शण रूप से जीती नहीं है, वो एक उपयोगी पूर्व के ग्राह
वैशाख होता है। 3 और यह प्रस्ताव में नहूं यथार्थता को अपने "ग्राही जीवन पदान्
कहिं टिकट करते हुए नहीं माना जा भी अवगत नहीं है कि मनुष्य अत्यधिक सावधान ना
हो जाये। जीवन के उच्चताओं मूल्यों या कौनों को नुतन या नवजात होने ऊपर आरोपित
करता है। 3 वहां वयस्के की हंगाम पर अभिप्रेत नहीं, चर्ते द्विगत करता ही लोगा।

1. धारो सिखप्राचार सिस: आधुनिक गरियोश और असिडिल्वाड़, पृ. 66.
2. Iris Murdoch : Sartre, p. 75
   'Freedom' in the sense in which Sartre originally defined
   it is the character of any human awareness of any thing:
   its tendency to 'flicker', to shift towards a reflective
   its lack of equilibrium.
3. धारो सिखप्राचार सिस: आधुनिक गरियोश और असिडिल्वाड़, पृ. 106-110.
दौ विच्छ युद्ध के पर्वानू दुरंपीय मानव-मूल्यों में निविष्ट घाया। कीच अनास्वया से पूर्ण और जीवित प्रतीत हुआ। अलावेयर कामु की कृतियों में चित्रित की वसप्तेय का बीच ही मिलता है। कामु की जीवन चित्रित का प्यारी मद्दत हुआ और उस चित्रित वे कहने का रमाय उराय उन्हें जो प्रतीत हुआ वह ही आत्महत्या का।

वह आत्मा की जीवन-निवास की गुरुपी अवतार से बुद्धार्थ हैं। इसी में अस्तित्व के बीन्दु दोनों के आवास हुए नहीं हैं; आत्महत्या के भिन्न स्वच्छता का चुका है। वह कामु यह मानता है कि मनुष्य में स्वभाव, उच्चाशक्ति

(नोटक्लोट) शाली है। विकृति प्रभाव अपने विरोधी परिस्थितियों में हम जगत के अस्तित्व करना अपनी उच्चास्क्ति को उपलब्ध कर लेता है। और कामु के उपन्यास एक का नायक दाओ रीतो के चित्र घन पाप का परिणाम है या नहीं, वाहे फिरा रीतियों की बेहतर झार है - आया - रीतियों मानसी संपूर्ण के

विचार वर्णन

साहित्यी कविता: पत्राचार परिचयः

साहित्यी कविता के अन्वर को तो गुरुपीलावणारी कवितां की कृतियां

प्राकृतिक कविता या नयी कविता की हुई साहित्य क्रियाका ग्राम गृहकृतियां प्राप्त मानित हैं।

लालिन्तिक ग्रामस्थ में दुर्गृह से इनका पूर्ण कहीं का कह नहीं है। फू, नरेन्द्र, सुभाष, दिनकर, गुप्ती, सिवाराम, रघु, मालकल मुक्ति और नवीन का 60 के बाद भी लालिन्तिक की -विचार-संदर्भ कवि की रचना करते रहे। चाल आये, सिरिजा

कुमार माधव, शास्त्री कादुरिचंद, रवि शास्त्री, अर्जुन भारती और नरेन मेहता

ईस्व विचार-विचार कवि लालिन्तिक-पुस्तक के भार्य में रात रहे हैं। हेनदो घाटाळों के लाभ

एक तीर्थ काव्यार्थ विचार-विचार के नामांकित राखा करती हुई प्राप्त हुई।

1. दाओ दिवान प्राख्य ग्राम निवास: आनुंदीक परिक्षेत्र और अन्वरत्व, पृ. १२७।
2. नयी...
प्रमोक्षीकृत कविता के बाद शून्य पीढ़ी, विद्वान पीढ़ी और अन्वेरा में यह कहा गया है कि आज की प्रतीति कविता वही है। अत्याधुनिक १९६० के बाद ४, ५ वर्षों के अवसर पर युगाधिकृत कवियों को एक नयी पीढ़ी गायक जिन्हें निरंगत सिखाते आए वर्ष आदर्श धार बन जाते हैं। अन्वेरा कविता की हर आज की कविता बतायी जा सकती है। यह पहले बार देखा गया कि खिसित कविता के पीछे देख कर (कुछ) आदर्श प्राप्त है। इनमें से कई बढ़-बढ़ने वाले बाद आये आते आदर्शों के साथ मूत प्राप्त निर्माण स्थिर हो गये। इसलिए आज तो पहले वैयक्त काव्य-मूर्तियों की तुलना में उनकी निर्मिती स्वतंत्र प्राप्त नहीं कर सके। आज कविता, नयी कविता, न कविता, नयुक्तवादी कविता, रमणीय कविता, अन-कविता, आदर्शी कविता यहीं कह नाम पारण किये कह आन्दोलन चले। हालांकि गुप्ता ने इन आन्दोलनों की संख्या ५८ की व्याख्या करते हैं। इन आन्दोलनों ने नयी कवियों के मूल का अनुभव निकाला या उसे फूलवारी किया यह कहना असंभव न दिखाया। इतना कहता अवस्था है कि पहले रूप नामांकन कवियों की काव्य-मूर्तियों में और वैद्यवादी दृष्टिकोण में आज जरूर परिवर्तन दिखाया है। इस विषय में हालांकि परसमन्द श्रीवास्तव का यह अनुग्रह उचित ही नहीं कहा जा सकता। उनके अनुसार दूसरे ६० के बाद की कविता पर कह रही वर्धन के निर्देश में यह यथार्थ रुप से है कि ६० - यह निवृत्त रूप में नयी काव्य तंत्र जो के प्रारम्भ में अविश्वसनीय, नयी कविता के अन्त का सूचक है। इसके बाद कविता पर पुकार है कि 'परमाणस्त' हैं यह कहने वे अनंत उपयोगी होगा। नयी कविता और व्यापक है यह आज की कविता की तंत्रांकुशी और उद्देश्यों के सीमित बनाता और यह देखा कि हिंदीत्तत की वे कवियों का बदस्विन्द बुद्धिवाद है, जो नयी काव्य-पुस्तिकाओं में पृथक हुई है और उन्हें अनमल ही वार खिदे दे रहे हैं।

चाटौँजी कविता में तब नये-नये आन्दोलन के उन तमाम में अपने पुर्ववती आदर्श एवं मूलों की स्वीकृति का निश्चित निषेध है तो कहीं विनिर्देश है। अत: आदर्श कविता लेखन का तिरिक्कोटिव अवश्य करते हैं परन्तु वे परम्परा की अन्य आत्म का अस्करण

1. हालांकि परसमन्द श्रीवास्तव : नयी कविता का परिणाम , प्रस्ताव था।
न कर ले थे, इन आन्यों के कवियों ने परंपरा के विरुद्ध ही अपना मत ज्ञान
किया अध्यात्म है परंपरा के चिन्ह नहीं है। यह सवीकार है कि उन्नत अत्याचार का स्वर
कहाँ तक स्वर और प्रारंभकार तब स्तर है, यह प्रथा है। वर्ष वर्ष में कवीर ने
अपना अन्तर्दर्श विपरीत कर तल और मान्यता के स्वर्ण में सवीकार की मुद्रा व्यक्त
की। इसकी बात व्यंग्य से लिखत होने के कारण लिखिता देने वाली थी। हायात
वादी कवियों ने अपने दृष्टिकोण कवियों की रौच, वस्तु के विरुद्ध बातें कहाँते परंपरा
उसे नौठे उन प्रभाव से नहीं कोई बात है। हायातवादी कवियों में नितान्ती ने किरदार की पुद्रा
प्रति की। या काव्य वस्तु, नाष्टा और भ्रमण के आयामों के विषय में
उन्होंने विवेक एक पौरुषों ने प्रत्यक्ष किया। प्रारम्भवादी कवि भी राहों के अन्दर रहे
कहाँ काव्य-तत्त्व या काव्य-वस्तु के बीच कोई काफिर प्रयोग करते रहे। हायातवादी तथा
प्रारम्भवादी काव्य-वस्तु और वस्तु के विरुद्ध इन्हीं तक नहीं वाली अयश प्रस्तुत की।
यहाँ जब अत्याचार की मात्रा संख्या के नतारे की परीक्षा नहीं करती थी, परंपरा
वादी या राहर या मनोकामन या अज की चेतना नहीं करते और अत्याचार के पूरी दर्शन की
थाम आती है। जब वह विकृत प्रथा है कि अत्याचार परिवर्तन की गात देता है
और किरदार को जन्म देता है। परंपरा शीघ्र असवीकार का माफ़कर तो हो सकता
है जब वह अपना मूल की कारण कराये में एक वहसलपूर्ण कदम हो। असवीकार में
किरदार है और शीघ्र के साथ उससे एक दृष्टि एवं निरीक्षण है। यही कारण है कि
असवीकार का मात्रा दूर हो नाम है। और उससे अभिवृत्त स्वभाव समान।
परंपरा मनोकामन के विरुद्ध विपरीत है। 6 कुछ भी पृथक ने कहता गया। प्रारम्भवादी
कविता में अत्याचार के पूर्वाधारी कविता की मुद्रा स्पष्ट दिखा पड़ती है परंपरा वादी
कविता की जुलाई में वह अत्याचार या अत्याचार का नवायन नहीं है। यह मुद्रा प्रारम्भी
कविता ( नवी कविता ) और अकेर का खाते-खाते और को भीतर क गय है।
यह असवीकार का मात्रा पुराने असवीकार की मात्रा से वक्ता तिन्न है। इस मात्रा
में असमर्थ है, उक्त वैद्यनाथ भाषी है, गानी का महावर है और जीवन रचितों

1. हायात वादी कवि: भाष्यकार कविता: नैय वनम ३०.
(श्रवण)

के प्रति एक ऐसी विनाशण है कि उसके आवेदन में रचना कर रहे वानी अन्य और बुरे विनाश मूल्यों को या तो समाप्त करना चाहिए हैं या उन पर कुछ नकल कर कर जाना चाहिए हैं।

यह अस्वीकार या विरोध की मुद्दा बाल्य दशक में प्रभावित होने वाली हिंदी कविता का प्रमुख अंग बन पड़ी है। अब हम इस काव्य-भाषा आदर्शों की स्वरूप पर विचार करेंगे कि वह बाल्य दशक में हिंदी कविता में उठे हैं। सन् 1662-63 के आसपास प्रभावित भारतीय की जुलूसें खेला में वर्तमान उद्देश्य के लिए जरूरी निर्धारण तथा सघन जो ध्यान देता है, वह आंसुभाव, विकार और मानवीय मूर्तियों के लिए नए है। दूसरी नींव पुरे स्वास्थ्यकोश में लिखा है। मूर्ति के एक और सुधारी और सुनिश्चित का लिखा। यह दशक के अन्त में तो विकार पुष्टि हुआ उद्देश्य वाणिज्य लीलावती कविता में भारतीय बाल्य दशक की कविता में होता है। यह वर्तमान वाणिज्यि कलाकार सन् 1662 के अन्त में पाई गई होता है। यहाँ आकृति नवी कविता का सुधारा एक अन्तर आता है। इस विद्वेष की कविता का स्वाभाविक - सजीव काव्य विकार है। इस गुहारवर्त में आयोजित है, उद्देश्य है, पुरोहित है, आवश्यक है।

सन् 1663 में बालीश चूड़ीकों के संगठनक के 'प्रारम्भ नामक काव्य' संकलन प्रकाशित हुआ। यह संगठन चार माहों में प्रकाशित है।

२. नलसीन नगर और अनी लोग, २) कबीर आवर्तियों और उपनाशयों के साथ, २) अमान के बादशंक में लिखा (४५) फ़िल्डहूँ उपमान और अन्तर रागिनियाँ। अमान चार वर्ष पूर्व चौवरा तार सन्धि अवय के संगठनक में प्रकाशित हुआ था। फ़िल्डहूँ में वर्तमान विकार और 'प्रारम्भ' में प्रकाशित अन्तर दोह पढ़ता है।

२० जनवरी चूड़ीकी के अनुसार नम आदमी के सराहन कर नम कविता का

---------

१. २० वीं शताब्दी तिथि: आधुनिक कविता: नये संदर्भ: पु. ३१।
२. २० वीं शताब्दी चूड़ीकी: लघुकाव, आधुनिक हिंदी कविता पु. १२। (CM1)
(२६६)

इतिहास कमल (प्रारंभ) वे हुए। यदि प्रामाण्य सत्यार्थ वेदान्त वेदान्त, काल-प्रामाण्य का एक महत्त्वपूर्ण मील का पताके बनाया।

इस लंबाई में इन कृतियों की कविताएं दर्शित की नयी सी ते हैं:

जंगली चुतुंकी, बिलाई वालपेंदा, नरेन्द्र धीर, राजाकुल चौपारी, केला, पवता अग्नि, शाम दसा, विश्वब्रह्म माता, शाम महान, मनोहरिनी, रेखा गाँधी, राजीव बनी, वेदवधी बारिये तथा नवीन प्रायद त्रिपादी।

अभिविदा:

सन् १९६५ में अभिविदा का नामक लंबाई प्राधिक दुनिया। लंबाई के प्रथम कारकों में कालिय चुतुंकी, मुहारास्क, रेवीन्द्रायण वानरी और शाम दसा थे। इसके प्रत्ययखण्डों में अकेला महाकाव्य, गंगाधर किशन, निरहुआ दादा, गोरा विनो, निल्लान्त संगीत, प्रमाण मधु, मारकृष्ण अग्नि, राजीव बनी, न्यायद्वहन पाण्डार और नितिन मौन है। प्रायद का यहुद कुरल्ल पहुँचा में अन्याय कार्य रचनाओं को प्राप्त होना उसका बौद्धिक था। यहाँ अभिविदा का कोहर विष्णुनाथ और वंश्य सिरके अवतारस्थ और नए हैं। वे कृति प्रकार परिपत्र को नक्सल हैं और पारस्तित सोनारबाजी के पार चले हैं।

अभिविदा के इस काल-अन्द्रोधन में वार दमकल ने गिरिणा उदार माता, प्रमाण मधु, कुला तिरक्का कवितावर्ग नवीन चौपार को प्रथम देने वाले कृति की शाखा थी। वे तार दमकल की प्रायद वृक्ष में चित्रित मत राजियों वाले कावियों का सहभाग कायदे के हेतु एक उद्देश्य रहा था, एवं कृतियों की शाखा में उत्तरुक्तौं और रेखाएं की मूल्य के कोई नागरिक नहीं दिखाई।

अभिविदा-अन्द्रोधन का आयतावध तला यह रहा है कि कृतिया रवि, कपिला, तल जिन्हें या प्रतीत का फूट में नाओं और निकटवर्ती हो गया है और उसमें नयी वात्सल्यकला को ध्यान करने की भावता नहीं रह गयी है। इस लाते से तक चौड़े प्रसिद्ध काव्याकार

-------------------------------------------------------------

1. चंदैस चुतुंकी : संगदात, जंगली हिन्दी कविता, पृष्ठ ९२।
2. निल्लान्त धीर : नवा काव्य : नवी मूल्य, पृष्ठ २५६।
(२५७)

दोनों को वीरें और उसे एकत्र उच्च के मन के नकारी कान की कौशिक की गयी है।
दोनों की कौशिक पर का देना बड़ा है। क्वार्श अकविता - आद्वैत फेंक व्यापक
आद्वैत नहीं है और उसमें वस्तु और विचार को तीही और कुछ शिकार एक स्वयं
रचने की कौशिक भी। निही हुई है। इस नृत्त कव्य-आद्वैत के एक प्राणीता
स्वाम परमार उनकी अवस्थागत्वक व्यापकात्मक और तीनों की और अंतम निर्देश कर
कहते हैं : अकविता शाल-णपोँ कविता है। यह लीला को वायु की कविता होगी , जयां
कि उसे भाष्य में फंदे नहीं गाँजा होगा। यह तथा है कि अपो वाती कविता के
किस्म यह आज की नयी परतीती सीमित की विरोधी विचार है नृत्ता होगा , जिसके
किस्म यह भाष्य में अपो प्रमाणो को बुद्ध देखने की आवश्यता नहीं पड़ी है। शी
परमार के अनुसार अकविता की व्यक्ति का स्वर वापसा कर सकता है । अनुसार
कहते है माध्यम दे पी अकविता अपनी आत्म कर सकती है।

अकविता की विचारिति परिभाषा के द्वारा उस विचारिति का विचार
हुआ और उसका विरूप भी। तत्काल हुआ नृत्त शालिक कविताओं ऐन उनके संगात के
विचार में फंदा है।--- नृत्त शालिक कविता ज्ञातियर है अकविता नामक परिभाषा
की। उस परिभाषा के लोकोऽ व्यक्तिकार रागद कुल भी, राजीविकझरा , और राकोट
आयत थे। इत्तै कोषालें नृत्ती के अकविता नामक परिभाषा प्राप्त की। अनुसार-
हृदय शीवालक के जूत , २५७ में पूर्ण परिभाष का कविता प्राप्त की, जिसके अकविता का
विरूप व्यक्ति होता है।

अकविता की कविताएँ व्यक्ति प्राप्त की दृष्टि से देखने होने पर भी उनकी
वस्तु दृष्टि नहीं है अंतिक शृविविध का । दशालिक शृवुत-प्राप्ता के याय-संयुक्त के
विचार में इस शालिक में फंदे अंतिक फंदा है। अस्पुता में नारें की दुर्घट
हुई है। कई याय-कविता द्वारा शृवुत-प्राप्ता स्वयं संयुक्त अथवा विचार रीति दृष्टि से निही

------------------------------------------------------------------------

१. इत्तै परमार के सिद्धाप्रकृति: नयी कविता का परिषदक, पृ० १९३।
२. नर्म परमार का काल नालं दुर्घट डैन्य के नये सूचन के उद्धा पृ० २६०
३. अनुसार हुआ : ये शृवुत-नये सूचन- पृ० २६२।
फिल्दे गये हैं। दिनकर ने अपनी पुस्तक 'शुद्ध श्रावण' की लेख्य में लिखा है: अक्षरियता में अच्छा सिद्धिक और निराधार की बात उठाएँ नयी है वह नारी कीजिए तो है।

परम्परा के रूप में अक्षरियता ने अग्रणी श्रृंखला नवनिर्माण का मत अनुक्रम किया है उनके तत्त्व पर निर्त्याग का निर्णय और साथ साथ उन्नति का प्रवर्तनों का प्रस्ताव करने के लिए वे कृपया काफी कर देंगे। 

अक्षरियता में 'निर्देश' के नाम पर 'लौक-शाब्जाक' शरीर के धारियाँ और नौसिकाओं का प्रश्न घर के नम नहीं होते। इसमें नेतृत्व के लिए सबसे छोटा कर दिया है।... 

इतने लोगों में ऐसे कुछ हैं जिन्होंने अच्छे बनाम और प्रसन्नता मुद्रा की जितना है भी वह है। वह एक दुश्मन हो कही बातही कि आप की समय कार्यस्थलों में गाड़ी-गड़बड़ राहत नहीं देखी। दुसरे उल्लेख, गुस्सा, चीस-पूर्व नकलचारी, निपटते-सिखते और इत्यादि मृदुता तथा अच्छी अवस्था फ्रेष हो लेंगे ही है। 

अक्षरियता के आयोजन विषय है: सेस्ट, धुराप, नन्दी, मानहुआ, समनुदार और शीलं। अक्षरियता के लोग मानी जाती है कि निरंजन जी तथा नेतृत्व निर्माण और अधूरा नी अक्षरियता का कार्य गरिमा यथावत्त्व है मानी जाता है और यदि जिसना रहना का वह आस-अश्व तथा ऐसे उत्साह में उसे जिसना रहना मुश्किल लगता है। उसके लिए प्रसन्नता रखना शक्ति नहीं है। उसके लायक प्रसन्न रख जाता है - क्या करं, क्या करं। इसमें का समय ने इस कार्य को आत्मसाधन की ओर उन्नति कर दिया। कविता-सम्बन्ध, निदर्शता, निपटन, टूटन और पूरी स्थिति के कार्यरत मनुष्य का उन्नत गवाह दिया है कि वह रोमांटिक हर निर्माता के माध्यम से आनंद का बोध रहता है। यह आत्मसाधन की उप-सीमा तक पुनः जुटना है। उसी जिसने दुखदहार, गान, अध्याय और तारामणि प्रतीत होता है। 

इसका अर्थ अक्षरियता के लोगों के विषय में नीति विचार करना अवस्था न होगी।

कविता के अक्षरियता की और गान ने हिन्दी कविता की एक सर्वस्व नवा सीढ़ियाँ दिया है। वो आक्षरित है क्या? क्या वह विषय का सुलन करती है? वो वह कविता से दिन-दिन बढ़ती है? नीन्दा प्रसन्नता उठती है। वात यह है कि कविता के पुडूँ कोविता के कविता के निर्माता ने यह सीखा कर लिया है: 

उसके साथ विषय है। अन्य विषय भी है, अब इसका प्रबंधन कर दिया है।

1. श्री प्रथम श्रवण, दूर विशेष वाचक, दूर विशेष वाचक क्षीण, सामाजिक-विज्ञान धार्मिक, पृथ्वी रूप ।
2. दूर गोविन्द साहिबः स्वातंत्र्य-वाचक हिन्दी कविता, पृथ्वी २२।
के लाए जुड़ा हुआं ते निषेध का वृद्धि नहैं हो अथवा वह तो नयी कविता से अकविता
को पूर्व कर करे लाली जलौ निवृत्त हो है। एक आत तो स्वीकारता दीया कि अकविता
वे मान तो बढ़ दिया है या उसे बढ़ जाने के लिए बूफेला दी है। परिपत्र
काव्य में और नयी कविता में प्रेम का जो ग्रस्त था उसके स्थान पर अकविता वे एकान्तः
शरीरिक नोक बने स्वीकारता है। उसके लिए लेखाव, मेधाव, लघूव, श्लोकवार
आदि शब्दों का प्रयोग व्यवस्थित सच सी ही हो गया है। और इसके कारण अकविता के
कई केवल ब्रम्हीकरण, वांचन मौन, मोना कुजाटी, मौनाका मौनिनी की
कविताओं में वर्तमानता जुड़पा की है लें यह तक पहुँच गया है। अतः यह है कि इन
कवियों में शास्त्राध्य यथा शास्त्राध्य है। अकविता आस्था के कविता-ग्रंथ में जगदिश चुंबकी
स्थान परसार ब्रम्हीकरण, मोना प्रलाद विभक, राजीव बक्कना, सतीश चुंबकी
चंद्रनाथ देवलाल, लक्ष्मण बुधानी, मोना गुजारी, परमाका मौनिनी,
महत्ता काशिका और फिला शरम है।

अकविता के विषय में नूतन निषेधी निवारण इसके पहले अकविता के कुछ
प्रमुख कवियों के मन्त्र कहे।

अमृत चुंबकी: फिले तैयर का चारा काव्य उगल्ले हुआ है। वह
वन्देशास्थ और निगम नहै। सामाजिक दंगाराओं में निरोधक है। श्रीपि़लाओं की
परिवर्तन में जीवन इनके लिए आवाज नहीं है। अमृत, वाजन, झुंज, रस और
बारे देवों के शास्त्रयोग्यिे पर प्रसन्न कारण वाली हारी है।

ब्रम्हीकरण मौन का कहला है कि वे प्रत्येक चीज और सम्बन्ध तथा नाटक के
साथ ही हो लिखते हैं। इस स्थान मानव में फिला और पतली की हो जाती है।
वे ब्रह्म-प्रवंश से कविता की शुक्लाः करते हैं। निर्देशिकाएँ कि वह अक्का लागते हैं।

--------------------------------------------------------------------------------
1. कविता हुकूक: नया काव्य: नये मुख्य है उद्यूर 2543
2. यहीं , " " पूरे 265.
(रूप-स्तूप) स्थान परिसर ने अपनी रितिश्चित रूपस्त्र करते हुए लिखा है।

"अंबार आभारित के लिए सत्य मोह और मायुक्त की वस्तु नहीं है। यदि यदि अनुस्मृति के नैस्वर्य रितिश्चित नहीं है तो अंबार अंबार ही है और समक्ष में महाद्वारे हुए रिश्वोर या रेडी पाथ की तरह नहीं। निर्माणलय एवं अवाज-प्रस्त व्यक्तिगति की शास्त्री में आधिक में ग्राव: अस्तित्व की एक ऐसी रितिश्चित नी उत्सन्न करती है जहाँ कार्यकर्ता शास्त्र मानविक विषय शास्त्र में संरचना होती है। यह आधिक की आरोका मानव-यूग्म है। 8

महान दुर्गातः के सिंहव ने "स्मृति की कोई पुलों उनके पार का है। रक्षक हुए दुर्गदाय उन्होंने अपने को मूल पाया है। वह हुए श्रद्धालु चला गया है। श्रद्धालू मुनि और धर्म उनके रिकार्य हैं। उनके अनुभव उनके लिए वैदिक और अनौदिक होने के मानवों का स्वतन्त्र शुरू हुआ है। येष्ट अस्तित्व का नहीं, निम्प्रस्तुत का विरंच्य है।... देश उल्लोह पुरा ज्योति हापर का अन्त कर देने की है। नर शालकों में रहते-रहते थे पूरे विश्व में करने हो गये हैं।

प्रणाता महत्वकी अपने किस्तवाओं के तंकन में कोई दारा नहीं करती। क्री न समान होने वाली जेशी उन्हें रक्षा के लिए तैयार करती है। अन्तर के उद्देश्य की अभिज्ञता का कार्य का है। 9 आभारित की दुर्गा महानगर के लाभ करते हुए 'अाभारिते' के विश्लेषक सत्य गंगाप्रकाश विश्लेष करते हैं। "बश कर सलाम नहीं होती जानी संस्कृत के प्रतिकों का नगर है। मानव संस्कृत की नाठी तोड़ चेतना के प्रति को नगर। वहाँ कोई वंचना नहीं है। कोई रास्ता नहीं है। रक्षाए एक काल्यंक कर रहे है। पर महानगर संस्कृति ने उस काल को पीड़ाओं को नहीं परीक्षा की है, चाहे किस्म सन्तरास्पद भी नहीं है। महानगर न आस्था का वृद्ध है न अनास्था।

6. लक्ष्य बुक: नया काल्यंक: नये मूल, पृथ 264।
8. भविष्य बुद्धिनिक्षेत्र

6. लक्ष्य बुक: नया काल्यंक: नये मूल, पृथ 264।
वास्तविक रूप में किसी विशेष चीज़-दस्ते को नकारात्मक हुए अपनी मान्यता उस तरह व्यक्त की है: अवधिवाला किशन से वनस्पतिय विद्वान फिर चिकित्सा की किम्बि है। हारा या मुख्य उसके रचनात्मक को विश्वस्य नहीं करते। अन्यहीं, खलील, मुक्त-विभिन्नता विरोधयोग्य और आदर्शों का अवलोकन अन्य सैद्धांतिक और कला का नहीं करते। वह यह बात को मान सुनता है कि चीज़-दस्ते की मान्यता का कोई अर्थ नहीं रह गया है।

वास्तविकता के अन्ततः अवधिवाला आदि केस ने मेज़हू अस्तित्व निर्माण का दूसरा हाथ उछलन दिया है। प्रयोगिक से कविता में वाद का स्थान मिलता मानने का आग्रह रता गया, हारा या अवधिवाला में वाद की जीत हासिल रता गयी। आवे विद्वानों का मनोहर विज्ञान अवधिवाला के कवियों ने और अवधिवाला की भविष्यवाणियों ने भी दिया। भारतीय महिलाओं के अपहरण स्थल: समूह रेफ़राम। तब जीवन की भारतीय नायिका के लिए मुक्त भारत ही चीव गयी। मुक्त वेस्ट की फलाफल नायिका के द्वारा - महिला के कलाकारियों के द्वारा कर आस्त्य उल्लम्बन करवाई है।

जीत और मुक्ति पीढ़ी की कविता:

चालीसवीं कविता के प्रशान्तमें लोग ग्रन्थकार का एक ग्राम उल्लम्बन किया गया है। ग्रन्थकार के एक वर्ष में एक केस के विद्वान, जिसे बीत जनरल का अवधिवाला किया। जून 1942 में न्यूयॉर्क आस्पड़ के राजवादी संस्करण में बीट जनरल का उल्लम्बन में कहा गया। बीट जनरल के अवधिवाला के इंदिरा ने अपने एक उल्लम्बन को हापाया पिक्चर एक अंश का नाम से जान रहा विचार बीट जनरल के रखा था, यहाँ से वह नाम

1. लिखित मुक्त: नवा शास्त्र: नवे मुक्ता, पृष्ठ 264.
2. रथ्याम परमार: अवधिवाला और दर्शन सिद्धांत, पृष्ठ 22.
प्रथम हुआ। खण्‍ड ४४ में देखने गिन्नदर्शन ने भी एक आधा-लीला प्रारंभित किया, जिसका शैली हिंदी रक्षा गया था हालाँकि। गिन्नदर्शन की यह पुस्तक वर्धन हर तो गयी। चित्र की अवशेष स्थान दिखी, जिसका प्राक्तन-अभिलक्ष नाम दे हुआ।

लेने गिन्नदर्शन का भारत आगमन चालित्य के सितार में एक प्राताघारी पतन है। हिन्दी के केवल नवे-पुराने कविताओं पर उनका प्रभाव परिश्रमित हुआ। बीत और नूनी पीठी का यह आन्दोलन चलकर में चला। बोलते होकर वह हिन्दी प्रदेश में आया। उसे चित्रों में राजकृत चालित्री गिन्नदर्शन के प्रभावित रहे। तार सप्तक ग्रुप के रूप से बहादुर सिंह के गिन्नदर्शन का प्रभाव रहमा गया। चूँकि खण्‍ड १८६३ में बहादुर सिंह की द चित्रित गिन्नदर्शन के नाम से कलात्मक में हपी।

चित्र गिन्नदर्शन को विशेषता मूलिका प्रस्तुत करता अनेक न बोले। अनेकों के अंत बेचा है उसका यह युत या वर्ण में पौरीता समृद्धि से निवृत्ता-सी हो गयी। तब और यह गंवाएँ के बाज़ार महिला वस्तु बे के बाज़ार मुद्रण की नबाबता का स्थान ज्यों-ज्यों समाप्त होता जाता, उसके दूर रहने की निषिद्ध जवाबी रही। एक और वास्तविक व्यवस्था के विरुद्ध अव्यवस्था, बेहतरीन रूप से प्रकाश है। मार्क्सवाद और ए०.ज०.के. के बेव्ह में इस प्रकार द्वितीयों के अपने विशेष यह नये पत्र की वोट का आरंभ किया। चित्रिताओं का आन्दोलन इस प्रकार हो ख़ुप था। देखा प्रतीत होता लगा कि अंत बेचा के नीचे भी खुप की प्रारंभिक चित्र नहीं दो स्वच्छन्त्रका अभाव है, सामाजिक का नकार कर अन्द्रोलन युगा जन वर्षे गंवाएँ की वोट के लिए निकल पता। हिन्दी में यह आन्दोलन राजकृत्ति चित्र बोलते हुए बोल ने आया। कोटा और बान्दे देशों के स्टाडियों से विशाल हो और नूनी देशों के दल में पौड़ी यह नित्य अभिलक्ष की नकल मर है। चित्रों को देखा-फेका के बारे चालित्रवाद अभिलक्ष ने बिस्मिल्लाह का भाषण कर दिया है। अतः चालित्रवाद तब भी निर्देशहत्र प्राप्त है से केवल है हे हो गये हैं। १ लक्षित बुक ने

1. भार मार्क्सवाद रक्षा, स्वातंत्र्यवाद हिन्दी कविता, पु. १८६३.
एक पत्रिका अभियूदित का उल्लेख किया है जिसका संगाचर रसभ कुन्ड ने रचित किया था। भीतर रण सबका भाव में प्रणाली पालन का बोलता है और आराम, लक्ष्मी कुवादी, नरेंद्र चौधरी, रामनरसिंह पाल और स्वामी परमार की कविताएँ हैं। इन कविताओं के विषय-वस्तु को देखकर उस वर्ष ज्योतिष होती सिंह बोलते हैं कि वे कविताएं अक्षरित हैं फिर भी प्रकाश अनमोल नहीं हैं।

विषयवस्तु में आत्महत्या, सुधा-सिद्धांत, सिंहों के माधुर्य और व उनकी विश्वसनीयता आदि हैं। संतोष में जो कविता में उत्साह गया वह जीवन में सिखा गया।

कविता आद्यावली के रंग-रंग सत्य है तो अर्थ पत्रिका परस्पर मुख्य प्रीति का पतन यह नहीं है कि वे बाल कूदे में धीरे। उनकी पूर्ण दृष्टि के साथ हों तो ही होता है। विद्या का साहित्य, शाय, बिनास शब्द कुद ताना चलते हैं। ताने के बाद वही उसके देखे हैं। यही साहित्य हो जाता है। द्वन्द्व लिए तो नक्सल की शर्त ही आदर है। आठों, गूण, द्विधा आदि के विषय के तात्विक से वे बोत या पूर्ण रोग अपनी वात कहते हैं।

वास्तव तथा कविता आद्यावली का दीर्घ अर्थशास्त्र नारी-पुरुष के बीच फूल-फूल का वर्णन का इस पर आधारित है। आकर्षित की वर्तमान (यह आद्यावली) में व्यक्ति और नैतिकता का कई मूल्य नहीं है। विशेष व्यक्ति के विपरीत जीवन में जो विद्वानों और पुरुषहत्या आदि हैं उन्हें लेकर कविता हर आद्यावली के कवियों दिखलाई देते हैं। आकर्षित की तरह एवं आद्यावली में भी क्रांति-क्रांति का महत्त्व बढ़ता जाता है। स्थान संयोजन के लेख में वर्ण चित्र (अक्षर) और गायन के अभ्यस्त वे। 1934 काल-काल से पत्रिका चुप्पा और क्रांति को निराशा अभावित नहीं है। पुरुषों के प्रेम के तथा मानवीय सहायता का जुड़वाया होता है, उसका परिस्थितिय नियंत्त्रण नहीं है, न्यायिक उनके वैध के द्वारा मानवीय विश्वास बइते हुए प्राप्त की जाती है और नृत्य परिस्थिति ने सदृश लोकता।

----------------------------------------

1. वालिका बुकल: नवा काव्य: वर्तमान पुस्तक 272।
2. वर्ष: पृष्ठ 273।
विवाद वे भेजे दिखा है। ¹ हाथ नववर निवास और हाथ स्वास्थ्य निबटाते ने भी मुखी पीड़ित की उच्चस्तर का निरूपण किया था। इसी तरह आयुक्त जीवन कोष की बहु-आयुक्त मानने की सूची में संग्रहण कर हाथ बच्चाखिंड़ और पृष्ठपर निपटाते ने ठीक ही दिखा है। जान की नविनता में निवारी नाम ले जो नववार गा रहा है, उनमें वे अनुभव तीर्थम् या धार्मिक निबुद्धता है। ² ऐसा क्यों दृष्टा, वक्तृ कारणों की चर्चा करते हुए हाथ नामपत्र दिखे ने बताया हैः साहित्य में ऐसा नविनता लक्षणमूलक हुई दिखाये न तो राज्यमें पुनःसृष्टि मंगलमें में हिस्ता दिखा था और न दिखा स्वास्थ्य का मूर्ति स्तवन देखा था। वह नविनता के उपनिवेश्यक धार्मिक निपटान भी अनुभव में मानने के साथ सहित चर्चा कर चुका था। यह निस्क्रियता तत्त्वावधानः लोग आयुक्त श्री लाल बंदूक उप आयुक्त की थी। संयोजन से ऐसी सरकार में अमरीकी बीट कीवियों की रक्षा बढ़ावा देने जा पहुँची। यह उत्तराधिकारी हिन्दी में आयुक्त बुध नाथाकेश्वर नामाकरण रचनाओं की आधी उठा दी। ³

सवागीती पीड़ितः

युग की अनुसार, आयुक्त और निराकार मे कारण लघु में नविन के प्रति एक निपटावात्मक फौजी मुद्दा है जो कि अपना नववार स्वास्थ्य नेतृत्व की आयुक्त-निवारए सिद्ध होता है। ऐसे के प्रति कर के रूप में अलेवेक शाकु माने जाते हैं। हिन्दी कीविता में सवागीत, विषणुच्छ नाम और विश्वनार उपाधियाँ की जवाब-पौर्णिमा को सवागीती नांदमाय गान आयुक्त के अनुरूप माने जाते हैं। सवागीती पीड़ित ने एक संपादक निर्माण मात्र भी उस आयुक्त के अनुरूप माने जाते हैं। सवागीती पीड़ित ने काव्य के

1. हाथ नववर गुप्त: नवी कविता: स्वास्थ्य और स्वास्थ्य, पु. १८५६।
2. हाथ. बच्चाखिंड़, पृष्ठपर निपटाते: स्वागत, खत, गुणित, पु. २६।
3. नामपत्र दिखे आयुक्त में पुनः उपस्थित ह निर्देश निर्देश हिन्दी नववर जनवरी-मार्च १९७७, व्युत्त निःस्य संख्या
अनुवाद मुख्य, वस्था, संस्कृति, यात्रा, दया, मन, गौण, व्यवहार, मूल्य और दंशिकाश आदि। इन परंपरा निहीन है। इन व्यक्ति की परंपरा से देखे पर एक समाप्त बैठक उसे कोलाहल। वह बैठका सुप्रभाव का। 8 इन कवियों में की शेखर का प्राचीन यथा है, काश्मीर की कस्तियों का सराहन है। लौ यशोदेव मैथि ने अनुभव रचित विश्वविद्यालय से अनुभव निकाल बौद्ध और बौद्ध गौण की बात आज़ की बुद्धी पीढ़ी के उत्तर पर यह उस पर जुटी वांछ तारी होती है। 2

वांछी कविता -

इन कवियों का आन्दोलन के अनुसार इन में नवी कविता का प्रसिद्ध के वस्त्रों के अनुसार नवी कविता का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य काल का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। (अवस्था की) बात नवी कविता का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है। विन्दूरे साहित्य का मुख्य विषय का नाम दिया जा रहा है।
रोमानी दृष्टि जो आला और अला से बीच भथक गयी है आदि हैं। वहाँके
वर्तमान नवी कविता के स्थान ताजी कविता की आवश्यकता महसूस करते हैं। कविता
के मान हैं (नवी कविता की) निकुल हुई माण्डा के माध्यम से अनुभवादि का अधिकृति
और प्राणारण्यालय यथवस होने के कारण वे निजामत ताजी और नवी नहीं रही हैं,
क्योंकि ताजी कविता उस ताजी की लौच में है जो मारात्मा की अवधीता को व्यक्त
करते के लिए नवी माण्डा का सुलझा करते नये स्तर और नये मूर्तियों की सार्वजनिकता
दे ले हैं। ताजी कविता के माण्डा के सम्पन्न में कविता ने दी हैं: ताजी कविता
जिल माण्डा की लौच में है यह नवी माण्डा है अवरण्यालय, एक्वायुश, संस्कारीय
और यह वहाँ अतिरिक्त रंगानंद निकले आधिकारिक, जुगाड़किने का अपर एक राजम-बौद्ध
के खान लगा दे। ताजी कविता दीना यह नवी माण्डा के नहीं बल कहती।
ताजी कविता आज के वातावरण स्वरूप झूठे सर्वाधिक हदबर्दी की अपेक्षा करती है।
यह बताया जाते हैं जैसे एकता का अवरण्यालय की अवधीता सहल्करे के साथ आकस्मिक करना उत्कृष्ट
लेख है। कविता का यह तत्काल पुर्णतम ठीक नहीं है कि हम भैशाकीतिकों में ही जी
रहे हैं। यहाँ शस्त्रेभ मौखर है। स्नातकीय में हैं, वास्तविक में हैं, प्रकाश
नी है, अमृत उपाली नी है। इत्यादि एक्वायुश स्थिति यहाँ नहीं आयी है। ताजी कविता
वहाँ उम्मीद स्थिति नारायण करती है। आवरण्यालय कविता के अनुसार ताजी कविता
का भाग काल्पनिक का भाग है। साथ में यह भी प्रमाण है कि ताजी कविता कार्यरत
पर जो मोहराज वेदी का पुरुषों का एक रूप करती है। ताजी कविता के अनुसार चारों
और पैरों निर्माणित को पहलावाट और उसके प्रति उत्तराधिकार ताजी कविता
के एक पुराण में ही अपेक्षाकृत है। प्रयाण देने वार भाग है यह है कि हमें इसी ती
प्रारंभ की अपरिहार्य को रखना नहीं है। ताजी कविता विषय का महत्व नहीं देती।
वर्तमान के अस्तित्वात्मक और आधिकारिक के साथ विवेकानन्दी ताजी कविता की
निर्माण अवरण्यालय जानी जाती है। ताजी कविता शक्तिशाली एवं अति सतीत्वी विशिष्टताओं

1. कविताओँ कामः यथा प्रकाशः पुराने निर्मणः पृष्ट २७५।
2. पाषाणाः पृष्ट ३०५।
एक दूर रखना चाहती है। नयी कविता: स्वयं और समस्या में हाय जाविल गुप्त ने नयी कविता को कौनसे वारी ताज़ी कविता और उसके आचरणता कमाल के साथ उसका पूरा रंग रख दिया है: - क्या वाचक कविता नयी कविता के आगे का आयन है? यह वाचक की मांग क्या है? गलत कविता की सार्थकता क्या है? आदि।

हाय जाविल गुप्त ने ताज़ी कविता की संगी क्री पूर्व निकालित संगी की सहभ स्वीकृति न मानकर नामस्कर की भावायापी में एक और स्वीकृति और शृंखला प्रवत आत्याह है।

इस सब नाम के पाल वाणी की अन्य वाणियों से मनोजय फल रहा है इस तथा हाय गुप्त जी ने कला है। पूरा यह वह है कि जिले पाठ कभी प्रमाणित हो सके ऐसे लाइन की प्रशस्ति कराने में यह कविता वर्तमान नहीं होता है।

"टकी कविताएँ" के संगादर रामकल्ला राय के अनुसार "टकी कविताएँ तनी समकूरा में आ सकती है जब उसके आगे धरणों में श्रृंखला के पीछे फैला पृथ्वी फिर रहा है। प्रमाणित, पंजी द्वारा मई 1966 में टकी कविताएँ का प्रशस्ति किया गया। ताज़ी कविता और टकी कविता वास्तव का (फ्रैंकलिन) का अणु रहती है। टकी कविता भी कातर्ण में ताज़ी कविता की तरह विशालता छोड़ गयी।

अत्याचार कविता:

इसकी बात करने वालों में एक अन्य वक्ता के हम में रामकुल्ला का नाम नियम वह करता है। "उल्लंघन" के कुछ 1968 के अंत में टकी के एक दक्ष अवश्यक कविताएँ प्रशस्ति की, जिसका शीर्षक था: "मरी हुई औरत के साथ सम्पर्क।" निर्णय रहे कि वह या विवेक के निर्णय को न स्वीकार करें अंतिम वार्ता आत्मनिष्ठ के प्रकृति आनदें बन्दों का पूत-मरी का अवश्यक कविता का जन्म वर्ण है। अत्याचार कविता के एक अन्य प्रवक्ता सार्क से अनुसार "अत्याचार कविता" जानकारी की कविता है, जिसमें हम अपने को दिनता पूर्व काल और निकाले के साथ ही सम्बन्धित।

1. हाय जाविल गुप्त: नयी कविता: स्वयं और समस्याएँ, पृ. 1965.
पाते हैं। अस्वीकृत कवि नागर्भ अवसरादेय नै अवलोकिते को कवियों के लिए व्यक्त हैं। इन न
प्रस्तुत कर कहे तो भी वहेंन पर प्रश्न -धिक निर्यात भेदुच्च हीरों का ध्येय आकर्षित खता अपना कविता लगभग है। वह अपनी को लामार्फिन - अविश्वास रचनाविरामे
तम्भों ने अस्वीकृत हीरों मानता। संबाद की ढूंढ़ना में उजाता निर्त्वास है। अकबर
के बाद यह बाल परिचयकार्य से निरीक्षण नहीं रहया चाहता। ... यह अपनी कविता में अपने ग्रंथ और अन्यथा को भी आगामी दे व्यवहार कर लगता है। ---- उसकी कविता
में अस्वीकृत कविता अपने प्रस्तुत के योग निरंतर विश्वास है। नैसर्गिक और हास्यता से चैत्या
पर भी श्लोक इतना प्रश्न-धिक लगभग अपना दायित्व मानता है अर्थि।

अस्वीकृत ने हस्यता कविता में हस्यता अपनी को अलगवाद भा प्रश्न
विष्या है। अस्वीकृत कविता में अस्वीकृत कविता की तात्पर्य रूपी नहीं है। अस्वीकृत कविता की धारणा के लिए यह बाली है, अक्षोट अविश्वास-सी लगता है। अकबर आज की अविश्वासी रूपी
प्रकृतिएँ ने अपना न होकर शायद आगामीयाँ के ग्रंह है। अकबर आज की अविश्वासी रूपी
प्रकृतिएँ, ने निर्देश के लिए नहीं। और भी यह माना गया है कि
लल्य को रूप न कि पाते की विविधता जली न कभी अविश्वास तोड़खर नहीं निम्नता है
और भी जन्म शैलैता है अस्वीकृत कविता का। 5) आलंपूर में अस्वीकृत कविता अविश्वासी
कविता से यहूदी भी है तब भी स्त्रिया अस्वीकृत कविता का है। अस्वीकृत कविता से अन्य उपरात्माचार और
स्थानावर के कविता ने है, कुशी में निर्जी निकाले होते हैं।

1. मनुष्य बुद्धिमान प्राणी नहीं हैं, बौधेद्री हो तो वृक्ष बुद्धिमान होते हैं। जानी।
बौधेद्री प्राणी होते हैं। 2) बैंक अपने पाठकों के लिए मुद्रितापूर्व वीडियो हो घृंठी है।
2) परम्परा की अविश्वासी भी उसकी एक विशेषता है। 3) गुलाम का मुद्रण ही नारायण
होता है। 4) गन्दीपत्र बेड़ा ने लिए बहरी नहीं है, गन्दीपत्र गरमाया का लक्षण

1. काबू अविश्वासी गुप्त: नया कविता: स्वल्प और समयाहर गु 205 से उद्धृत।
2. बहुत।
3. बहुत।
हाँ हैं 16) लेकिन का तालगू तालगू वाला और जो जूता है नहीं होता है नहीं होता है - नमन कर देता है - चाहे वह ही हो या पुरुष हो आदि। इन विभाजनों से सही कविता के लिए हम अन्तर्नियम प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि अन्तर्नियम स्पष्ट है।

सनातन सुगुणदी कविता:

कर्मचारी चौके - अधिकृत विहारस्थ श्रमाधीन के साथ यह कविता की पूर्णता में यह बहार नहीं कि यह कविता अनुपूर्त है। प्रथम में है जाने वाली और लोगों अन्तर्नियम प्राप्त है। दूसरे हैं अनुपूर्त है है जाने वाली, तीनों में अन्तर्नियम का उत्तर लेने वाली स्थानकारण स्पष्ट है। परिसंह वे श्रमाधीन अन्तर्नियम चौके कवियों की बदलती हुई प्रूबितके को निर्माण करते हैं वह पर यारा अन्तर्नियम प्रकट किया गया। एक अन्तर्नियम श्रमाधीन के साथ प्राप्त कविता का अन्तर्नियम रण्ण की होती होती रह गया। तीन वश्य के तांत्रिक ने 'जानवाँ' और 'सुविदायी' दोनों शब्दों की फ्राइट कैसे नृत्त कविता ला पता किया। एकी की घटनाओं भी जब श्रमाधीन की ऊंचाई गई। वहाँ की अवास्थान नहीं है कि यह अन्तर्नियम भी कहीं आधुनिक प्राप्त नहीं कर लगा।

सुल्लामादी कविता:

कविता के बन्य नामों की तरह यह वे लिखने का नाम है। 'सुल्लामादी रामकृष्ण' का श्रमाधीन सत्य वैष्णव ने शायद-प्रूबितके में 'सुल्लामादी' को आवश्यक किया। अग्नि 1665 की रुपांतर में प्रारम्भ के अन्तर्नियम सत्य ने हकी विषय में। अग्नि 66 में सुल्लामादी नक्सली प्राकृति प्राप्त है के यह मुल्लामादी कवियों के बलबान होते। इन बलबानों में की वह नये निर्देशों के आंदोलन पर यह विचार चा कला है कि माननिष्ठा
को गहव हार्षों की प्रकृति ये मुनत कराना चाही है और उसके लिए अवसरहृदय है संहारित विक्रोध। और नींद काला गया है कि युद्धशा अनवार्य रूप है यह वीर्ये से सम्मिल न है। उस महीना की अदरक हिंदूका अदरक नहीं हो सकता प्रति इस कविता के प्राचीन प्रकृति ये है कि युद्धशा मुक्तियों में युद्धशा का निश्चय युद्धशा का लाभ यह है। एक स्थान पर यह काला गया कि तालिकापत्र की युद्धशा का अर्थ है कि वह स्वर्ग है वही किन्तु वह वर्ष हमारे वे हैं संपर्क रूप है, युद्धशायिका है। युद्धशायिका, संवधान में अपना की पारमाण्विक में ही छोटा भागी है। ५२ नींद कार शम की एक युद्धशा प्रकृति का समय करते हुए नवरदे गान्दी अध्याजन्तक आयुष्मानकर बढ़ते हैं: युद्धशा एक घराना वर्ष है, एक आवरणपूर्वक है।... युद्धशा गान अपने ही ही निकल बुरी है। वही युद्धशा वही निकल है। १२ युद्धशायिका कवियों में है हुस्तों को अभिनीत प्रकृति के समय ही है यह बुरी युद्धशा ही है।... युद्धशा वही है। नया काव्य: नये मूलय में खतिया मुक्ति ने युद्धशायिके कवि और उनकी प्रकृतियों के प्रश्न में इस तरह निर्देश किया जो उनके प्रकृतियों पर व्यक्ति, प्रकृति दासी है। १५ अगस्त, लूं १६६५ में युद्धशायिके की ओर मुक्ति, तुम, तुम, तुम, गोविन्द, गोविन्द हुआ था। तुम्हारे, शैव, तुम आदि बैठे उनके गंगाश्रमे। लैंगिक संन्यासी कवि थे: वन्दनशहीद उपाययो, निम्न, राजनीतिक चेतना, भाव, अपन, जोनकालार, रायुम्य, शिक्षा और उपेक्षा। वन्दनशहीद उपाययो, वीर-पूर्व, चेतनायो और जन-संस्कृति को अपना उपाययो मानते थे। उन कवियों का यह युद्धशा तृप्ति की ओर युद्धशा लाभता है। कवि वे कवि अपने निर्धारित प्रभावितों को जोड़ते हैं और युद्धशा युद्धशा कवियों के प्रति निर्देश ही बना थे। उनकी प्रकृति में है धारा फिर निर्देश रूप स्पष्ट उपयोग नहीं हो सकता। १३ निष्कर्ष: यह ज्ञान यह सम्भव है कि वह आन्दोलन

1. कादीश गुप्त: नदी कविता: स्वयं और समस्ताएं, पृ १५२ है उन्हें।
2. वनस्पति: ... पृ १५३
3. वनस्पति रामण: वृक्ष कविता: नये मूलय; पृ २६३-२६५.
भी हिन्दी साहित्य में अपना स्थायित्व स्थापित करने में साध संग्राम होता, रचना संज्ञा की दृष्टि से उसकी छंद लयांगि उल्लेखनीय रही।

निरिखायमी कविता:

यह अभियान यों तो निरन्तर जसूर जागृत की प्रेरणा है चाहा था।
प्रकट हम ते राधा ते स्वेतेस्वर रामभक्ति के ध्यान ते नायक पदक्षेप सन् 1664 में प्रभावित हुई। लोगकाल महोदय ने उसकी आचारशिला वचारुतिता की निरिखायमी दृष्टि बनाया। परन्तु उसकी मान्यता सिद्ध नहीं हो जाती और अभियान का विषय ही गया।

साध्विक कविता:

स्थाय नारायण संग्रामिते अन्वरे में 840 स्वेत हरक्षे मेघ ने साध्विक कविता का नामांलेख किया। इस अभियान की कविताओं में व्याख्या की अवधुर्मान वस्त्रों का दृष्टि है। इस अभियान के कवियों की विशेषता यह है कि वे अपने पारिशिष्ट दे चूकते हैं नहीं जाते। और विषय अवधुर्मान विशेष बिलास पर पर्वत नहीं हारता।
इस अभियान के कवि के - सकलदीप सिवे , धर्मदय रंजन, बेनालाल जुले और कहां विनाश के आधार ते। इस अभियान का दौर पीरे कम नहीं करा।

अप्रेष कविता:

जन्म, 1664 में अप्रेष विश्वासक , गुरुराव हे आपनी ध्यान जागृत ने अप्रेष कविता का प्रकाश किया। जब धरा जी स्वामीजी के गये है नयी कविता में जनक उल्लेख हो चुका है, जबरेरे की अपेक्षा अनूठा और जनक की अपेक्षा जब जनक अनाथा के स्वामी पर आया की स्वामी। जयगंग में इन लालों का पुनरीक्षण हो हुआ।

सबस कविता:

लर्दू ६५ में अठारह हिंदु विश्वविद्यालय के हारे राजीव गूर्ज ने सबसे कविता का नारा दिया। उक्त उद्देश्य नहीं है विश्व तथा कविता का अनुसरण करने का काला गया।

लर्दू ६५ में बाहर निर्देश - एक असली विद्वान राजीव गूर्ज की अंतिम नागरिकता, निराशा और मूलता का हारा, परिवारी अपार्गरे राजीव गूर्ज का निशान किया। और उसकी अनसारी और अभावी अभूतियों का ही लहर कविता में निशान किया गया।

लर्दू ६५ में अन्य तथा अभूतियों का ही लहर कविता में निशान किया गया।

बाहर कविता के परिसराविपक्त करने के चैत्य पृथ्वी नहीं है वर्षी, लेकिन बसा गया;

कि लर्दू का अर्थ सरल नहीं हैं अभूतियों का पाना जागरूक करने के लिए वाद वानर तथा वाला रहे हुए ६५ राजीव गूर्ज ने कहा - यह जागरूक हरित लर्दू !

अपर्गरे के रहना व्याख्यात अनुभव - बाहर के साथ भारती के गृह पार्श्व में जन्म तेजी है, यह लर्दू है। यह धर्म के अनुभव की प्रामाणिकता प्रायोगिक वस्तु है।

अनुभव प्रत्यक्ष का कथाकथित हुआ तो अभिव्यक्ति अभूतियों और अभिव्यक्ति होने ?? यह कविता कल्याण अन्नानल का निराश करता है।

'तहर कविता' का एक लोकसंगीत इंदर ६५ में प्रामाणित किया गया जिसमें औषधीय विज्ञान, या नगर अवधि के विषय सहलित हुए थे।

\[ \text{राठोरि कविता} \]

लर्दू ६५ में राठोरि कविता कांग्रेस लोकसंगीत कानून के प्रामाणित किया।

लर्दू ६५ में वे हैं: अशोक राय, रामानाथ गुप्त, शिवकुल कुल, चन्द्रमान गुप्त, रातिक गुप्त एवं बीरण सुधा संस्थान के विशेष प्रत्यक्षताओं का मानता है। यह अन्नानल के दर्शन की अभूति है ऐसे अभिव्यक्ति के यह लर्दू कविता का कार्य कुछ पृथ्वी की अभूतियों से अधिक लेख गीतास्वि में मानता है। यह एक और अन्तराशियत में विवरण रहता है तो

\[ \text{अनुपमकविता} \]

1. लर्दू ६५ में नया नाम नये भूत, ८५ २८३.
2. राठोरि कविता का कार्य कुछ पृथ्वी की अभूति से अधिक लेख गीतास्वि में मानता है।
दूरौं और राष्ट्रीयता का आन्दोलन विरोध नहीं करता। पालनवाद समाजवाद एवं देश-प्रेम आचरण में अपने को अपमान नहीं रखता। वह अपनी कविता को शामिल करता है। लोगों की जन-शक्ति के द्वारा नयी मुद्दों की स्थापना के लिए कविता रचता है। नयी जीवन का संस्कुल क्रम प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है।

1 कार्यान्वयक विचार और पालनवादी प्रणयों के प्रति स्वीकार मानता के साथ वह कविता स्वच्छ की आवश्यकता नहीं करती है। इन कविता का उद्देश्य बन प्रातिक अभ्यास आत्म-स्वभाव नहीं है। लोगों के संस्कूल क्रम जटिल गुप्त से हैं जो ती कविता के साथ-साथ मानसिक वातावरण, उस कार्य कविता के साथ जो साधन नष्ट नहीं करती है।

2 इन कविता के लेखक के विचार के अनुसार वह विचार करते हैं, तो लोगों की कविता के बीच में शामिल का उत्क्रमण था। वह अपने साहित्य के अनुसार वह अपना है जिसके अनुसार में अन्य अवधारणा एवं अन्य अंतराल का व्यवस्थापन अर्थव्यवस्था मान सकता रह जाता है।

नयी विद्या के दूरौं बाहर में उद्धी नए कविता के विचार के आन्दोलनों के मध्य प्रविभ कविता को विद्यालय प्रतिष्ठा मिली है। विद्यालय के कविता में एक कविता शिक्षा की दार्शनिक सूचना थी। प्रविभ कविता के कवि ने लंबे समय और विद्वान की रचना में 'प्रविभकंद' के तौर पर रचित का स्वीकार करता है। श्रावण-त्रास्त्र राज्याधिकारियों के साथ, लोगों की परम्परा के रूप में वही।

प्रविभ कविता:

लक्षित स्थल: नवा काव्य: नये मुद्दे 250 रुपए

लक्षित स्थल 250 रुपए
लोककों के प्रचार उन्मुख रहें हैं। बात यह है कि भारतीय राजनीति में नी विश्वसनीयों के कारण वह दुर्लभ गयी हैं। आज जब कि दुनिया के सभी देशों की समस्ताेर एक पूर्व देश प्रचारित नयी हैं कि रत्नाकार तबसे पहले अन्य को व्यापक मानकीय नियंत्रण के प्राप्त की प्रतिबंध अनुमान करता है। अथात् यदि कि प्रतिबंधिता तबसे पहले अब की निर्मम रूपांतरित के ही दो स्वीकार के प्राप्त हैं। प्रतिबंध कविता कोई गुट या दायरा नहीं बन पाएँ। अलविदा, नृत्य मौन की कविता या बीत कविता प्रतिबंध कविता से कल्तुः मिन्न है। उसका लक्ष्य स्थलान्त्र हृद है मिन्न-मिन्न स्तरों पर हो रहा है।

स्वाभाविक वे प्रतिबंध कवि कविता , व्यवहार करी और चीजों के स्तरात्मक स्थलान्त्रों के तीन है। इस तीन की प्रक्रिया में कविता बिना पारा में स्थापित करती है, उतनी ही मात्रा में स्वाधीन हो जाती है। और यह स्वाधीन वीणी की प्रक्रिया में बहुत अध मिलती है, जिन्दी दोष पर रहता है और चीजों से बुझे रहती है। स्वाधीन कविताओं के लिए दुनिया-एक दुनिया या अन्य वास्तविक या वार्ता कविता की प्रक्रिया करने की अवस्था होती है। प्रतिबंध कवि कविता व्यवहार कवि के लगे उठाइये नी स्वाधीन मानवता की बीवन्त लघुवालों को उताना चाहते हैं। धार्मिक अनुभव शासन देखता का कविता के माध्यम से वीणा और समपूर्ण शासनलंक है प्रतिबंध कविता का लक्ष्य है।

बात यह है कि चारों दिशाओं की कविता में प्रचार यह अविष्कार और विक्रोध ने स्वाभाविक अनुभव, गैला भेंगू, पंजीरी एवं गुरुताधि में ने 'चरणी' में के परिवर्तित होता है। नये नाम के बाहरय ने लग जाया 'कविता-कविता रह जाय या कही रहे', यहां तक निंदा का कोई प्रकार नहीं है। गुट यह है कि वे नये अलविदा को कविता के नाम जो गुट में प्रभावित को कोई समाप्त हों या कहा नहीं दीव पहली नहीं।

1. हारो प्रमाण शवास्त्र: नयी कविता का फार्मिटिक, पृ ६६६।
2. वहाँ , , पृ ६६७।
(६४५)

है। अपनी ही कृतिता का सबसे चित्र कविता प्रतिपादन करते हैं। पीछे कोई उपचार तरीहीं है। केवल नया नाम स्थापित करते हैं दुरागम ही दीवान है। आचार्य खजुली जिसे गहरी आलोकन का सम्बन्ध -रागावस्था सम्बन्ध करते हैं वहों सम्बन्ध इस गुजारी आन्दोलनों में नहीं जमता। ग्राममंत्र और प्रज्ञाति के सम्पर्क से यह कविता दूर हो गयी है। यह कविता मुखः नगरीय का गयी है। ऐसे चेहरे का लगा है पिछले दिनाहिर, परम्परा, पारिवारिक गुरुओं का विषयक, अन्वेषण आवेश, जीवन का अपरिचारिक प्रति प्रति, अस्त्राभिलाशक विचार। अधकी विचरणम रूप है - मन्तव्य, कुम्भक, मोह, एकाहं की अभिव्यक्ति, अनेकाः, मीन दे मयूर, नैतिक मान्यताओं की दारी परिवारां जन का अस्तित्व, अंथुष्ण्ड आवरण का अंगुल। इस प्राण यह लारी प्रश्नान्ताजोकितचेत्तेका शरीरलय हो जाती है। पारिवार की विविधतियों के कारण इस आन्दोलन के कविता का स्वर बदल जाता है। इसमें हसी कारण व्यय उसर आया है; परन्तु इसमें आदमी का आपत्ती रखना (नवमात्र ऑर्डर की विविधता अन्वित) नहीं होना है। यही उत्की सीमा है जो धुना चित्रा का प्रतिष्ठान के उद्दे दूर रहती है।

बाउदिवी कविता की प्रश्नान्त सीमा:

स्वाभाविक प्रतिष्ठा है ग्रामी की प्रश्नान्तों का निरंतर ही अन्वेषण किया गया है। मार्गीति राजकीय का पंचम नवाज़ा है चित्र अचार प्राप्त किया चाहिए। इसके प्रभाव से वह वर्तमान दया अनुभूत नहीं प्रति हुआ। बड़ी महत्वपूर्ण योजनाएँ, आदर्श है जो राजकीय बातें ग्राम वर्तमान वह नाराजी बनता को तत्काल प्रवर्तित किया है। प्रमाणित है कि प्रामाण्य में बनने का अनुभूत नहीं। लारी १६६२ में चीन अंग्रेज़ के दौवाँ राजकीय बातों का प्रमाण देखने में निष्क्रिय हुँ। उनके १६६२ में चीन के अंग्रेज़ के दौवाँ राजकीय बातों का प्ररूप अथ पह घर मंगाओं के मन्त्र एंव तथागताओं पर तीव्र अभियंता तथागताओं के मन्त्र एंव - स्वाधि एंव पर्वों के प्रति ही राजकीय बातों का प्ररूप अथ पह घर नयी आशा-प्रश्नान्त का प्रति अन्वेषण करते हैं, उन्हें नाम नाम।

1. गिरिजा कुमार पांडुर : नयी कृतिता: चीनाए और समानाए, पु. १७५१।
2. वही, पु. १७५१।
व्याख्या की भू वस्तुतिकला का साधारणकाल रिख्या। यह राजनीति में, यह कविता में वै पूर्वांचल बोधा अनुप्रय प्राप्त कर गति कर रही थीं उनका स्वप्न भी हो गया। तथव 1840 के बाद के कवियों की रचनाएँ यह साक्ष्य करती हैं कि आज की राजनीति और आज की कविता का मुड़े एक ही है - स्वप्न-मंग। राजनीति में भी यह स्वप्न मंग के कई चैतरे हैं और कविता में भी उनके कई छँटी तेज़ तन मुद्राया। धीरे समय के लोकसत्ता की परिपरित (कारण जो भी हो) स्वतंत्रतानंद के हुई हैं, आज की कविता (क्या के या साहित्य के कुछ दूरी महत्त्वपूर्ण पाठ्यांगों की तरह) भी उसके पुनःचर नहीं है। कविता नहीं, वै आज के समस्त घटनाओं, काश्य-प्रभुमा के ली पहली उपस्ताओं ने अगले बारे में रचनाकार को अत्यन्त विदेशीत बताया है।

चारौंधरी कविता की प्रमुखता अनुमान में दूरी प्रशान्त रवि दो सास पहिला यह है जब से पूर्ववार आदर्श एवं पूर्वों को सत्यरूप का ध्येय उस प्रशान्त के ध्येय रूप रत्न का अर्थ है। वह दोस्त के मिलन का शान चित्र नवरत हो उसका शान हार अथवा पार- परस्पर या पूर्ववास कविता है जबन का मिलन झांकना का अर्थ है। ये नाभिक का दर्शन अंत तक की कार्यभारतों के लिए संतोष निर्भर है। अथवा, लोकें दशक के कविता में अस्वीकार दे या मुहावरा अपनाया गया है जैसा फ़ैसला होता है। अस्वीकार में परभाव का अस्वीकार है, तब यह प्रशान्त उत्तम हैं कि आत्मा उनमें फिस वस्तु का स्वीकार है। यह अस्वीकार में निर्दिष्ट वर्तमान का स्वीकार है: यही सफल है कि सत्कारण कविता गन्ध में है और कुशल का खराब है। फूलहार और स्वार्थ की कविता है जो अस्वीकृति को संहित आधुनिक बौद्ध है। यहाँ कवि के दशक में प्रमाणत अस्वीकार के बन्दर्म में परस्पर सेल्फों और और क्षेत्रों की प्रमुख अधक दीज पहिला है। जहाँ लोक कविता में कहीं न कहीं पर बुझे घरी आत्मगाना।

1. कृष्ण पास्मान्व जीवांस्त्र: नवी कविता का परिलेख, पृ १२०-१३१.
2. कृष्ण कीर्ति निवेदि: आधुनिक कविता नवी सन्दर्भ, पृ ३२.
3. यही... पृ ३३.
हे यह रचनात्मक अभिमान की दिला में जाने का निर्देश है। अब जब उस दशक की अन्य कविताओं में कुप्ता, प्राची और नारी के आरोही की मूर्ति की चर्चा की प्रायी जाती है, उपजूत कविताओं का सही दिशा की काला में जाने शैयक्सर लगता है।

अवधे अथ उसके यह जन्म लैगे वायरा किरोह पर स्वर एक दशक 
की कविता का प्रमुख स्तर है। जिस ठीक किरोह बनावा गया है अकिंतर में किरोह का 
स्वर एक समान्तर रेखा में कल्पना है और स्वर व्या गुरु (Liberation)
की यह दृष्टि अवधे के दर्शन का एक नया परिपेक्ष प्रदान करती है। श्रद्धा की 
भव्यता तथा शिष्यताओं के भींत श्रद्धा का आकार राज हर दिशाओं के दिशा 
की तरह न रक्षक एक राज ने दिशाएं दिशाओं के दिशाने का 
कल्पना का प्रारम्भ व्या किरोह की काला में है। १ यहाँ 
के प्रारम्भ में चौंकाने वाले विकास की बारे करते हुए अवधीय शिष्य शिष्य 
कविता के संपादक चुंबकी कविता के 
अन्तर्क्षेत्र बनाई है। नयी कविता का गुजारात का आकर एक व्रत बन जाता है। यह एक व्रत की आकर का एक 
उपजूत है - व्रत का प्रायान-किरोह। यह 
पुजारे में आक्रोश है, उदाच्छत है, पुस्तक है, अवधीय है। २ अपने यह कल्प 
का पुष्पका रस की चुंबकी के दीवारा स्तंभ (संपादक: ओम १६५६) और प्रारम्भ (संपादक: 
व्यास चुंबकी १६५५) के प्रा का उल्लेख कर कहता है कि प्रार चार वर्ष और 
अक्षर श्रद्धा की कविता का यह नया स्तर का यह एक राज की कविताओं का एक नया स्तर - के स्क्रीन-श्रद्धा-कविताओं 
का प्रमुख स्तर है। वास्त: स्वर व्या - प्रारम्भ के बाद मध्यका व स्वर अवधक 
झोंका शिष्यों के स्वर अवधक श्रद्धा के वाक्य रचना नये और उन्हीं 
प्रारम्भ व्या बोली, कुछ शिष्यों के कविताओं के प्रार में आक्रोश की 
काला में विकास का बदला हुआ। और 
व्रत की कविता की चर्चा में उपजूत कविता और व्या कविता में अ-कविता 
-------------------------------
1. भारी चुंबकी: अवधीय कविता: नवे लघुक, पृ २२.
2. छायांच चुंबकी: संपादक: अवधीय कविता, पृ ६२.
को वन्म दिया। दा० नामवासितं ने उत्तर स्थिति की रणमीर करते हुए किया कि
एकीकरण और राजसीकरण मनुष्य रह सके। पाँचा की मद्दत ही नहीं दे दी, व्यक्तगण के भी पर्यावरण उठ गये।

एवं कहिला की प्रशंसक में सर्मास्मित के समान कारण नाम दृष्टि- 
गत होता है, उनके स्थान पर व्याख्या से संबंधित नामों का उत्पन्न दीक्षा है। और
कहना न होगा जिस सूत ६० के वाद की कहिला में जिले व्याख्या लग गर जीवन के
व्यक्तियों का स्थान किया गया उसका व्याख्या उनके सूत ६० की कहिला में नहीं था। इसका
कारण भी स्थान में आता है, कि यही का धार एक स्थानि, निकेत, बीज- 
प्रक्रिया के ग्राह विषय होकर कहता था - यदि उसकी रचना ? मधुरी भी और उसी
कारण उसकी कहिला के लिए दृष्टि का गयी। इन दोनों जिले का जिला
देश का अपना अंतिम संबंध के लिए अनुपल संबंध
कर रहा है। 

गीत में देखा गया है कि ग्रामस्थ व्यक्ति में साँच्यवर्तक के अनुसार
नये कहिलों के नवर के साथ पारण-नेशन आग़वाको भी वह सदस्य की गरिमाण के
अन्दर नामांकित कर ग्रामीण का दी है। ग्रामीण कहिला में परमाणुकत साँच्यवर्तकी
परमाणु परमाणु नहीं है। कलह-व्याख्या समा दी ने बाँध का बाँध आज की कहिला-के
नये साँच्यवर्तक का वास्तव है।

---------------------------------------------------------------------

6. दा० नामवासितं : अलोचना, अन्वयी गार्थ, वृंदावन, धर्मस्वामी विदेशी
गीत संस्कृतम्य, हिन्दी वाल्स्थ्य के पाण्डु रचना - उं - श्रीमा सही
7. वन्यार्थ : दा० दीन (लोकार्थ)। पृ० (२)
8. मिथिला : अण्डाध : दा० परमाणु श्रीमारिन, दा० विचलनस्मारक प्रवास तिमारी
पृ० २०।
आज की कविता एक मानव को उद्देशित न कर निरंतर तथा परिवर्तन
पर प्रकाश देती है, उसी प्रकाश आज के लम्बाई में सांदर्भ-वाद रूप से उल्लिखित तथा
वृत्ति का वाल्क न होकर, वह कुमार तथा फूलहास व्राच का चीर होता जा रहा है।
यही कारण है कि नयी कविता और आवश्यकता का सांदर्भ-वाद पुराने मानवनयन के
दौरान प्रकाश देता देखना नहीं जा सकता।...... यही कारण है कि आवश्यक का उल्लघ्न
शास्त्रीय काव्यशास्त्र विविधता दिखाता जा रहा है। यह नूतन काव्यशास्त्र का सांदर्भ-वाद,
वृत्ति, बुद्धियों, यथार्थ, गृहोपा, विनिर्देश तथा वृत्ति का भलेकाल की कविताओं हैं गुलाब
हो । विशेषत: आवश्यक वादी कविताओं ने वह नये सांदर्भ-वादों को पाकर कविता
में लिखने दारोगा रोज के विस्तृत के जुग जुग कहाँ है, कविता के नाम पर छो ज्ञान-
का त्यों सबसे आसान आश्चर्य का जाता है। आमास्क, नौतालखी की कविता ( ग्रामिणा
शास्त्रीय निम्न विकास वाले अंक ) शरीर के अंदर की परिसंहित मात्र है। कविता के नाम
पर काही प्रकाश का अल्लाहकर स्वायत्त ही स्वीकार ही नहीं ! याद गौरवन्दर रतनेश
ने अपने गृह स्वातंत्र्यपूर्वक हिन्दी कविता में ऐसे सांदर्भ-वाद के बारे कविता ही
बतायी हैं। किसी प्रकाश का मान-वाद यदि हमें विद्वान की ओर हो जाता है तो वह
किसी भी धार्मिक प्रभाव और समझ के लिए उपयोग नहीं हो सकता। कविता के
समय रूप में वाचन के पुराण रूप में गुरुवर और हुलुम का स्वीकार करना एक बात है
किन्तु दुःख आनंद के नाम विविध अंदाज़ कर मनुष्य की वृत्तियों को विद्वान के – अराहत्त-वृत्त
पर हो जाना निराला निकाल निम्न बात है। कविता हमें किसी अटल में पत्ता के लक्षण
में दुबई है वह विकित पुल ( सुन्दर ) दूरस्थ ही किसी भी मात्रा में बालकर नहीं है।

पिछले पुस्तक में बताया गया था चाँदिवीर कविता में कविता का एक और
स्तर ( Phase ) उपर आया है, जिसे पुस्तकों के तकरार में विशेष रूप से। पुस्तकों
को फ़ैला रखने में आवश्यक पानी बाँधना उस कविताओं पीछे के लिए हमें हुलुम नहीं कहता है।
पाणी नहीं के लिए वाचन काव्य तो वन कविताओं के पास अभी दो तीन नहीं ( उदनार

प्रमाण 1. याद गौरवन्दर: आधुनिक कविता: नवे उन्नार, पृ ३४-३५।
2. याद गौरवन्दर: स्वातंत्र्यपूर्वक हिन्दी कविता, पृ २४७।
गया है ) \, बिहार मुद्रा ते लड़का है तो महिष्य की उज्ज्वलता की संसारना कंठे हो मानता है।

बाठोरी कविता में निर्मित पूंजी:

देश - ग्रेट

नव 1660 के बाद देश पर चीन और पाकिस्तान का आक्रमण हुआ। तब
आक्रमणों ने भारतीय स्वाधीनता की प्रगति के पारंपरिक १५ वर्षों में एक लंबा उत्परिवर्त
किया। चीन के दूसरे आक्रमण ने मार्कैनिया की आगे बढ़ी की। बंगला के समय एक ही
जाने की परापूर्व शीर्षता ने एक सर्वाधिक देश-ग्रेट से पर हिया। चीन के आक्रमण की
प्रविक्षिप्तता तत्व उठे। चीनी आक्रमण की प्रतिक्रिया में चीनी चीनी आक्रमण को
मारी दी। बहुत नाराज है। अहस्त अविवाह का प्रलम्ब है। आप कहेंगे?

कविता में उस

कविता का अनित्य मिला हुआ है। कवि ची है उठते हैं:

देश मेरे १

व ज्योतिमुंग दे दे धरार निरिष्ट पर,
कूह महोदेश रस आये
समकृत मुंगह निरा सिम्याण !

और कुराणी का यह स्वर कोश प्रकट है -
अन्न है यह

निकान मे पूर्व उनके ग्राण

काल है भी अधिक होता है प्यारवाद ,
किती आदर स्वामिनाती देश का
जाना हुआ अधिमात् २।

आये हुए उंडेश के बनम जब शासकों की और ये हड़ी फिटवा जाती है और
वैश्वन उठाया जाता है तो देश के लिए क्षी-क्षी कीठा के स्वर्ण में और-और ते

६। बाठोरी कविता : हिमालय , पृ ६४।
वोश में, आपास में आकर साखर लोग स्वयं देश के लिए पर फिरने की उल्लेख मानना के अनाव में प्रतिकार कराते हैं और स्वयं एनसी कहे रहते हैं तब जब वह देश के ही पुण्यक्षों वैकल्पिक होने पर भी गहरी दिमा ना अनुमत करता है। यह भवानी माननी नाशा में उतर जाता है। क्या ---

देश कैसे
जब छुट्टी आता है।
व्यापार फंसे में होकर फिटवा तो कहता जाता है।
पुराता
पुराता और मान्यता की वाज करते हैं।
हल्दी पर नाम छीन दिया करते हैं।
पुराता उस की नहीं होता।
बार बार लोहा पड़ता है तुम्हें।
नवा साला हैं।
सुरिया,
हल्दी,
मिठासीण।
कब से होगा
वार वापस हैं।
मैं तक है एक शब्द नहीं कटता।
और में,
(जस्ता राजपूत की चर्चा)
नीचे वाला बाबासे के लिए
रह जाता हूँ।

शायद देश के आलम करते वाले शांकरों की चरित्रहीनता के कारण कवि एक
प्रकार की गदरी उदासीनता के कारण (तटस्थ राजा की तरह) घृरहीनता का
अनुभव करता है। एक और है लाव की माता और दूसरी और हसके विरस चरित्र-
हीनता की रिस्लित, परागाय स्वयं उसकी व्यथा बौद्ध उठती है:

चरित्र हँसत तावक
और संवाद देखों की सही में भरी
हज नरी में
मैं जी रहा हूँ
जो रहा हूँ - जीवन की व्याख्या।

जीने का सबसा अनन्त दिना जो विशालभीन परिस्थिति में खेले प्रसि है।

मारात्मक मद्यमा की पुराती स्मृतियां तथा त्यसदनवील का मायामय
का अभिप्रेत हैं, जब तक माननी वेषमय और पीड़ा से परा हो। केवल रात मही, धरार,
गोय लाव नाशिंग भी किसी? अपने अन्तःराज्य के विरुद्ध तो यह कर सकता नहीं। कवि
व्यथा है नरे हुए हृदय से क्या उठती है?

जब है। कह है। मारात्म माता।
जब है। कह है। विलसूत गाथा
वह चाँदों होंग समस्त राक्षसा
अब नहीं यहां, तब हस्तस्य हुआ
अब रहा हवावस, केवल विवेच्य, क्षणिक स्वाप, विद्या आदेशों का।

गह बढ़ माता पातु पुनीत।
यह ज्ञान यह ज्ञान अवैध।
मेरा मोह व्यक्तित्व व्याधित, मेरा घर पुर्ण जन्महर
मेरा देश यह अवकाश।

-----------------------------
1. कैमल नागचेती: संग्रहन्त पृ 30.
2. कविताओं: १६६६ दीपो अचिलकुमार, पिशनाय त्रिमाणी। पृ ३७।
(५२३)

कोई उपन्यास परिच्छेद की संख्या के प्रतीकार में तो यह अवश्य आदर है परन्तु ध्यान के क्षेत्र वह रह रहीं लक्षा। बैठे -

हुना हुआ विषाण्डक, छुर्र हुप्त कुश्योर्चा है
हर उदास है कारायास : दुःखण्ड अन्न प्रतीकार है।
अाँ गाना

श्रीराम : पारिप्रेयः

देश का अवसर स्थानांतरों के आकार होगा, समूह हर चौक में बढ़ता जा रही है, ध्वजस्वीकृ त देउओं में हमारा स्थान बढ़ता जंक्या है आदि मनोहर कवितावली में राजकुमार तांग जनता को सच्ची परिस्थिति का तात्पूर्व दिशा बताये दिना गुरु-गाय रेण डाल दें। कहीं आकाशण रूप से सहारे तो कहीं पौर्तर्स में सहारे देश की प्रगति का यथिक पंचक उत्तरा जा हो रहा है तेहरी गाँव में पर ये होती रहती है। कष्ठित में दहर वर्षापुर आचार की प्रतिकारण के ची बोट लगाती है - ग्रामविभिन्न पौर्तर्स में भी अर्थ में दृष्टि है: तव का रूपद ऐध्य रिस्ताग में स्थापित है। बैठो:-

सेना का सेवा
आ पगी राष्टी
महु आंखों ने फेरा से
हो गया बिनाम.
न्याय रिती मे लाल

क्षण है संजयस
(वह बाद दुर्घट है कि
परिच्छेद के गर्भ में
किंची काटताने
क्षण पार्थक)

-----------------------------

° कवितार : १६८४ सं अक्ष कुमार, पियायापत दिखाओ, पृ. ३७.
(424)

और लार्यें घास।
अनं तो
स्वाभाविक अन्मारों में
लिखा जा रहा है
देश का विलिकास।

वच्चारी अधिक ज्ञातारी स्वेदिकी है, पदा डालने है जब फिर होगा। कह पाराग करते, क्षमतानुसार पान करते हर वर्षे बीते बुझे। अन्यों का धीरे-धीरे चूका, कर की रोटी ते बोले पटरी। काव्या का विश्वास फिर उठा है अतः अन्मारा में आयुक पर्याप्त ठाकर नी काव्य विशेषता नहीं अन्यायकित के लिए आवश्यक नामारा को अवस्थान करते हैं। अन्य अपने कविता-रचना के लिए स्पष्टतः विविधता दिखायी पड़ते हैं।

एक विशेषता आने वाते मुलाम ते सुख फिर करे काव्य की सुख सबनी फ्रेंट करते हैं।

इसे काव्य के छवियों में भविष्य का पहला कप नहीं आकर जा उक्त कर।

बोध वात बाया,
अपने आपको एक चलाकर रहे।
नामारा बनने के लिए फिरने सब की जरूरत होती है।
अपने आपकी चलाकर रहे।
ब्या आजादी रिस्की तीन धके हुए रंगों का नाम है
इसके एक पाहिया दौड़ता है
या फ्रेंट कोई साथ मजबूत होता है।

जनसा के दू:यों है अन्यता काव्य देश की बाज फ्रांसीस के जनवार नहीं है। अन्या कारतून थोचि की चढ़े, निमिन दादा और स्मिलित के व्यक्तियों के होरते हुए नी कवि देश की आन्तरिक लघूति - गुण, कोट, मूल्यों की महता आदि में उदार-सा अनुभव कर।

--------------------------------------

1. रेमेश कॉर्सिक: लवित्य और लवित्य, पृ 27.
2. पुरुषित: ललित हे सहक ललित, पृ ९६-९२.
चुरा है। स्वारीकृत ने २४ वसंत ही शतिकाल से जीवन की मण्डल की हमारी को प्रवाल प्रकट गुजराया है। ऐसे अवसर पर छाया तो दुःस्वी लोगों की आफल की जा रहीं। अपने व्यक्ति को छाया ने उस तरह बाहर किया है:—

लब्ध; मेरे नामात्मा घर, सीजेट के पान नहीं चाहीं, अर्थे मकान, नियोजन बंधुओं में निर्भरवादों व्यक्ताओं,
लोग प्राप्त हैं तर्के तर्के में सुन कर रहा है।

चाहें दे उत्तरों में लोग बैठना प्राप्त होगा है।

अंतरास्त्रोतरा :-

प्रतियोगिता कविता के निरंतिप मुल से अंतरास्त्रोतरे के विश्व में फर्स्त चर्च की भी। विश्व की सदस्य मानना-जाति की बैठना सबे वह मुन्य स्थन या पुरुषा है, गुरु या गाष्ट्र तो दो, साहित्य-कान्त्य में निरंतिप ही प्रवर्तक है। राज्यात्मा के गद्यवाणों के कारण मूल्य के आत्म प्रजात्मा का वह अबर हाथ अर्थे निकाला हुआ प्रवेध होता था। परन्तु वह का विके मानके माने साथ ही उत्तरता का और मुख्य हिंदु तलुक अविधता में हो हुई है तब की मूलभ गाढ़ावादित्व हुई। वस्तुतः अपने कार्यालय और साहित्यवाद के लिए धारित-पारि, स्थि-पुरषा
देश-परदेश की दीवारें कभी भी अर्थपूर्ण नहीं हो सकतीं। भारतीय वर्णालय पर प्रलेख धारितवाद अपने मुस्लिम से दुन की जीत है ताल्प्रत्य की उल्लघ वाणिज्य में हुआ की वेदना फूला है अव: संकीर्णता का त्वार मुन्य की महत्व का परत्वालाक
माना जाता बिलिस। वापसी वाणिज्य के देकर भी तब मुस्लिम का विविध इतिहासें
में निर्भर हुई है। वैदिक आक्रमण के साथ भारतीय राजत्व में जनता की
बाहर शासकों की सब चुनने फूली। तिलकत्तौल चर्चामण गंभी शाहमंड का

र. दृष्टान्त सिंह : अपनी शताब्दी के नाम, गुरु: ७२.
पहलवान होना महत्वपूर्ण होगा। विश्व के अन्य देशों में चीनी आकाश तथा भारत की पत्थर में कई अनुसंधान विभिन्न नहीं की, उठाया सबसे शुरुआती की। इस प्रकार की उद्योगीता ने अन्तरराष्ट्रीय तथा ग्राहकों के विश्व द्विपक्षीय में विकास का रहा दिखाया। चीनी आकाशाकारण के कारण अनुसार अंतर्राष्ट्रीय के क्रांति मोड-मंड में हुआ। अब तक जो उद्योग की अन्य राष्ट्रों के लिए भारत ने बनायी थी, जब तक में पहली बार भारत ने सहायता के लिए विभागीय दर्शनीय नहीं होने की पारम्परिक उपयोग ने उपयोगी तब नयी विदेश से विलुप्त नहीं कराया था। अब जब वाचन पर निर्धार होने की वाह राजनीतिकों के शासकों की साँची नहीं। भारत की तुलना का ग्रांट स्वतन्त्र है। जब में उद्योग की नीति। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक के विषय में परिवर्तन गणित। उसी का निभाई लाभता में काम के सहस्त्र प्रतिशत में हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक में कहां दों की स्वावलंभित विषय ने निकली रूपों की परवाह नहीं है, सहायता के लिए उन्हें तेज रेखाएं। वे तो नादानगिरि हैं, उनकी माता-पिता का पता कहीं नहीं। किसने उन अन्य विदेश और देशों की नीति का तथ्य चिन्ता होता है।

वे पहले हमारी शाखाओं पोली ने देख फिराक करते हैं।

मे उसकी दक्षिणों में हेड कर देते हैं;

फिर उन पर फास्टर चाहते हैं।

वे अपने नवारों में विकास के कोड़े सदराता हैं;

बाहर गई सित छेड़ते हैं।

राम्यता का वृहद्द इक्षुता निकल रहे हैं। वे दूर... वे आदि... वे अव्याहतिरित... नकाशापाठ... आह तब वहूं समेता?

यह बच्चे सबमुख।

किता अनाहोना है।

शब्द: किंव जी की वैदिक मिश्रित स्थित: अनिश्चित पाती है।
(427)

(अाह मेरी लोचनों ! में पुष्पे)

अमृत से दूःध कहां से फिरा दुः । )
आह मेरी कविता ! में ज़ुने पाटेह या वीता कहां से का दुः ।

बात यह है कि महाराजीन राजनीति के जीवन में सन् ६२ के आगमन के बाद तीसरा
स्वतन्त्रता का समय रहा - उसके बाद नामी क़िस्सा बिंब नैनी, जब अस्तित्व, बंकीश
की शाखा में पनफ़े बाले मुलयाँ ने अपना अर्क जुक देर के लिख को गिया । ये बाद में
पाकिस्तान के नाराज पर आगमन एक और दीर्घ कहां दे दी गया । लाखों जीवन कविता है
यह तम देख कि हम राजनीतिक ने गोल लोग्यों का कालस गिया है । एक उत्कृष्ट वास्तविकता
भारतीय आंतों के लिए राजक हो उठती है ।
जो बाहु का जो सि है

अाहि, भी कलाज़या फि लिह तरह
गाँव पूवीपिंच दुनिया को नाशी समझते थे
और हर चीज़ पच-तावै से चलाते थे
कारी बालीयों को पायत्वि करते थे
ते ही बाली श्राज़ियों ज्ञातक दिनाते थे
दुनया में शान्ति का रवाना का लक्ष्य है
जो दोनों फलों की युद्ध के अर्थ तेज़ करते थे
नाराज़ के बुन तरायते है ते निर्माण थे

इन राजनीतिकों की धरी निर्मिता की अभिव्यक्ति अन्तिम गौरव में तिलकी नैनी को
खस है । गहरे अंगुलि के लिया जागृत ही कविता में सर्वक अभिव्यक्तिक हो सकती।

-------------------------------------------------------------
1. दुनिया लिखि : अपनी शताब्दी के नाम, पृ ६५-६६. [वंकन्ह ५, ४२१ आ]
2. तेरी भी
पु ६५-६६.
3. हीरो परमाणु राजस्वाल : नाभी कविता का फांसीव, पृ ६३५.
4. राजेश चन्दना : आर्तु निःसिल का अन्य कविताएँ, पृ ६५.
वात यह है कि हिन्दी कविता के लायक दर्ज में अन्तर्जातीयता के मूल्य का ह्रास कीत गया है। शान्ति की पुकार के दौरान बालक का केंद्र कहाँ तब उड़तित हो रहा है।

कवि शान्ति के नाम नाटक लेखने वालों के लामने तीव्र भ्रष्ट करते हैं। कवि
इस बात हैं:

मैं भी शान्ति चाहता हूँ
लेकिन यह शान्ति नहीं
जिसे चाहती और दुनिया का
पढ़ता एक केंद्र है
कुछ बन्दर्गाह को बुरा और कठिन को अभ्यास करते
को गायकों वाले
और वार्षिक चेहरे में सियासा दुसरा
पूरा दिन शान्ति नहीं चाहते
भिंतरी --
नापूरोको रोकने के लिए तन अंगारों द्वारा हाट निकालते
का नाटक करते।

यह विश्व एक से होने के दौरान भी मान की पाठ्यालय लेंतीं भी क्षमा नहीं है। पर्यावरण का स्तर, भी यह मानता-खेड़ा भाषाओं का उत्पादन कठिन भी क्षमा नहीं है।

युद्ध की नीचाहर्षकता, विवाद देख ही हुए हैं परन्तु मन में शान्ति कहाँ? युद्ध भेंटे बालर भी शौर्य की दुनिया में देखता है, युद्ध नहीं तो शौर्य युद्ध ( मान दो उन्नत का नया संबन्ध द्वारा दूर ) जाती है। कवि ने पतें देखने में सीता युद्ध को स्थानीय हो जाती हैं:

जलने पाया होता है
सकते
वह ताल है
कहते हैं
पुत्र मक्खियों पर चारी है।

---------------------------------------------
1. लक्ष्मीनाथ बाबू: अंधविद्या, पृष्ठ 622.
2. कवि कवियों: देशानन्द से हटकर, पृष्ठ 11.
नैतिक मूल्य :

अत्यावश्यकता के अन्तर्गत नैतिक मूल्यों के निर्माण के विश्वास में चर्चा की गई है। नीति का चौंच कर्मवादकक्ष्य का मानना जाता है। और क्षेत्र का अर्थ है ज्ञेय कर्म। अहुआ के लिए सामर्थ्य, सम्बन्धानलार नैतिक प्रयास भूलत पाना जाता है। यह उचित-अनुचित के विकास में परे होने का उपायमान है। निर्णयम दृष्टि से जो मुनुप्त है वही कार्य उचित या नैतिक नहीं माना जाता है। सामान्यतया मानने से विश्वास उचित अथवा नैतिक नहीं माना जाता है परंतु राज्य की पुरकार के लिए कार्य करने वाले पुल में मानव-वैदिक नैतिक माना जाता है रूढ़ा खुदें का मत है। नीतिक और विधि वैदिक है जबकि स्वतंत्रता पर देने वाले वैदिक विश्वास नहीं है, परंतु वैदिक जानते हैं कि स्वतंत्रता के अनुसरण के अध्याय पर होता है कि नैतिक मूल्य का निर्माण चाहीं करते हैं, वे निर्माण नहीं कर सकते। निर्माण स्वतंत्र है कि स्वतंत्र नैतिक या वैदिक होना वह नैतिकों की अनुकूल है। नैतिकों ने स्वतंत्र वैदिक में अधिक उद्देश्य दृष्टिकोण अनुसरण बढ़ाता है। परंतु नैतिक मूल्यों का अविरलता दृष्टिकोण मानने बाहर आता था, उन्हें कहने का यही रूढ़ा अनाया गया। परंतु वैदिक के विश्वास के लाभ हैं। ज्ञान-जीवन को खाने से बढ़ाते हैं। ज्ञान-जीवन की ज्ञानता जानने में उत्कृष्टता के लाभ है। नैतिक ज्ञान को अप्रीत, अक्षात्स्व, भ्रष्ट और निष्ठुर मानना जीवन के लिए अपरिणाम का ज्ञान, अविरलता है। उपर्युक्त नैतिक ज्ञान के अनुसार ही नैतिकता विद्यालय उपकरण का ही परिणाम माना जाता है। शरणा में मानवीय विज्ञान का मुन्न के रूप में नवी अथवा पुरातत्त्व ज्ञाता ने और वाहसी कितना ने अनाया है।

नैतिक मूल्यों के परिवर्तन में अप्रीतिता का बड़ा योगदान सबोस्तव करता पड़ता। नैतिकता के एक पथ में दौड़ा जाता है और दृष्टिक उत्तम होती है। प्रत्येक व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अच्छी निर्देशित है वहीं कहीं तो मानव को अस्पष्ट बढ़ता है। नैतिकता भी त्री नीति ने दौड़े होते हैं। राजनीति में नीति ने नीति के विषय में प्रेरण करता या तो नीति को
राजनीति का एक (मान) अंग साधारण निति के साथ को गहनपाऊँ बना दिया है।

मुख की नींविता पर ही हमें जबने प्रत्यय या वातावरण काव्य में आत्मारेष उद्देश्य करने के प्रयास कहती है। सांस्कृत में नींविता मानों के आभासिक का जीव निरन्तर करने को प्रवक्तिकोत्तर रहता है। काव्य का निरन्तर करने के बाद पर नींविता की तीन से लायकता हुई जो हमें नींविता को लायक हो जाती है। बादियत के अंतिम काल पर नींविता की क्रिया को लायकता हुई। जब तक नींविता का लायकता हुई तक नींविता का लायकता हुई। दोनों नींविता की लायकता की तीन से लायकता हुई। जब तक नींविता का लायकता हुई तक नींविता का लायकता हुई।

विषय ।

जीवन निर्वाल शाक्त

आंग्रेज सेटों की साधारण हे पहरी;

वह नगरी में

में जो रहा हूँ,

जी रहा हूँ - जीवन की प्रयत्नीत।

+ + +

चाँदों है मुखपाद

भूम बैठे हैं रुपारे ओर, घोड़ा ओर मैंही हो जाती है।

जुड़ा की नंगी-बोंकी चारे।

एक पिंजी की लख बैठे गिरी है। स्वयंबता

और मिट्टी चटा है पुरा देश

जीवित है दिनभर बुझारी।

नहीं नहीं......

सपनारी:

तेली हैं के चाँग चीड़ी नाथ।

------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

१. कृष्ण वाचकोऽ: तंगान्त् , पृ. ३०-३१.
और ऐसी ही स्थिति पर सच्चि करारा व्यंग्य करते हैं:

जहां गूँगा होता
अन्तरिक्ष गृहा और कैपाऩी
प्राणार्णाक ही कूली हैं।

दोहरो भक्तिवल, पाश्चात्य बाहुलीकरण
प्रांर, प्रांरांर और उत्कर्ष
जहां के सर्वार्णा कुलय हैं
जहां उत्तर श्रेय का
उपचारण
अनेक नेत्र नेत्र अभाव है अर्थाते में होता है
वाली ही जब जहां घनातक माना हैं।"
(४३२)

अगर तो परें हैं अन्धे दुन अन्ध विवशास के
मरेगा आमी मिल दिन, उस दिन हिर जायेगा जीवन
जीवन का फल लान।

मानकीय लड़ता है जीवन का एक छोटा फल मी मुल्यवान है। यही जीवन है।
मानकीय लड़ता है एक जीवन सील है।, चून्य का आसार है। काफ़ कामना
करती है।

वहाँ निकली मही हौगी दोपहरी
घाम, रात, दिन
वहाँ जूटे मुल्ले नहीं हैं
परारे नहीं अपने हैं।

हो जाए, जिसका बेहतरा
जिनीं जोनी की जान होगी
पत, युगे ज्यां है चाहे।

जीवन के प्रान्त आस्था:

केवल भी वह प्रशन्न भी अत्यंत भी कताया बा चुंबा है कि जीवन में मुन्यों
की पाठाला भी हैं। प्राकृतिकला भी है, जहाँ मुन्य काते हैं। परत्सेम रहते हैं,
कहा फिरने अंद नहीं काते हैं। भानारी कथना में पिक्सरिका अस्थितार का
मान एक्व उत्तर आया है, जीवन के प्रान्त आस्था के तथा आस्था का भी स्वार दीय
पद्धत है। जीवन-मुन्य के प्रान्त विवशास और आस्था तथा प्रान्त होते हैं जबकि यहाँ
व्याप्तिपूर्व व्याप्तिपूर्व का होता है। एक रघुतित-वाज प्राचीन आदर्श एवं मुन्य को अपने
यूग के परिपेक्ष में २५१ बाल्य है, यदि उसे वह समय सापेक्ष नहीं प्रातीत होता है।

-------------------------------
1. लक्ष्मीकान्त बनर्जी: अशुभान्त, पृ ३५।
2. वनस्पति: हस्ताक्षर, पृ ७२-७३।
वो उठे पुराना मानकर अस्वीकार कर देता है। वह उसके लिए अस्वीकार का नहीं, निश्चय का पताका का बाांला है। बात स्पष्ट है कि इस अस्वीकार के स्वर में कुछ वर्तमान का दूसरी रीति है अस्वीकार है।

कुछ वर्तमान की महीन अस्वीकार - द्विवंतियों में किच जब ते लड़ गया है, निर्धक्ता और निराशा का त्यो इस स्थिति में संयम हो रहा कवि को प्रतीत होता है। बैठे कवि नाम उठता है -

मेरे जीवन में ऐसा वह आ न गया है
जब तभी धीरे धीरे
कुछ भी नहीं है मेरे पास
दिन- दोरती, रवाब
राक्षसीति
गप्पप गाय
और स्वी हारारे वह भी हुई हैं
मेरे पास।

जो जीवन जब भी पुकारा और महान है एक ऐसे ही युवा कवि के लिए सपनों की घटी- वे प्रतीत होता है। कवि का दृष्टिकोण स्वतंत्र नहीं का पाया है अतः जीवन के प्रति उनका ज्ञान इस वर्तमान स्थिति है पीढ़ियों का लिए कुछ नवीन-अभीन-ता कीखता है, इसे कवि ने दर्शा है -

अंतरूपं में खड़ुआपन
पुकार में अभाव
का कर फिल्ले मार होते
सपनों की घटी में
पुकार बैठे गया

-----------------------------

१. की कथीनांत बष्ये: माता दर्शन, पृ. १२०।
में ग्लोब चुदाई हुई
लक्ष्य की द्वितीय रैली में हीं पता हूँ
( एक बारी में ) ।

तो बाहोंवर्ती कैथिस्त्र के एक अन्य काव्य जीवन शीर्षक की व्याख्या एक विशेष सम्बन्ध
में करते हैं -

जीवन का चाँद है छिक्के जीता अपैर लिए
वहीं पिराम चतुर्र की अनुभूति अराज है
एक हाँदी हुई मुक्किली
श्राम वाँ और उठका जाती है

अंदेश-
कौं विद्वान् जीवन दर्दन अपनी पर लाड़े लिंग , गुरु-सिद्धांत जीवन-विद्वान् के मार की उटा
की उटाई सिंहास , जो मस्त है उसी दी मात्र्यांन सानकर जोती रहने की दृष्टि जीवन
के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण रजत है । जीवन के लिए चार्टवर्ती कृपाला में विशेष
दृष्टिकोण राखने वाले कवि हैं । एक काव्य जीवन की सार्थकता में ही जीवन की विशेषता
dेखी है , अन्यथा जीवन-कार्य की गहराई बढ़ी मुठभेड़ यम , इस अन्य कार्य है
असाध्य का शार्म होना बड़ी जीवन-कार्य पाने की जीवन-दृष्टि पर निर्माण है।

जेसे -
काहीतन विद्वान् दृश्य है :
मुक्के असाध्य का चाहिए
जब फिर जीता
और शरण का चाहिए
जब फिर मैं देख निर्देशन
कहा वनाश्च , अनाम
जुड़ रहे हैं

1. शोकालन्द कीर्ति : मात्रा दर्शन , पृ २४.
2. दुर्गन्ध्र गुप्तर : आवाज़ से घेरा , पृ २६.
क्यों हैं जैवि जीवन के
के फर के फुट रहे हों,
जीवन के संग में हिलो ।

लवलग उसे पूर्ण जीवन की प्राप्ति से हो कवि की कामना दार्शन ही संक्षिप्त है । अनात्मा को नारा कुंव कर फेंकन का वाय तब ईश्वर-अनुपुस्ति की ईश्वर-दार्शन का कोई मूल्य नहीं रहता । जीवन को एक अलमार्ग पदार्थ मानकर वह निष्ठा भी न से जानेगा ?

और हृदय लम्बता से तदा जीवन लवलग दीन कवि को कहीं भी विज्ञा प्रतीत नहीं होता है, जबे -

धर्मोहार की चिकनता और
व्यलोक्ता का स्वाद
कुंव की ध्यानता
और दुख की याद
झं की जिक्रता
जहाँ की सवार
यह में जू हुज्ज के साद
युक्त घुंघर जिंदा जीवन जीने से हर लगता है ।
युक्त निवास की ये हितयो किवाड़ो से हर लगता है ।

और जीवन के प्रवास कवि अति कारण में द्रौपदी हैं । कवि के यह स्वर में अलस हैं, अति का आयार हैं । कुल परिवार उद्भव की जाती हैं :

यथा नन्द की विचार
अत्यधिक मुख हैं
पैर है अत्यधिक और नेत्र की शृंगारीत
स्त्री ने परम्परा
एक नन्दा-त्व यूं हैं

---

1. वन्नम् : सं २० जिवन , पृ २२।
2. दुश्मनथ चिह्नि: अली शताब्दी के नाम , पृ ४।
और यह मेरा था है। जीवन में इसे न्यून-तर-बा हूँ देखते हैं प्राची कवि की आर्थिक स्थिति अद्यावधी है। कवि इस णु-परिवेश से अलग है, अस्मृति है ऐसे मानने का कोई कारण नहीं है। जेठ णुटन से पढ़े जीवन में अपनी रचना दुःस्थ है वह कीवन में मार्ग लौटवा है, जिसका मुख्य है। उस पुखार राह जाती की दुःस्थ कवि की रचना गामांकित की पश्चात है। कवि के प्रवर्तकों में देखा जाय।

आह! वातावरण में जेठ णुटन है।
सब अन्यथा में चिन्ता जाती है। और यह जाना और जिन्होंने उन्हें वह लिखता रहा है।
वह यहां है राह लोकों।

वह राह जीवन की जीवन ने प्राची आर्थिक का परिवर्तन है। कवि जीवन में प्राची आर्थिक का परिवर्तन है। ऐसी दीर्घता निम्नांकित पात्रों में है।

राह के कार्य समय में
मेरी छोटी पर
लुभे काम है जो दुःस्थ मेरवार है।
कुछ चुंबक तक रखोगा
ताल होगा।

फ़ैसले:

मानव-मूर्तियों में प्रेम का मुख्य महत्वपूर्ण है। मुन्यवी जीवन के कितने णु में
किसी स्तर पर उठकर चुंबक कम नहीं अंकित जा सकता है। परन्तु णु-श्याम ( प्रकृति णु में)
फ़ैसले विश्व वास्तविकों में णु-परिवेश के कारण परिवर्तन कारता ही रहता है।

-----------------------------------
1. अजय कुमार: डे गुल नहीं, पृ 34.
2. दुष्यन्त कुमार: आवाज़ों से देरे, पृ 36.
3. वहीं, पृ 35.
फांसियोल कविता में निर्दित मुन्यों की चर्चा करते वक्त प्रेम के संबंध स्वतंत्रता में यह नींद भरा गया था कि क्रेमेंके प्रेमयुक्त एक नये मुन्य में के प्रेम में विकसित हुआ है और प्रेम की तुलु अनुभूतियों की उत्क कविता शारा में अभिव्यक्त हुई है और माटोरी कविता में पुराने मुन्य एवं परम्परा की अधिक करते की एक प्रथम दीर्घ पढ़ती है वह अस्तित्व के नाम दे पारंपरिक रंगन का कार्य करते को तुलनात्मक है।
वानीचा कविता में जो नये नये कविता विषयों आदर्शों को उनमें अस्वीकारितयादि का एक रहा और कविता के दोषों के तारा जारी और प्रेम नयन कारणों में जो पुनरुत्थान का प्रयोग करता है वह पुरे हिन्दी साहित्य में अनन्त है। न विषय के कम में कोई खाब-सज्जा है, या न विषय में आर्हिता।

अवधिक कविता के एक अपराजित कविताश्रृंखला के स्वतन्त्र पर वानिक एवं कविता की पहलवाणी मानी गई दूर चर्चित का कविता प्रकट किया है।
कविता अपने कविता में भाषा शुरुआत के अन्त में दूर प्रकट कर देना चाहते हैं। कवि का अवध कम इन लघु में प्रकट हुआ है।
हर एक रात्रिक है गुरुस्वीत अवध वास बांधने में निश्चय पाता हूं।
और कालिका को तीव्र शोक या युग में चित्रों का शोक बांधा है।

इस देश की पुरात के सिद्ध प्रकट हुआ प्रयाध है कि यह का विस्तार ता या नागरिक विश्वास का परिणाम नहीं की लक्ष्य है? उपर में भाषा को अवध के कहां है के हिन्दी माटोरी कविता की क्रमशः नै देश की पुरात का प्रयाध का प्रकट है प्रयाद समुद्र का उपरितित निष्क्रिय है।

----------------------------------------------------------------------------------

१. आधुनिक हिन्दी कविता: तंगदक -वाबिष्ट, पुलिस, डॉ. नरेन्द्रमोहन -
शीर्षक हवा: तंगदक, पुलिस, १२० है उद्धर।
नये देश नागूनों देने के लिए जानवाले दांतों का अभाव है?
वाय अन्यत्र?
अधीन?
हर एक उपहार हुआ लगा नाकालतः
चारे दीन्धुर को मजबूत के धेर का
नहीं है
अनलाम अक़े?

व्याप्तिक कवियों की मानती है कि ग्राम की मदुर अभिव्यक्तियाँ देखी होती हैं - देखी जाती हैं। अपनी एक ओर जीवन में यह मदुर रूपों की समस्याओं का परिणाम युग-
कुंड जाने का वातावरण के देखे से जितने को ग्राम-न्यूनता में सहज-सुनिश्चित किया है। अंतः --

पदार्थों में अनेक भूल आता है
हुला है --
मलोचा मुर्दे जिलाते थे।
-- एक सघं यह है --
रात-रात नर जन्मा जाता।
नन्दा आचाय फरती बसला।
आघां ने बुंधरी लुघुलों
स्वैयंत्त्र्य कुल ने घाप
धुम बादः है --
घम सब कुछ मुक जाते हैं।

---------------------------------------------
6. इन्तु जेन : वास्तव कविताएँ, पृष्ठ ५७.
7. वाणी , पृष्ठ ६१.
(३३६)

और नाटक एक प्राणकी जन्म के लग में खली है, उस दुर्दम देह को रोकना, हालत बनने लगता बिंदुः है उसकी प्राणविक की भर उन शब्दों में करते हैं :–

यही है वह प्राणकी जन्म

वृंच वो गुलात चारे प्यार जेला

अब्बा, मंज्रा, मांदे के स्वामियार जेला ।

चौं पर यह चोट हटता, चौंटरा-ता हाँफता

आशाय ला । दुर्दम विरारत के नम अवाहन-उरियाका

चुर हुवो वीरवं बो निरसन कर, फुर्मता-ता –

आ राह है गुराह यह दुर्दम-उरिया । तोड़ तैने को

मुराद मुलियाँ कौ । जीव उपनो मातरा-ता

नहीं होता, नहीं होया ज्वर

इसका दमन ।

बाहना के कमर खाय यो वीरवं साहब कनाकर देह के इस दुर्दम विरार को अनुकलीनीय माना है । प्रेम की खर क्षेत्र विेंकट इस काश्तम में हुई है ।

दूरी औरप्रेम का उपयोग रिहता की पुर्त्य के लिए ही है।, हारम

'प्रेम विशोष' नहीं रहता । जेले --

बज बज रिहत होता हूँ

प्यार करता हूँ

बजर एक धोड़ी है नींदे उतरकर

दुनिया बहालने की।

+ + +

बज बज रिहत होता हूँ

प्यार करता हूँ

बही एक वर्त है

जिन्दा रह जाने की ।?

1. पथाराथ उल्लास : अफलो शाहबदी के नाम , पृ ३२.
2. भ्रात साबनसी : लंबात्त, पृ ६५.
कवि के लिए प्रेम ने अपना पुस्त को दिया है ऐसा महसूस करता है - कवि कहते हैं:

मैं लक्ष्मण हूँ।

तनाव के प्यार से कहा कुठ
अव तु मैं बौंला हो नहीं गया
आपने मे बदाया अच्छा नाटक
केला ही नहीं गया।

उन्नत चा बौंला बच
दौ चारा उत्सव नहीं गया।

बहानेवारे मैं धारे, उन्नत आपि मुस्तकों मैं अपना आना लों दिया है। वे मैं सब

उन्नतवार के क्लाश के लिए क्लाश वाले नाटक के अंशक के अन्य माया ही रह गये हैं। (अपना-
अपना दृष्टि-क्षेत्र और अपना-अपनी अनुभुति।) उन्नत कवि का अभिप्रेत है।

बाटौलहरी कविता के एक कवि ने प्रेम को समरपत अन्यता कहा है, परम्परा-
प्रेम के लाभ में यथाश्रय की - उच्च आंतर को की जी शामला बनाए है - तापि के गुर्गमता के
मार्ग में कैसे बारा न पाये। कवि का यह लाभ पहली नवर में क्लाशुण्य आनता है:

पिकर पहला हो अंतर आपना हो
वह हरी पुरना ला तथ कहे हे बायोधा।

व्यार
एक विद्वषित बाताक है।
एक बाताक दे दुर्बल बाताक तक,
न बाताक का अन्त है
और न बाताक का
कहते हैं वह हर्षक
अन्यता ही अन्यता है,
पर

------------------------------------------

1. कविता वाणिज्यि: संत्रान, पृ २१.
भावना की परिभाषा:

स्त्रांनूसौरूर काव्य के परवार दो द्वारा एक विश्राम स्थल, मानव स्वरूपनेर और मानव-साधन के मुद्दों को स्वीकारार ही नया था, पारत में मानव-रिवाजन्तरूर और मानव-निर्भर एवं सार्थकवाद अत्यधिक मुद्दों की प्रतिष्ठा स्थापित की गयी। सार्थक में वह नहीं देखा गया है कि बहादुर हुए मन-सम्बन्ध, राजनीति के विरुद्ध के दर्शन में रिवाज होने के कारण मानव-उज्ज्वलता भी दीय गया। और अन्य रूपों ना पार की कुछ हो गया।

पूर्वोत्तरी सम्पदा, कैश्मीरीहरण के छाँट-बड़े में कई जनता के लिए युद्धके के रिवाज और क्रांति की नया है। अन्ततः संघटन हो लीलियां को समाजवाद में परिवर्तन कर करने में अंतराष्ट्रिय उपयोग मोजता है। वास्तव में बाबूजी ने देखा वो वही स्थल वो अशुराह स्थल होता है। भ्रष्टाचारी श्रमिक ने स्थान पर अपनी वार्ता की प्रतिवाद ने उनकी वार्ता का एक दौर सुख दिया, वो वार्ता में मुन्नारों की मुन्नूर गारिमा से अपरभूषण होते वाला रहा।

गुणों की गरिमा, दैवीनौद आत्माओं की महत्ता के ग्रांट पूरा पाव

स्त्रांनूसौरूर काव्य का अवाज़ दौर नहीं जता है, लड़ी छुट्टी का वातावरण का जुगा है। एक ही गुण नहीं है कि पूर्वोत्तरी की मिलती हुई -दूरी तथा ने वित्त-रोज नया मानवता के दौरी बढ़ते होने के लिए हितों वाली का उपयोग करने का नी

लोग है ऐसा प्रस्तुत होता है। ताल्लुक दिए बुधवार एवं ताल्लुक वृक्षों के

लुप्त वधर्म का बुध मानवीय वृक्षों के सभी नहीं करने को तुलना है, ऐसा चुनौता

1. चित्रात्मक - सं २५० अधीन गुप्त, पृष्ठ २४७-२४९.
वातावरण का है। मानवी कि मानवी कायाये रामे की प्रायं महत्वपूर्ण जात हैं—
उदे विदेशीत कायाये रामा, उसके अन्तर में युग्म की तत्त्वाद के गरीब के लिए
सम्बन्ध का मात्र कायाये रामा। युग्म का युग्म के लाख सम्बन्ध पुरुषवान है वह
उन्माद हुआ सत्य युग के लिए महत्वपूर्ण है। अद्वैत रूप है मानवीयता का जो खूब
है। शब्द शब्द अपना पीठ चढ़त करते है।

कहीं कुछ जो गया है
ऐसा जो कही नहीं था, कहीं नहीं था।
हर चोट एक वोल्फ अटकता में गुंजती हुई --
अनिविरत, आशा का गुरु... वन तलन
हमा चढ़ती है। वह कुछ जहाँ का तारा, ज्या का तारा --
उन-रूप अवरोधा। पूर्वकी पूर्वकुल प्रज्वलित - आमाह
हैं। यह कहीं कुछ जो गया है हरेक
और वह महत्व करता स्वर्ग
उपश्रित होता है।
हाय! घृ जामकाब।
ते तेरे मा में शेखी-शेखी 'व्यावार' है।
और वह जब महत्व करता, स्वर्ग
उपश्रित होता है।

अमानवीयता का एक वोर राज्यीतिक के मान्यक होता है वहां सम्बन्ध के कुछ
आवश्यक के नीचे आते हैं। नीचे आते हैं मानवता की, परन्तु उस आवश्यक के नीचे हत्याओं
का आयोज़न होता है। गायनी, नखी, मार्टिन ल्यूका फिन्स के मानव-पास प्रदर्शनों की
नूतन हत्या मुन्य प्रारित के लिए युग्म का बहुसंख्य करने वाली कहानी है। अमेरिका
शाखाओं द्वारा निर्देशित भाषाओं के हत्या मानव-विश्वास में कहीं मुन्य पहले जानेंगी।
कारण इस वक्त प्रारंभ और हल-हलन्दा के कहार है वह अपनी अन्त्संक्रण से ऐसे शाखाओं के
प्रारंभ करते हैं।

----------------------------------
9. दुस्रांश सिंह: अपनी शताब्दियों के नाम, पृ २५-२६।
पूरी कविता में कवि की वैदना और हल्द्वार के प्रति आप्रवाह एक साथ हुआ है। कवितार्थी कविता के एक खास हल्द्वार कवितार्थी कविता के सम्प्लेट का बार-फाश करते हुए अपने हरे-बरे गुदस्ता के पर की आहारांता करते हैं। यह दम-दमदे वातावरण एक प्रतीत के सम्प्लेट की सोची उत्कर्ष है। कविता का कवि ही मनुष्य को मनुष्य रखता है, धर जो गुदस्ता-हो घर और गुदस्ता। कवि ने तुलने कवार्थ का बही अंद उनकी विश्वास पापका में किया है, दुर्दशा हैः

में कहीं कहीं भीड़ में बो गया हूँ
में कहीं कहीं पारस्पर में कहाँ कहाँ गया हूँ
और कहीं इनके रॉशनियों में अन्या रो गया हूँ
और तर तर
कहीं-कहीं लोक्यता है
वह मने तक किया?
मेरा पर,

---------------------------
2. वेस्टन्ड पृष्ठांक: जनक के हल्द्वारे कविता, लेखन, सं 80 विनय गुप्त - ५३.
एक हरा-भरा गुलदस्ता हो सकता था
एक लंगिक की कठी का सकता था
लेकिन उस कुंग में
मैंने चुना वह चुना
किसे चिन्ता रैहै न
मृत्यु है, जिन्हें, ज्यांच सूक्ष्म है ।

नारी मानका था नारी के प्रति दूरस्पर्शीण :
-------------------------------------------------
हमने देखा है कि प्रमुखशील कविता में नारी के प्रति दूरस्पर्शीण में पूर्वोक्त काव्यवाची की अपेक्षा पर्याप्त अन्तर स्पष्ट होता है । पति-पत्नी के सम्बन्ध उसे जो समय मिलता महुआ वह शीघ्र हो जाती है । वह नीचे देखा गया कि विचारित पुरुष का और विचार भर नारी के सम्बन्ध को अपने रक्षा रोशन गुरु श्री-गृहु रण सम्बन्ध में धारण का ज्वार उपर आया । भाटीचारी कविता के अन्तर्गत काव्य उपन्यासों जो नथ-नथ आनशिक जो उनमें फ्रायालव अव्यापत में नारी की खिली दुखी हृदय अन्तर रूपी नहीं हुई । भाषा के मूली पीड़ी के एक अन्याय कविता मधुरराय चौंधरी ने नारी की लक्ष्मी अग्रिम दुखी की । अव्यापत के कुछ कवियों ने नारी को तथ्य ज्ञान किसी नस्ल उपस्थित किये ।

वह विवाह है अव्यापत में निश्चित किरदार और विलास की रात उठायी गयी है वह नारी कैसे है 3 अव्यापत के एक कवि खौफ मोहन पारम्परिक सम्बन्धों को एक फुटदर के भाषा प्रोफाइल चाहते हैं - वाह वह सम्बन्ध फिला और पत्ती का क्या न हो । कविता के नाम पर कविता पर अध्यायाचर कहाँ भी संबंध हुआ तो अव्यापत में विशेष है ।

अंशत के पीछे की सीवन उपाधिक उसने नम व्रत के अपार
विलास चरित्र और झुंड फारे मंगे मुटी वास्ते वह कुछ मंगे
पढ़ने का था कोई भी वात निम्न घात वनुस्पत के लिए ।

-------------------------------------------------
1. अव्यापत कविता के अनुवाद से पू ५६-५६।
2. लाहरी कुक्कुर : नवा काव्य नये पुलिये, पू २५६।
3. वहीं , । पू २६५।
अक्षर से कवियों की कविता-माधुर्य द्वारा प्रकाशित निषेध नारी रचना का एक नयाँ रूप वापस मानता है, अर्थात् कविता के एक नया दृष्टि में नारी की रचना दृष्टि का नया विषय दृष्टि का मिश्रित नारी को दीखता है।

पार और बालिंग और पनीर और प्रिया में अर्थ नये अन्तर

लहरी वचनों के अर्थ की रुप संस्कृति-संपर्क में एक नया रेखा के दायाँ नजर कर दृष्टि मानी की बात नहीं है दुष्टी। वांछित कविता और स्वाभाविक की प्रतिस्पर्धा के अर्थ को नया दृष्टि है उसके उद्देश्य लेने की सम्भावना। पति-चचा-वनियों की संस्कृति तेज विषय के लिए ही नयी रचना करता है?

अन्यत्र से ज्यादा हार्दिक बिनय में नारी बीजन का स्वाभाव प्रकाश दाजु दि का अंतर हो जाता है। अन्यत्र से बुध में पुरुष और नारी का संस्कृति विषय शाय बुध के सिलार है। पुरुष की ओर विषयकर परिचय के प्राव कोर की जुगी हुई रही है। द्वितीय भर धर्म रहा है। उसके दायाँ के अन्यत्र अपरस्पर की दोष में पुरुष है सुवर्ण रहा है। पुरुष के साथ शीत-शुद्ध की ज्वालाओं में वह दूर नहीं जा सकता है। वह प्रम ही उक्ति है कि पुरुष पराक्रम हो रहा है, किन्तु शरीर उन्हीं ही हैं कि हर प्रम की तन्त्र वैदिक गाँव ही गया है और नारी रवाना है जो उन्हीं उनकी वनियों के नेते प्रथा को विश्वास कर गोस्वामी की अनुमति सीखे लगने लगता है। अक्षर तो वह राही नहीं और अपरा न कर लेता। यही उसका हमारा है।.. जो मित नये ज्यादा हम देते हैं। वहाँ की नयी दृष्टि के परिवार है एनमें नारी की का एक प्रत्यक्ष निर्माण वी है जिसमें पुरुष की ही अभिलेख उदास वाला की अवधि है। हार्दिक बिनय का उपभोग उदराम में नारी की संस्कृति का तत्त्व निषेध उदास बात बनाई है।

अन्यत्र की बात यह है कि जित नारी भी प्रयोगिता कविता में भिषज ले।

-------------------------------------------------------------------
1. आधुनिक हिन्दी कविता : लगायत -सादेश चन्द्रेन्द्री- पुस्तक १३५ से उद्धरण
   ऊपरी : तंत्र ज्यादा चन्द्रेन्द्री - हार्दिक गाँव
2. सन्दर्भ : द्वाराधन, हार्दिक बिनय, पृ० ४५
एवं यदि माना गया उन्हीं नारी को अचित्व के लिए नाम मान राहे हैं - मानते हैं। अचित्व के क्रियाओं के उसी कारण का विचार स्वीकार किया है। इस कारण स्वतंत्र 


 virtues का परिणाम नहीं हो सकता। अचित्व के क्रियाओं के ही नहीं कुछ कल्याणकारी 


 virtues ने ही भी सेवा के समय इहां हैं उपरिस्थित करते हैं अपना गरीब मान किया 


 है। चाढ़ोंवाले क्रिया के एक कवि है विशेष वही अलौकिक धरोहरा प्रतिमार्गित होती है, 


 कवि का उन्हीं निश्चय रहना आवश्यक है लाइ यह में रहना कवि के लिए समस्या है। 


 नारी: 


 उपरिस्थित है तब भी समस्या है। अनुपरिस्थित है तब भी समस्या है।


 वहीं कवि पुरुष के लाभने नारी की दयालुता का विश्व मौगपार स्वाति के उपरान्त 


 मानते हैं।


 हरदम यह होता है।


 देश का कार्य कर।


 पुरुष निकल जाता है तोर-त्वा


 धरारहर।


 रह जाता है डूरिया गेबारी 


 नारी।


 पुराने मूल्यों के मात्र अदार वह अस्पष्ट का मजबूत नहीं पड़ते हैं। जैसे कोई अपराधी का क्रम 


 निराश है। जैसे मेरी दूरी के पास न निराश होकर 


 न मेरी आपत्ति अवगाह न की दश्य की 


 पढ़के धवली लगी मादा के।


 1. जेठास वाजपेयी: वांगाना, फू ५६।


 2. वहीं ,, ,, पू ३६।
कमलय वचन विचार
dूध के दांतें की ताह दूसरे गये।
बाहर वह दिगम्बर, काली-सन्तानेवाले में
मा, माँ, माध, साम्प्रदायक, वृत्त-वस
लोगे शहरों की ताह
पीखे बुझाए गये।

एक बार देख जिन्हे के सात मानकर रोकियाँकी चब्ब नारी के देख के वर्ष-विवर्ष
टुकड़े रहे। चन्द्र छोटा की कविता में इसी अंश काफी परिवर्तन हुआ। इसी,
प्रेखण, शायद एवं निर्मित रूप में सबको प्रतिपक्ष था। पूज़ा वह वाह उसी
प्रकार के प्रथम का उभार लेता जो रोचि काश में उन्नतिपत्र-मोहपत्र प्रवीण
हुआ था। बाठीवी रामचंद्र के एक युवा शायद की एक्स्प्रेस की ली लीखिये -

में सख्त पर
गुमरीय हुई
हरेक
रघु के साथ
प्रेम ने की हक्का
लिख हुए
चीजेने मुल्य
की
और
चाहता हुई।

क्रेय उसे चाहे फुक माने यद्य प्रातिनिधि का ही पोल माना जा सकता है।
बाठीवी रामचंद्र की क्रेय सचिनानात्मक में भी ऐसे चित्र निकालता करते हैं जिनमें क्रेय-
पत्र-पत्र पर वासना, मानकता और कृत्याक्ति का एक साथ समावेश होता है। आकाश
यदि वात का है तो महिलाओं ने (कृत्याक्तियों ने) अनिवार्यता नियुक्त की है, वास्तव
में माराठी शिक्षाओं के आदर्श के विचार को प्रतीत होता है।

एक कार्यक्रम विशिष्टता पौर्णिमा कितनी है:

मुख़ होने देने का नजर देना तथा
मैं धन्याकर करती हूँ रात या
वर एक दोनों एक ही कोण में प्रमुख कर
एक सुनारे को।

कुछ की तरह चाहते।

किताब के बाद छिपा रहते हैं क्यों
जानकार बनना बहुत जरूरी है।

पत्र नहीं कि एक विकासवाह के विश्लेषण को उल्लिख रहे हैं कि कैसा कर रहे हैं?

एक सुखबाही की कृत्यक्रम शान्ति-विश्व लिखने वादा का काम-वासना की तकनीकी भी
शिक्षा में व्यक्त करते हैं और निर्देश दी देते हैं:

आज मुख्य में सरल
रात के हृदय से में
एक चार, बड़ा एक चार
अन्य तन की गाय होड़ जाती

मुख़ पर।

वासना को कुछ अनिवार्यता तौलसिद्ध, लिखित के लिए कितना अनुभूत है, कार्यक्रम
वे शीघ्र नी लोचन होता नी लोक किताब गर्वता होता। आधार यात्रा के दौरे
वे प्राप्त होते प्राग्वाहों- सुखबाही देव-पुराण में ही जीवन का तर्कस-सुस पाने हैं अतः

-------लिखित युक्ति : प्राग्वाहों के अधीन के अधीन
2.कार्यक्रम विश्व : समानान्तर सुपूर्ण, पृष्ठ ५२।
3.कार्यक्रम विश्व : समानान्तर सुपूर्ण, पृष्ठ ५४।
कोट-पद्मका ला ल्यात्त ते कहीं नहीं रहते। एक और कवितागी उनकी मान सुनिति को लबाकर वे ती नहीं होते। कविती का (कितना लज्जा रहते हुए) कहते हैं:

पूल रही है पारसौं लताओं की
हवाओं अब बजन हैं।

आजी वाकी और दिलाखियों
आजी मेरे सभी हे संसूँ नै नीचे
उत्सव करें,
नाचें, गाएं
रत की गुलाम पर।

- - -

अल निराकर न करें तनिश की
किन्नु
फेंक आयें
पुलाखि बारसूही ते।

ध्याय में बहुत लगाता नहीं है। नारी तालाब के लिए मुख्य सम्बन्ध में झंग झंग की जाती है तब महिलाओं के द्वारा अपने की सिधांत में एक नागर का मौग-विषय किसानत हादसन की गुलामी हो जाते हैं, तेजस्वी नहीं हर सजना है।

साठौरी कविता के एक और कविता वैना नुराही को रचना तो पुरूष
लकड़ी अंचल कर देने की है। उनके अनुसार शासनों का नर हिंदु है। आन्तरिक के
छुट्टी में कवि जानकार चुपके से कुछ ए और उसी के उड़ना तानिश करते हैं। हास्य में
ती हिंदू विजय है या जुड़ा व्यक्तित्व का अंग रचना होगा यह तो मानों की
बाजारा। भी उत्सव के हर समय हादसन रही चोट यह इस प्रकार है।
विस्तार को जनम देने वाली के रूपार वाहित्व की स्थापीं निकल नहीं हो सकता।

----------------------------------------------------------

1. पुजारक कविता और उल्टका मुख्यांक, पृष्ठ 133-134 से उद्धृत।
(४५५)

बाटोको काव्य के एक स्वस्थ कवि लकिंत हुक्कल ने इसी प्रूस्ति पर प्रशास्त भाष्य हुए दिखाया हैः

शंकितां और काव्याभिव्यः के अर्थ उभय और भुविस्तिविन्यास का परस्पर आरोप अंध सही है तो वे दया के पात्र हैं और नाको हैं तो वे हास्यार्पद हैं।

उनके विरोध एक कविताक मना ऊँच और ही बौढ़े हैं जो दृष्टिको न हैः

वह विषम विचाल है

गुलक एक भूमिलुग

क्षति है सहारता है।

और पुरुष प्रिया का नारी के लिए सन्दर्भ अंद रहाः

पूरणत रणण कौरत नारी

परदी की कटरी, चैतन्य हैः

वा-विचार हारिका फलरको युगे-युगे।

.. मी तो मात्र अफरा हुं

ही तो मात्र अफरा हुं।

इस काव्यावच्छ की कुछ रचनाएँ और प्रूस्तियाः

-----------------------------

बाटोको कविता की प्रूस्ति सुधा विज्ञानिकाओं के दर्शन के साथ-साथ, उनसे निर्माणित मानव-नृत्यों की सम्पूर्ण चर्चा करते है जो इस काव्यावच्छ में दीखा वाले कुछ प्राकृतिक एवं बुद्धि पुरातन आदिवासी, प्राकृतिक एवं वैयक्तिक काव्यावच्छ के कवि कों की स्तवारियों के विषय में विचार करते हों अभावविनिक नहीं होगा। इस काव्यावच्छ में रचना करने वाले प्राकृतिक लोग काला, बुद्धिवाह, सुमाला, अल्प लहान, हुर नारायण, दरिद्र मेलता, विज्ञानी नारायण बाहार, अद्वितीय, राज-बादी, प्राकृतिक एवं वैयक्तिक काव्यावच्छ के कवि कों में विचारवादगत गुप्तजी, पेतीकी,

-----------------------------

1. संलिपिक वेबसाइट : दम्पति कव्य - २०६५
2. क. द. रामचंद्र : सिक्की, पृष्ठ ११।
3. राजीव सन्तरिक : (मुखब्रिज लहल: नये कविता शरीर) जिन्हें निर्देशन तथा अन्य कवितार्क पृष्ठ ७५

उपलब्ध संस्करण के पृष्ठ १२४ में व्याख्या
राजनीति का निर्माणर्क रचनाओं के एक अनुगमी कविता के लेख में यहां परिपार्श्व निर्माणमात्राएं एक वायू-सहीतिकी नाटकों में विकल्पी बारे में विभाग का गुलाम न्यायभाषा नाटक का और वह निर्माणमात्राएं निर्माणमात्राएं। उन्नयन के पार बारे में अवार्थ-नन्दुकारे काव्यविश्वास के अवार्थ के निषेध में यह फिर एक अन्य स्थानिक अनुभव का कविता के लेख में विद्यमान अध्ययन के लीला संक्षेपित वर्णन की बात वर्णण करते हैं।

अवार्थ के अवार्थ व्यवहारों के अलग-अलग रचनाओं में एक अनुगमी कविता के लेख में यहां परिपार्श्व निर्माणमात्राएं एक वायू-सहीतिकी नाटकों में विकल्पी बारे में विभाग का गुलाम न्यायभाषा नाटक का और वह निर्माणमात्राएं निर्माणमात्राएं। उन्नयन के पार बारे में अवार्थ-नन्दुकारे काव्यविश्वास के अवार्थ के निषेध में यह फिर एक अन्य स्थानिक अनुभव का कविता के लेख में विद्यमान अध्ययन के लीला संक्षेपित वर्णन की बात वर्णण करते हैं।

विक्रम के लाभ पुराने से एक कविता का लाभ-अन्नमोल रचनाओं में एक नव।

----------------------------------------------------------

४. अवार्थ नन्दुकारे काव्यविश्वास: नव कविता, पृ. ११७

कविता - २०५ शिक्षुभारि फित्र।
अथाय जीतना है उलझा स्मारण फिर किना नहीं रह लगा। राष्ट्रीय संस्कृति श्रीरामचर्य गुप्त की प्रकृति बुद्धि, जब गाड़ा, निवास के काव्य गुण दुर्लभ हो और उत्तम, फलके के के काव्य-गुण-सम्बन्ध और सौंधकर्म, १५० कलम की नयी बुद्धि बोल जाती है।

विकसितगतिये सुनने श्रद्धालु बदला हो गया और निर्देश भरा के स्वयंत्र नियत नाटक नामक काव्य गुण की शाहिर्षा की में समृद्धि प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय और वार्षिक श्रीमती के पवित्र कालाघड़ियों में प्रस्तुत उदाहरण नीति और विचार की सूचना दानी है। अग्रेन्तें जो भी सामने आता है उसे और से उत्तम है। उंगरे शरण, अपनी अन्तः-प्रशिक्षण और जरूरत की प्रकृति में प्रशिक्षण करने के उद्देश्य से, श्रीमत-सम्बन्धी अपनी अन्तःप्रशिक्षण भी का बालक - वह अपना, अपने रथ तो, लागूता कल्पना और सौंधकर्म करता जाते। ३ मुख्यजीव के समय में वह लखना स्पष्ट है। अन्तःप्रशिक्षण युग के एक अपनी कार्य के रूप में अवैश्विक या स्वीकार हो जा ही चुका है। यह चाहत (६०) के बाद है इसके काव्य-संग्रह आगम के पार दर्शन एवं हृदये तथा तथ्यात्मकी कविता का चाल शिकार के दिलीत में शिकार कर रहे में प्राचीन अनुमूल्य का संपादक दीक्षा है। अन्य में आचार तक बौद्ध धर्म, शिशुदेवी, शिक्षकी और विद्वानों दी कवि का चाल, आगमके पार दर्शन में कुछ नया त रहस्यवाद के उद्घ ( निष्कर्ष ) में पौरं भेदित हो चुका है। ऐसा प्रशिक्षण होता है किन्तु जैसे का काव्य अन्तःप्रशिक्षण एक विशिष्ट प्रशासन के पारस्परिक पास्तਰा है। अतः उसके उनके अन्तर में एक प्रशिक्षण युक्त समाप्त हो चुका है और दुरारे प्रशिक्षण युक्त की अनुमूल्य तो है तैयार यह अनुमूल्य अग्रेन्त का रथ से परिपक्व अनुमूल्य का अंतः न लक्ष करके इतिहास की अवस्था कर पाया है। ३ वस्तुतः अवैश्विक अपनी ऊपर के तत्कालीन है ऐसा उनकी रचनाओं में प्रशिक्षण होता है। परन्तु उदाहरण का वह मूल चौथा व उत्साह लाभकर्म के (हवु) पाठकों को नहीं होता। एक आवास की युग - अद्वैत-की ग्राम होती है। अवैश्विक के एक काव्य लंबे बौद्ध और अनुमूल्य प्रातिकोण में अन्तःप्रशिक्षण रहस्य की अनुमूल्य का प्रवह पिलाता है। इतनी एक अक्षर रचना-लाभ विषय से वेशसिद्धी नामसे बिंदी बारे में अवैश्विक अवैश्विक

---------------------------------------------

१. गणेश माध्य गुप्तकुञ्ज: कविताशिक्षा दायरी, पृ १४०-१६१।
२. अन्तःप्रशिक्षण कविता कविताका संसार कविताशिक्षा चारण, कविताशिक्षा वांग: आगमके पार दर्शन, पृ ५६।
३. शहन ४५२ व ऊपर तैयारित.
प्रमाणीक रचनाओं में प्रेमी राह, विवेक वाराणासी राही
वार सवेयसी रचनाओं में नीति के दौलतप लिख कर लिख, निगमित के लिख के सिंह स्वरूप पूरी नागर में उठा है।
तारी वार सरल रूप से वांस्थिकताओं में महत्त्वपूर्ण धार्मिक भाषाओं में परस्त कोसिनिता की है। रीतियों पर दूसरे के आलोचना के निवेदन के रूप में संयोगों में सहायता दी जाती है। इस रूपसे वार से प्रसिद्ध। अन्य रचनाओं के समान आलोचनावांक के रूप में सहायता की जाती है। पुरबारी अपना रचनावांक में पूरी राह से वाही अनिवार्य करके सही 'प्रक्रिया तकरीर जुगा है। प्रक्रियाओं के वारा प्रक्रिया विशेषता करते हैं। वार वश्वास दी जाती है। वारा विशेषता के कारण अपनी पुरबारी अनिवार्य अन्य रचनावांक के तथा पुरबारी के तारा प्रकट हुआ है। किसी का यह कम गजल से जनता नहीं होते हैं। वाह से सभी वाही नहीं होते हैं। वाही प्राप्त बना है। पुरबारी की की कोरे पर जनता को अपनी वाही करने में कहीं कहीं कहीं अपने सकार के समाधान के से बनाना हो सकता है। कारण के बाद वाही पुरबारी को पुरबारी के अनिवार्य अनिवार्य करके जुगा है। कारण के बाद है कि वाही प्रक्रिया नागर अपने लाभदायकों को पुरवारी, उनका लाभदायक करे। जाना है, तो अपनी प्रक्रिया वार बनाए। जीवन भर प्रक्रिया में प्रेरणा करे।
विचर महाभारत लघु में दर्शन के लिए सत्य अनुभव की प्राप्ति है गुरु रहे हैं। परन्तु
महाभारत अपने इस प्रकार की रचनावाद की अनुगुणित में निकली स्थिति है, अतः नहीं।
इस ग्रन्थी प्रकार की दार्शनिक अभिव्यक्ति कुलकृती होनें है उन ज्ञाताओं के हस शिष्य
दो अभिव्यक्ति बताते हैं। गार्हस्त्री कवियों के हस शिष्येश काव्य-द्वार द्वारा उनके शिष्य
पुस्तक में हुआ है, वहाँ निरीक्षण-परीक्षण में उनका दो पहल है।‘होकायलते’
के कवि अरुणेदी हायायवादी कवि रहे हैं, पंकजी ने इस महाभारत में (साठीवर रचना के
सम्म में ) उपन्यासात्त्वा बनाया निम्ना है। स्वर्गस्थ ग्रन्थी के बाद निम्नवत, भक्तप्रेय
महाभारत द्वारा निम्न आदि का उलटक कर मुख्य की रचना-पिपासा, वहाँ उलटत
निम्न निम्न, है। परन्तु कवि ने हस्ये-उद्देश्य चंदर राष्ट्रीय लैबल से आधिक मानवीय
वैदिक और मानवक वैदिक से उच्च देखने वैदिक की और विलोकन है। अरुणेदी कवि
जान स्नातकोत्तर निम्नात्त्वा है वह लगभग विश्वास-दृष्टि में कुलकृत आत्म-सत्य में की प्राप्ति है।
पंकजी की प्राप्ति एवं प्रकार के प्राप्ति अनुभव दैवत की पुस्तक के लिए भािक्तात्त्वा और
आत्म-सत्य-दृष्टि में वास्तविक वास्तवों है, परन्तु उसका यह निम्नवत-वाचन जीवन की सफलता
अनुभवों की चासन में भाग हुआ जो हराए पूरा, जहाँ प्रामाण्य कहीं बन पाया है।
स्वर्गस्थ विद्वान से हस्ये वैदिक दैवत का उलटक कर मुख्य की अनुगुणित में वास्तविक वास्तवों के
निम्न निम्न निम्न दैवत की अनुगुणित में वास्तविक वास्तवों के कारण एवं अनुबंध रचना कहीं है। फिर
के निम्न निम्न दैवत के दर्शन में अद्वैत होते हैं। दैवत ने अपनी पुस्तकात्त्वा में कहा है, "उसके"
का शुद्ध विश्व शास्त्र या वेदान्त है- वह राष्ट्रीय और मानवविद्वान द्वारा जीवन के भौतिक
प्रथा की व्यक्ति कहता है। नाट्यों दुर्लभत में पुस्तक निम्नात्त्वा में शास्त्र का पहल
वर्णि अर्थ वे जडियों हो बताया गया है दैवत ने वहीं -"अरुणेदी कवि' ताल्य-दृष्टि
ही हैं होकायलते, साधन दृष्टि के लघु में उसकी शास्त्र में प्राप्ति कहीं ही होकायलते। जीवन
cारण दृष्टि हमेशा अनुभव है हस्ये प्राप्ति ही तो शास्त्र की विश्वासी होती है। 'दैव
निम्नात्त्वा' दैवत कवियों की निम्नात्त्वा कहीं है। हस्ये हमेशा अनुभव है ज्ञान करने वाली
मानव विश्वासम है। यहाँ दैवत के प्रतिनिधि जीवन के सभी व्याकरण वैदिक से हटता है हमेशा
दैवत कवियों की व्यक्ति कवियों के अनुभव

---
1. आधुनिक हिंदी कविया : संग्रह आदिवर्त चुलियों , दाता रामदरश निम्न : होला-
यल : पूरा १५ , सुभाष्यानन्द भाग ।
(५५४)

के बुद्ध में जीवन के प्रति दूर आत्मा का परिवर्तन है, जीवन के प्रति अनुभव का भाव उत्तम नहीं करने देती जो हर यहाँ विश्वास है। शिक्षा नन्ने नन्ने के विश्वास बनाया है जब वे काय्य-संबंध की विकास के मौके परंतु-संल्ह का परि-तथा है। प्रमाणिक विकास तथा इस नियम रक्षक विषय के प्रति श्रेष्ठ उदाहरण अर्हति है जिसमें हमारे अभिमान नायक का नहीं, निराकरण का और रक्षालक्ष्य है। कवि का कविता से नियुक्त नहीं परन्तु वह वरिष्ठ से पिक्र या रक्षा का यह अपनाया जा सकता है। कवि का अपनाया दुर्गतवा घाटे को कविता के प्रारंभ में मनुष्य के मनबन्ध से नहीं निराकरणः यह पूरा आत्मा को मथुरा सबका कही नहीं है।

'नरेन्द्र स्मार' की नीनालम कृति प्रवर्तक निम्नप्रस्तर का प्रणाम सन् १९६४ में हुआ है। कवि नरेन्द्र स्मार ने यह काव्य-संग्रह में वर्ण, विश्व-बन्धुत्व और तम आदि मुख्यी की महिमा गायी है। कवि की यह सर्दीय रचनाएं में नैसर्गिक मूल्य और कवि का स्वाभाविक व्यक्ति को मजबूत विनिकार बनाया गया है। विन्दु-संदर्भ, आधुनिक तथा दासतन्त्र रचनाओं के समाहित यह काय्य संग्रह में आरम्भिक का बोध नहीं होता है। इतिहास का यह काय्य संग्रह पारंगतिक कविता की श्रैणी का ही काय्य संग्रह है।

इस काव्यलिखित की प्रकाशित अन्य रचनाओं में - कविता में चिन्हित मानव-गुण्यः

देश - प्रेमः

चौं ६१ के बाद देश पर चाँद और समान-सम पाकिस्तान का आक्रण हुआ उन आक्रमणों ने भारतीय स्वायत्तता की प्रारंभिक का परिक्रमा १५ वर्षों में यह संकट उपस्थित किया। जंग के लिए दो० ही जाने की पराक्रम नीति ने हमें तरारार देश-प्रेम से पर दिया। चाँद के आक्रण की प्रतिक्रिया कविता में दृष्टि भारत की महिमा का गान करते वाले प्रेम-वर्तक हैं विवेका तिवारी ने उद्देश्य पूरा किया, लिखित सिंह गुप्ते।

१. आधुनिक हिंदी कविता : संग्रहक, वर्धित चंद्रकेश, हरि प्रमाणक वर्धितः

'विश्वास बनता ही गया' ने लेख है उद्देश्य पूरा किया, लिखित सिंह गुप्ते.
(४५४)

भटना ही तो। उन कवियों के कণ्ठ है देश को धारण करने का स्वर उठा और अपनी प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा पुत्र स्पर्शित करने की प्राथमिक नी। पारम्परिक कविता के कवियों का स्वर मो कह प्रातिष्ठा में प्रुट पिक क्लासिक नक्स के है।

पार्सावारी का अव्वल अंकर पर श्रुत के बाँधे वात बनार बरा लोगा अवरक्ष ला है।
1 माँ पर जाये नूनें में सुन। का स्वर प्रकार ही यह उचित ही था। कवि का स्वर ऐसे अव्वल पर श्रुत को जिनकी नूनें हुआ प्रुट निकले अवस्थ की जात नहीं थी।

बेसे --

पाता का यह लाल, श्रुत का लाल नीला
सीमाओं के अन्त, अनंत दिखलाया नीला अनंत तेजा रितु से अपसारित भारत का
हुआ धमाल निकट भारत का काल नवीन। ३

देश ग्रेम की प्रेमना एक दूसरे का स्वर पर प्रकार दुख की। देश की दोहीयाता एवं प्रादेशिकता
की जोनीय पारता ने कवि-मत की हुई जोनी का दिया। राष्ट्र के प्रति प्रकार ग्रेम की
दोहीया को स्वीकार कर सकता नहीं। एक ऐसे लव्र की अनुपूर्ति इस कवितार्थ में ठीक
प्रकार दुख की है:

स्थापित नहीं होने का काम
अब ताजपारता की प्रतिष्ठा मदरास में?
पिवार्य नहीं पहली बलाकर में चलमूर्ति?

........

कितना नहीं निकली पुना हे बाहर?
कुड़ी राम बाबा, मनमातिएं, चन्द्रिकार आवाज (आवाज)
पार्श्वी स्वाम नहीं, पारंपर लगा रहा में २३

--------------------------------------------------
1. आधुनिक हिन्दी कविता : यंद जमीदर चतुर्वेदी , डॉ. महेन्द्र नदनागर के लेख कवि
नरेन्द्र का अन्त 'प्रातिष्ठा' निकले रे से पृ ५१.
2. आधुनिक हिन्दी कविता : यंद जमीदर चतुर्वेदी , डॉ. पीरैंड्र नदनागर, प्रातिष्ठा
प्रवार्य आगें : नागाजून , पृ ५१.
वन्दे राष्ट्र! प्रेम है (पालिका) अभिवृद्धि जीवन का मन, राष्ट्र के नाम पर होने वाले दानिक अभियांत्रिकों हैं दुर हट जाता है। धर्मशास्त्रीय धर्मगुरुओं के बाद भी राष्ट्रीयता की विवेकादि, वुड-वुड है तुम नीति वशन के मीठे गुलाबरों के पिंछा लूधा है सख्ती है?

जन-जन-जन अभियाक्त की रिहायत में कोई दुन्सर न आने पर कवि प्रलय कर केला है -

राष्ट्रीयत में माता कौन वह भारत मार्ग खुशाना
फुटा घुमना पत्नी खेलना
गुन धारता गाता है
... 
पुराण परिवर्तन है आते हैं
ननी-बूढी नर-केराल
लिंगायत पर खेलाए, उनके
क्रमते कौन जाता है?

cव का प्रलय कुतोरा घटता है -
कौन-लान है वह जन-जन-जन
व अभियान वह महाकाव्य।

महाकाव्य कौन, शिक्षालर्थ पर खिलाने वाला कि भिजने वाला? कवि वाचन में सिद्धान्त-पीरू की स्विदित गाने की अपेक्षा जन-जन-जन अभियान करता जनरल की स्विदित

से आई केन्द्र ज्यान जिम्बे खिला रह सख्ता नहीं।

अन्तरांश्रीमता :

यदू ६० के बाद प्रारम्भिक प्रारम्भिक अन्य रचनाओं में भी इस गुप्ता का धारा ही होता है। विश्व-विकास और वह-विश्व भव स्थान पर भाषा के अभ्यास भूत

के बृहत और ही दृष्टिकोण होता है। गूँँफ्टीबी भंग कवि शिश्व की आश्चर्य परिस्थिति

------------------------

6. रघुनाथ वराहाय: शाल्मलय के विलोग, पृष्ठ ५२।
के ग्राउं, उसके साथा करार के ग्राउं ग्राउंकारता करोर करते हुए उसे एक जीर्ण सन्ध्य के रूप में स्वाक्षर कर देते हैं। मुक्तिकौश लिखते हैं।

सत्स के जमाने
रचना को बाहरते हैं प्रस्थापित करता।
अधि ठों, लग्न के जमाने।
मैने जीवित एकाध ताल देने विश की।
अन्न ज्ञान मुख्य भी हरीश्वर......
अंतर में आयत दूं...

के घरे घर हैं -
बांधे रत्ना चाहते हैं बड़े-बड़े नाले।।
जोहर प्लांट हैं वे वायरल।।
झून अभागा यह।।

रचना-प्रियापु नकाशाप्रथा अपनी तलाशों में एक का विकाश हैं और युवा के नज़े में बुरे
पदार्थियों भाषा का एक पत्रिका शाखों के समाचार वहां है जाता है। जलक की
विविधताओं के लिए शान्ति के, मैं के केंद्र और वह अस्तित्व भी केंद्र ? अवधार
दोनों वाक्तावाल की पापा की अपनायी है, दैकिके -

कि में जब पदार्थ भूतक पढ़
पुरातनी रचना-विकाशी भवानीता
किये जाता।
कि हालने में, कहाँ ते चार आवाज़
किस्मता रोटिया, तड़के,
और रैडियो के गुलाब घने से पहुंचते
जानुम्री तक भी भुजड़ाहारः।।
व उनकी कीच में हो।
ताल है, मोड़े के तम्ब,।।

1. मुक्तिकौश चाचे का पुढ़े ठेखा है, पृ. 67.
लठाने कि किसने कैसे रैटा बना । ॥ ६ ॥

पुनःश्रूिमण की सुरमण अयोग सिद्धिवतन भले चाहिए के कारण ही नहीं हैं बुध की बस्त मस्त मस्तालार

भी प्रकट कर देती हैं । तुषार वहाद नारी वह धरी सह जलया काण नार ने कही भावानुषारी और वचनाना हें साधु शिष्यत का ताजुद हिरण करते हैं । वायुमी की भोजी, जलयोग

और शारीरिक अंग के निख गठनकर अंग राजुस भोजी की दासीका नीति की

पौल बोल देते हैं । कवि की सुर्यबाला का भारण स्पष्ट बात हो हृदा है । रघुवीर

वहाद ने लिखा है:


dीद के ने घात अता के

जो शुभ हुए हैं, शुभ हुए हैं, भिन्न भिन्न हुए हैं

लिखा है शीश बैठे हैं, शीश बैठे हैं

लणी शुभ हुए हैं। ॥


dन कविताओं के कार्य कविता की दृष्टि की तैहर अन्तरांशन धराकर पर अधिक

का आलापन करने वाले रचन के आलाप-विचार की कुछ परिचयां नहीं देके तो

अवस्था का निवास नहीं होगा ! ऐसी रचन महत्वपूर्ण है:


dे दुरी राहम मैरी आलम के लागू-बागू हैं

भी शिक्षा की सत्रों के फिरकें को अन्यों के दिशाओं के विन लौट दिया।

और इसी नादप और अमृतप डी की नर्म धारी की पृथ-प्रांव वर्ष

तेही झंडे-झंडे गाव रहा हुई

जब संस्कृतक तेरे वरम के स्मारक हैं

नाकों में हुआ की हस्ति दुल सातिन का राग हुई

हुआ आदि, भूरु अनिव। ॥


$\text{कविताको} : \text{चाद तथा चुमे डेड} \text{, पूर १२५६}.

$\text{रघुवीर वहाद - वीज्ञानों पर पूर में} \text{, पूर १५०}.

$\text{भक्तर बहादुर खिस} : \text{कुच और कवितार, पूर १२१}.$
(४५४)

काल्य काल की विराटता को भूले वालों दे पतंगयां तथ समूह अन्तराष्ट्रीयता के 
पूर्ण की परिपात है।

नैविक मूल्य :

छात्रावर्ग कविता के साथ उस आलोचना में किया गया रखताओं के 
अन्वय भी नैविक मूल्य है एक में मानचित्र लेखक ने परंपरा को स्वस्थ करने का हर 
बल प्रकाश दिखा है। वह किया गया स्थान में लेखकों का बालक या वड़ा की 
स्थान में अपने को स्वस्थ रखने वह नैविक निष्कर्षों के जह बनाना में अपने को बन्दी 
खाना नहीं बालाता है। मानचित्र लेखक देश नर-माता जीवन की इसके लिए जीवन 
रखा है, पाप-पुण्य की गुणावस्थाओं के बीच रही हुई मय की मात्रा उसे जीवन 
जीने की मूल मात्रा है। उसे वह भी जीवन ही लगाता है। नैविक का वस्तुतः 
एक स्थिति को ठीक उठाएगा कहता है। क्योंकि --

हर एकान्त कर पर निर्भर करें 
पूरा की रोम रोम नियते में, 
हर दृढ़त के प्रति उद्यान में 
एक बूढ़े हो बुधवारों से पर दे 
और -और के गर्मी- 
पाप वह है, 
कोई अन्दर नन के सिया जाता है 
और हर आचरण के बाहर के साथ 
निर्देशक मुड़ जाते हैं, 
व्यापक भी चुना है, 
उस निदिया नहीं खुलांकर।

कविता में कहीं-कहीं ऊंचाई जिम्मे-जिम्मे प्रदर्शन करते हैं वहा नैविक ने लाये

-------------------------------------------------------------------------------------------------

२. कविताओं - २ - सर्वेश्वर दयाल ललिता , भौ १५४-२०.
नहीं जाने की स्थिति रहते हैं। मुखिलोप की प्रक्रिया नविनता चाचन का सुना है। में चाचनी राज है दूरदर्श का चरम किस्म प्रस्तुत हुआ है। इसे

श्लोकों की निर्देशन कार्यक्रम के रूपीय

वृत्त प्राप्त में

की की चाचनी

कुपोष अभिरूचि पंजीकरण गुण्डों की

की की

नंगी की चाचनी के

उगरे हुए अंगों के

विभिन्न पौधों में लेने थी चाचनी

अंग्रेजी

अंग्रेजी वी, अंग्रेजी वी कारणों में,

की की चाचनी।

उपर्युक्त परिवर्तनों में गुरुगुरा उल्लम्बन नहीं होती, दुनिया का निवासी अपर्युक्त हो, अंग्रेजी की प्रवाह का उल्लम्बन न हो पते रचनाओं में कच्चे नविनता का निवास करता है। नविनता की वीं की रास्ता का उपर्युक्त है जिसे स्त्रील लों वी नहीं लाना। वी की रास्ता होते हुए है सुन्दर पुस्तक का आर्थिक यथार्थ मानक को प्राप्त होता है जो नविनता एवं उद्धरण चुराने का निवास एक साथ होता है। बाबतम लोगी है सुन्दर विचार-विचार करते हुए भी काच नविनता है दूर नहीं जाता - अन्तिक नहीं है। उत्तम है।

वीकन के प्रति आर्थिक:

---------------------

वीकन कन्नूर ज्या है, कन्नूर ज्या है। वीकन का अर्थ है कर्मरत हसन, अर्थ है नसीहत रहना। वीकन के प्रकार वीकन का अर्थ में स्वीकार नहीं है। संस्कृत ६०

---------------------

२. मुखिलोप: चाचन का पुढे ठेढ़ा है, पृ. ३१-३१।
के बाद के जीवन में जब जिवंत में घुटन, निराशा का अवशास होता है, निराशन फलन और तंगारी ही दोलता है, वह जीवन के प्रति-पृथ्वी के प्रति आस्था को पूरा करना जीवन जीवन की स्वायत्तता का गरीब आयु ग़ूँदा है। इसलिए कवि प्रत्याशा को माँग देता है, चुप का अविचरण वादना है और शील की प्रतिष्ठा स्थापित करने की कामना करता है। कवि कहता है:

औं सम्पात दिवं लॉली;
समं आरामीणां
एमाहरी सपनाओं को ऊतों का शील दो
एमाहरी मूत के लोमों को धूनु करो
पुष्पानिष्टत करो।

पर्व की प्रतिष्ठा के द्वारा जीवन की लक्ष्य में परिवर्तित करने की वह लाभ गिसिया जुलता है।

एक और कविता का दोहराव आधे उद्देश्य किये कवि दोस्त रह सकते, जीवन के स्वागत के लिए कवि की कामना स्पष्टतारोगी है, तब--

भई जो कुछ किया
ठीक किया
जो कुछ कर रहा हूँ
ठीक कर रहा हूँ
जो कुछ करो, ठीक करो।
अन्ये देव मेरी आश्चर्य
कहनी होती नहीं हैं
कि वह देवता के प्रति करो पूजा कर को
अन्य प्रहारकर्मों दे पार देश धरे।

8. श्री उद्देश्यकुमार विश्वम्बर: नवी कविता के प्रमुख द्वारा विश्वम्बर, नवी नैसर्गिक नीति न उद्देश्य के, पुं 1984 से उद्देश्य
9. विश्वम्बर मानव: नवी कविता के विश्वम्बर पुं 1983 द्वारा द्वारा संस्कृत
“पूरे नहीं रंग बोलते हैं” के कवि केदारनाथ अग्रवाल गहरी जीवन-आस्वाद के कवि हैं।
“जीवन” नामक पदार्थ से गहराई से क्रम करते वाले हस कवि ने, अपनी कुछ अवधारणाओं में हुई चिन्तक स्तर पर हंगाम को जैसे जूंपिया पाये हैं। केदार की कविता में है एक वर्तमान बिंदु पर फूलद लेने का प्रयास करते हैं:

पूरा नहीं, वह खेता उत्साह पर लगा, रातियाँ मंगान।

और बहा रौस महान-सा चौकी भरता नहीं

धूप की चादर फिरत तो गयीं,

केदार की बुझा विरिया

पीढ़ में नी सो नहीं,

के तेरे पीछे बुझा गये अब रात लेंगे दिन बाहेर।

केदार ये थे जो अपनी देखके लोग,

रात है यह रात

अब भी रात, और कुछ नहीं है बात।

केदार की कविता में है एक वितरण व्याख्या है:

कैदें  — नहीं

पनाह कह फुरे नहीं

9. आयुष्मानिक शिक्षा कार्यकळ: संबंधित: जानिए बच्चों की, फूल नहीं रंग जोलते हैं:

केदारनाथ अग्रवाल, पृष्ठ २०=२१ के उद्देश्य।
जो अपने आप उगा
मुक्कराया
और फर रहा
हृदय एक रंग को अमृत बंध ले पर गया।
प्यार तो वह रात है
जो गद्दे में गिरा रहा मिला है। १

अग्नि कवि के रूप के अनुच्छेद संशोधन के नाम के लिए प्रेम की ग्रामिक संपत्ति है। वो कितनी अन्य कवि ने जीवन का पूरा ध्वनि भाषा ही है ऐसा मानकर त्याग से प्रश्न करते हुए बताते हैं:

पंतार देख ने पीठ जाब कोंट
अर अंजीरी आता है ही नहीं
मरने के साथ जब एक हुए शेष होता हैः
तो फिर हे त्यागने बोलोः
जब तक यह तल-मन झूला है, स्वरूप है न मिलित मांग कहः?
आदित्य किशोर सुन्दर में निजीत आहै नाही की नयों में चारों फार-फार आतपाल रहः?

४ वर श्रीम वाक्य के रूप में केन्द्र विन्दु बनकर उपर आता है।

श्रीम की अनुमति का जन्म चित्रण शिवाय सहाय की प्रेम -कविताओं में स्त्रादित है। सुशासन का गुण फिर वे कविताएँ अपने वैश्विक के लिए उन्हीं बने हैं। संवेदन के लाभ कहानी की फासक मो इनमें रोल पड़ती है। इसका यही सातार चरण पाठियों में मिल जाता हैः

------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

१. लालौन्यास: अप्रैल १६८७ , मात्र नृपाण्य अवसान की कविता है
२. विश्वम्भर मानव: नवी कविता : नवी कवि पृष्ठ २२५-२५६ से
कीरति कुमार कृष्ण की कविता से उद्धृत एक ओरः
भीतर यहां
भीतर नहीं है
एक लाख दरह का चामड़ा है
और न तु नौरी है
बू
एक
कुनार है झलकाबी हुई
काटे
तिरुण तेरे शेष हैं।

यहां ध्यायकों के स्थाने चामड़ा है और लावण्य के स्थान पर हुनार है।
उपयोग ने आधिक आलंपोटा का हो जाता है। धीरे-धीरे क्षणों में सौजन्य का धीरे-धीरे
कार्य ने झलकाबी हुई से हामि और करणार का परिवर्तन बढ़ा होता है।
वैसे ही --

कह रंग होता है नीला
और एक यह जो तेरी देह पर नीला होता है
सभी तरह छाया भी छाया नहीं है
बल्कि एक तरीक़ा के रंग पर एक रंग
तब तक कौं से रंग कौं से रंग नहीं हैं
किसी तेरी कौनों की रोशनी है
और कौं से एक रंग जो तेरी देह पर पड़ा हुआ है।

अन्नदान पृथ्वी में भ्यानित होता नायक कवि की कविता-जर्नल के प्रति गहरी निश्चय का
परिलक्षण है।

----------------------------------------
1. सुपुर्वर चक्रान्ति: आलमगिरी के विहार, पु. ४५.
2. यही, पु. ४६।
मानवता की महिमा : 

मनुष्य का मूल्य सन् 60 के बाद महत्वपूर्ण हो जुड़ा है, परन्तु उन्होंने तत्कालीक ही वहाँ के दौर के कारण कवियों के सामने मानवता, नृत्य एवं महत्व संबंधी प्रश्न उठाये हैं :

वो वैच रहा वर्ण मानव के
वह सुवली का का जाग करी ,
वर्ण मारी-भारी फिरती है
मन को यह गहरी खजताता ,
हुँर वो कोई ने जापी वायर्स
वह बुढ़ी पालवमा जोकब करी ,
निमानुश्च हुए वर्ण कुछ कुछ
सुवली का के
वर्ण मानव-सुलझ लगता
अङ्कांतराओं के बराबर
वर्ण दूःख हुए वटचाहर के ,
मानव-मानवों के गुम्ब में आव यहाँ
उलटे खटे विचारक गपपी
पांडों के ।
वर्ण स्वाधी- शुगा कुछा के
ब्रह्म जोख में
हैं पादु गाने वे तलय
pुराते पांडों के ।

मानव के प्रति प्रश्नी-नाव-की अंतिम एक जन्म कविता में मार्मिक रीति से व्यक्त हुई है। मानव सन् 60 के प्रति कवि वृत्ताता -तपान करते हुए कुछ प्रश्ने त्वक्ता का अनुभव करते हैं। चाथ कहते हैं :

--------------------------------------------------

1. मुकदमारंभ : चाथ का चुंब टेंड़ा है , पृ 86-80
उन्हें नहीं तो किसे और। ने दूः अपने को
(जो था मैं हूँ?)?
लुम जिसके लोट्रा है
मेरे हर मुख चपल बनाने को -
खिलने खेलने
मुखे धरण नहीं है
बाग-बागफर
कहने को
...
लुम, आँ एक, निंधंग, अलि,
मानव,
लुमी - मेरे मारे को।

एक वाह की चाद के बाह की इन लघितों में निरंतर रूप से प्रतीत होती है कि मानववेद मारव की चुड़ा है लिए या उसकी महत्ता क्षारापित करने की कांव प्रवत्तीत है। मानववेद मारव के विस्तार अनावश्यकता के उतरे के धारणे कवियों का आकोस पूर्ण शांतिरात्रि हो गुड हुआ है। जंगल की चाली चोरों होने पर सभी के मारव
दिना आना फौर मुख नहीं है। आत्मन्वथी के कविन में नायकता के द्वारा वह दीवा
कहलाता है:

यह खाम वर्ण नहीं- वर्ण शामिल का प्रस्तुत है।
अम्ल, घृ, गह, ग्वारे, म्होऽ.
शाश्व द्वार निरक्त में हर जवाल बापन है।
किस्में मनुष्य नहीं-अदृश्य का धान्य है।  

-----------------------------------------------
1. औषध: फिली नावों में फिली चार, पृ. 62.
2. लुकार नाटारायण: आत्मन्वथी, पृ. 90.
मनुष्य के लिए यह दुनिया में कौन चीज़ अस्तम्य है, समुद्र की रेत-में एक ओर बड़ी जाती है, पृथ्वी पर की दे चीज़ें सदैव हैं फिर की शैव मनुष्य करते हैं कि कहीं मुझे लौट गया है। नीले पुरा ज्ञान में मूल को तुम्हारी आज़ादी वर्तमान है फिर की मौल मुझे लौट लौट गया है जो अच्छा लेने रहा है। राज नीति हो विदेशीयों ने मानव-निवास की वीण्यालय शे प्रभावित किया है, इसने विजयत्वमें पर कराये जाते हैं इस कार्य ज्योतिः की आन्तरिका -स्वाधीनता कानों को उद्धव प्रवर्तकीति है। जब राज्यों को कहते हैं हाल का विशेष व्यवस्था हमें प्रभावित करता है। कविकी कहानियों में महाकाव्य मानवीयता -अ-मानवीयता के लायने कुछ घरेलू उपर आया है।

किलता आशाने पागल हो जाना
और की जव उस पर द्रायम निर्णय है ६।

........

किलता आशाने नाम किला देना
मरते मनुष्य के बारे में देखा से क्या कहीं मरते मनुष्य का २।

........

दूर
राज्यों वे कोई कहते दौड़ पहला वाद होतिहोता है
एक फाटा फटा एक किलती चौकी एक तालामेने
दौरों, जान मिट्टी, और बीस बस्त का वरेन
दौरों पाले हैं जानते हैं, वैसे की गईं हुई चुड़िया
नैशंक नुं के अखिरों को मुख्यालय की एक बड़ी देन। ३।

--------------------------------------------------------

१. रुपरेखा सहायः आलमचाके विलादः  पृ २४।
२. बही  "  पृ २६।
३. बही  "  पृ २४।
उपशुद्धिक कविता की पृष्ठमय में प्रस्तुत किया अत्यंत ज्योति-कृपणकार की प्रतिभामय का प्रस्तुत करता है और लाब-लाल प्रवाणिकता के ग्रंथ गहरा बिचार की पूजा करता है।

नारी के प्रस्तुत दुर्गा:
---------------------

र. ६० के बाद जिसी गयी साठौं हरी नाम के नीचे आने वाली कविताएँ नारी के विचार में निवासित निरुपम गुरुत्वाकर्षण प्रस्तुत करती है, तो निवासित के दर्शनी निरुपम दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी दर्शनी

नारी का सत्य, साधन वनस्पति लोकनायकों की नयी दुनिया का निरापत्त कर दे तो वह अभिनवता है।

पैदे - कवि नारी के लाख रहकर एक विषाणु अनुग्रह की अभिनवता करते ही वह शैले सीतारा बन पड़ी है।

पैदे -

तुम्हारे साथ रहकर
अवर मुक्त बना है
कि हम ज्ञानवार्ता ही नहीं
संप्रदायों से जिंदे हैं,
हर दीवार में क्षार का जला है
और हर दरा है पूरा का पूरा
पाउड़ गुज़ र जला है।

इन मुद्राओं के अवर मुक्त मानव स्वातन्त्र्य, मानव-विश्वस्ता, मानव विश्वस्ता आदि
मुद्राओं की गृहीत प्रादेशिक कविता के अन्तर्गत की गयी है, वह काव्य धारा के
कवियों ने उनका आदर किया है। काव्य की सार्थकता एवं नये मुद्रे के लाग में

--------------------------------------------

४. लक्ष्यपत्र चयाद सकोता, कविताएँ-२ पृ. ३५.
स्वीकार नहीं हैं। अंतः-अनन्त द्वारा जीवन, हजार पार्श्व, और आत्म-हत्या आदि अनन्तमूलक आशुनिव बादायाँ के विन्दु जीवन की सार्थकता मूल्य-वान मानी नहीं है। भारतीय मनोरंजन के अस्तित्ववादी दर्शन पर यह ध्येय है।

वह राष्ट्र हैं जिन्हें कैसे जीवन जीना नहीं है, जीवन को मानने उठाने से ऊपर काना सार्थक बनाना नहीं है।

वार्तालाप दर्शन के एक अन्य रूपान्तर ने वही जीवन जीवन नाम से

अन्वयनत को हैं:

अस्त कैसे यह वस्त्र हैं कि चिट्ठा रहने के गीत हैं,
अस्त नहीं, अस्त नहीं हैं।
तो रामनाथी के क्या राजन्यां को बनाने करूँ?
राजनीतिक नामां के मध्यस्त पर नहीं हैं।

आत्म गौरव या मुनुष्य स्वाभिमान के पहले का आवर नी मिला गया है। आत्म-

गौरव के अन्य में जोने की सार्थकता वहा कैसे?

में एक दिन पूरे दिन
मुक्त रहूँगा,
कुम फरीदी,
लात दिन पूरे दिन
पेट की अपने यमुना पर,

हूँ तेरा करो,
कि अनुरूप कर कर,
अप्पर जगह,
अपना नाम लेंगे,

-----------------------------------------------

१. घुमिल : खंड दे संख्या लग, पृ० ५४ ( माँजीराम कविता १५५० के आवर गौरव नामक)
नी उठे।
में रख अस्तित्व हुं
भिन्नरी नहीं हुं।

पी, एक, ४४० के लिखा कवि की प्रतिकृत यमार्य में सच्ची है। पशों के सम्बंध के लिए इतिहास का एक कवि मुद्रण के आर नरेश और उसकी विशेषता का गान करता है, और आनंदीमय के गीत का पशों की मदद को नहारता हुआ मुद्रण की मदद को मोहत करता है:

बड़ी बड़ी पशों के
विषय दुट्टे पर धर होती हैं
दुट्टे हुं आवमो पी कहता है।
दुट्टे हुं आवमो चलता है,
आवमो द्वितिए न हों लाग उठे
आवमो विश्वास न हों बुड़ा जाये।

जाहितिक या काव्य मुद्रण की दूरा से जातीय कविता:

नये अध्यार्य के काव्य मुद्रण उपमनों चक्कर करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया था कि पारस्परिक से मुद्रण करते हुए दुसरे पारिकृत में एक र सामान न हो न हों लाग उठे, उसी के स्थान पर विषय के अंश, विषय, अनुभूति की विधानार्थी के दाएं किया गया चरण का विचार, चित्र के रूप करने की बारत आदि पर

1. समानें: उपमान - ३० प्रतिव, पुं. ५०।
2. कविता और विशिष्ट: उपमान हां इदनुभाष मदन पू. ३६० विशिष्ट तुमार
दुट्टे हुं आवमो।
कर देना खुश हो गया है। कृतिके श्रीमति देवी प्रस्तुत-मूल्य-माफ़ी में नीचे पाठक या माफ़ी की आशा कुई है या वह कम पूर्वतानन्द नहीं है। साहित्य रचना क्या वार्ता हुई है? वचन एक प्रथा है किसी संस्कृति या पद्धति की प्राप्ति का प्रमाण के लिए कोई का साहित्य है? क्योंकि वर्तमान के संस्कृति की प्राप्ति तक की वाद-विवाद में नहीं है। आगर ज्ञान करना नहीं। संस्कृति या साहित्य का कोई चिह्न नहीं है और वह अन्य देशों से भिन्नता नहीं है। अगर ज्ञान करना हो, संस्कृति या साहित्य का कोई चिह्न नहीं है। अगर ज्ञान करना हो, संस्कृति या साहित्य का कोई चिह्न नहीं है।

मनुष्य को लड़-उत्सव चैतन्य का पुनक, सभी परिस्थितियों में समानता प्रमुख मूल्य स्वकीयता के प्रति बना अपने प्रति से सम्बन्ध के प्रति पूर्व्यता स्वयंसेवा का पुनक (मनुष्य) उसकी अन्वारण कमुदित प्रति अस्तित्व रहने की प्रति बने बाली कार्यका पूर्व्यता की स्वतंत्रता में कम न अन्याय बाय। केवल अस्तित्ववादी, अपने को निरोध मानने वाली परिस्थितियों की स्वतंत्रता के अध्ययन के माध्यम से कठिने तथा मूल्य की उपलब्धि बने नहीं हैं। कुठार, अनींवादता दिनदा एवं दुःख का चिह्न ज्ञान करना और उनमें अपने को दोष तथा सत्संदर्शन का सूक्ष्म नहीं है। कुठार दिखे ज्ञान कर सके और वह अनुप्रयुक्त के प्राप्तव्य हो, मनुष्य के स्वकीयता के सम्बन्ध में अन्यथा वायुम हो सकता है। कुठार की प्रति है कि साहित्य में बदल और अर्थ या कथा और खिल का विचार परिवर्तित है। अर्थ साहित्य का शास्त्र वह है जिसमें कथा की सत्संदर्शन के और वह भी। कुठार को प्रागृहाश्चालन करने के लिए न केवल वजन या अनिवार्यता की लेकर लाना लाभ, कथा के प्रति नहीं उच्ची ही निपटा वर्तमान है। जब वह है कि तेरे से संभाग कथा और खिल दोनों का विचार लाभ-लाभ होता है। कथा के विचार का अर्थ है - तेरे लगातार जीवन की एक समावेश्त सृष्टि (Vision) की और अन्तर होता। इस कार्यका कोष्ठद के प्राप्ति उनी तेरे को चैतन्य में परिवर्तित हो जाते हैं, जो जीवन को समग्रता में अर्क्याक में ले जाते और गाने को कम रूपक है। जीवन के रूपक खिसूँ नहीं हैं। खिसूँ नहीं: इस बुद्ध में कल्पना चाराओं और ये स्वयंभूत मूल्यों पर आधार और आस्थाओं का विकसित हो रहा है। ऐसी स्थिति में जीवन का
एकौन, अर्थ-पूर्ण गरिष्ठत्व प्राप्त करता अपने में एक बड़ी चिंता है। हमें यह भी
देखना है कि अनुमति बाधाओं पर चिंता का किंचि घटना एवं अर्थ के प्रति अपने दाताध्यक
को समझने में कहीं सक्रिय हुआ है।

पिछले पुस्तकों में बौद्धवाद के विषय में कहा गया है सक्रिय अर्थ यह भी
नहीं होता कि तुरंत अग्रदृष्टि का वांछन में प्रदर्शित किया जाय। विशेष: राजनीतिकता के
स्पर्श से राजस्व निर्माण साधित है या कार्य गुण से अपने को परिपक्व नहीं कर सकती।
इस नदी गुण के स्थिरता में तुरंत की निगमनरत करने का अर्थ एवं अर्थ में आत्मगत होता है।
बौद्धवाद के परिणाम स्वरूप एक तत्काल रचनाकार में वर्तमान रहती है जिसमें यह,
व्याख्यात्मक की अनुमान व्यापक रूप से देखने में सक्षम हो सकता है। वह रचनाकार यही
अर्थ में व्याख्यात्मक की व्यापक रूप से देखकर उसका अर्थ करता है उसका प्रभाव नाकक पर
अवशेष रहता है।

पिछले कुछ वर्षों में ग्रन्थकारों नामक नदी पूर्व की चर्चा जारी-बाज़ होती
रही है। प्रतिबद्धता है वह लिखकों प्रति ? क्या प्रतिबद्धता केवल एक राजनीतिक नारा
है। प्रतिबद्धता - रचनाकार की प्रतिबद्धता आप की जितकी और निमित मानन-नियांत ने
पारित किया है इसका प्रति है अथवा प्रतिबद्धता कि वह वही आप की निमित मानन-नियांत ने
स्वीकार के प्रति है। प्रतिबद्धता निमित की मात्रा में राजनीतिक प्रति या नारा नहीं
है। यह तो यह है कि प्रतिबद्धता का राजनीतिक के ही-फैसले से अत्याकृष्ट जोड़ने की कोई
अवस्था नहीं है। यह प्रतिबद्धता पहले दशक , ऐसे एवं राजस्वीय स्थायीत्व की मांग के प्रति
रही। स्थायीत्व के परिवर्तन के लिए अजैविक के प्रति रही, परस्तु राजनीतिक की निर्देशन के
कारण नीतिकता या तैत्तिक मुद्दों के नियंत्रण के कारण वह दिशा न रहे पायी है
और दुश्मनी रही है। दिन-बिन्दु विवाद के देशों के निकटरक से कारण जबकि हर
देश की स्थिति दूसरे देशों की स्थितियों से चुन-मिल गयी हैं तब रचनाकार के लक्ष}

--------------------------
1. डा० देवराज : प्रतिबद्धता, पृ. १५५।
2. डा० परमानन्द शीवाल्मव : नवी जीवन का परिश्रम, पृ. २०६-२१६।
अधिक व्याख्या स्वरूप पर मानवीय नियत के प्रति ग्रिहीत होने का अनुमान होता है।
ईसामाने के ही ग्रिहीत का बचना कविता, ‘व्याख्याता’ और जीवन के आदर्शों के द्वारा प्रकट किया गया है। इस वजह से के प्रक्रिया में हमें रूपरेखा की मात्रा में सत्यन्त्र करती है, उल्लिखित ही मात्रा में ‘व्याख्या’ की कार्यक्षेत्र है। और वह व्याख्या के जीवन की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका उत्पन्न करती है। विकास से जीवन परिवर्तन है और जीवन के उत्पादक से प्रतिक्रिया की जीवन-स्थिति का सही साक्षात्कार है। प्रक्रिया के लिए आवश्यक तत्व हैं।

इच्छा अर्थ में देता जादु वो धारावधारी कविता की एक हर्ष हमें कुछ जाहीर है—
किया —
हम तो आजा का आरा हे है जीवन
अन्य हे क्या वात हाय बात न हमसे कठिने ( पुस्तिका सहाय )
‘विषमचित्र’ की कुछ मानवीक प्रक्रिया’ जिस को द्विमूल्य कर देती हैं:

देता विषमचित्र को

...............
सप्तहिंड जटाधास राशीमूल
कारने से हैं
पुष्प आदि हैं सुना ( (विषमचित्र)

यहाँ श्रृंगो चन्द्रमा का विषमचित्र अनुक्रम मानवीक रूप से स्वरूप ने अंकित किया है।
लेखिकाके द्वार प्रति का अनुपस्थित का एक सरस निर्देश उपलब्ध है:

आदि हैं। सिर रघु को। जी-पर तरंग है। लोक कहीं हिंद है
मगर मन में अंधेरा तक। स्वप्नवार्ता। तो।
उल्लोक-खाबाही विषमचित्र प्राण। अथवा वह रहा है। (विषमचित्र)

उन मानवीक अवस्थों के अंतरित सुपारे ‘व्याख्या’ के द्वारा छोट करते वाली प्रक्रिया की
वादोवादी कविता में कभी नहीं हैं।

---------------------------------------------------------
6. बाल परमाणु शीरसाक: नया कविता का परिषेषय, पूर १९४५.
युद्ध की तिथिमात्रा से फिरे हप
युद्ध की तलाशित हो गये हैं
जीवन के निरन्तर बुझते हुए हप
मात्र युद्ध के लिए शीघ्र हैं। (लंदन से ) (दृश्यावधान पालीवाल)

और
हुई ले गय मुर्मिका बनाया
एकर। जैसे जागीर की (अथवा खण्डन की)
और हुई लेग। बारा समय। कहीं जाकरे
लाशों की। ( माया दर्शन : जीवनान्त करत)

अन्तः
यह मनही। वे चित्रकाय। वे हैं। हुई हुई
कृपाली में पत्थर रहे। आचार्य शास्त्र पर गया।
जो ची रहे। (दृश्यावधान : कथानीशान्त कसर)

यह में दृश्यम है —
जरूर है फिरसे युद्ध में पहाड़ उठते थे।
वेने शिक्षा मुखब्रह्म को चालाते देखा है

और आज भी फिरे बहुत-बी। (यह युद्ध नहीं: अन्तिम कुसार)

छठ तारह देश के विश्व सारथियों के एवं मुन्नासीता के ज्ञान व्यंग्य उपर आया
है। इन नये कवियों में अन्तर्गत तारह के साथ देश, अलापन की रचनाओं गर
हरिया घाट की हैं और यह तारह दूसरी हुई नैक्कला और चैतना को अविवाह प्राप्त की
है। यह एक तारह अपने दावितें को निन्दित करने का अघोर मार्ग है। तुकुम्भ-संहार
वर्गेश्वर, दूमिक, राणाजीत, राजमाला नाथी, लोगों में अन्य चैतन्य के अभिविन्यास के
कई रचनाओं में व्यंग्य की अभिविन्यास के साथ नाम-विनियम के गृह राण्य कहने का
नाम स्पष्ट पता था। वे केंद्रमा, भूमिकाव, हृदे के नाम पर अपने को केतना
कहीं बाहर का नाम-विनियम के विलय अपनी आबाद अवाव करते हैं — चाहे वह
अरोरा के फिरावण हो या ध्वनि के गृह।

बाहर की चौथी कविता के अन्तिम उठे हुए आवाज, चोट जड़ी, भूषा पीड़ी
आदि मान्यलग्न आग्नेय अवाद प्रोत्साह होते हैं। वे आन्तिक चुनून्हा का असी हुए आवाज
करने की अधिकता चिनाना, धुंगास्पद एवं कुर्सा से युक्त चित्र आकर अर्जित करने की विवरणता का मान्य पेश करते हैं। जो कविता या आन्दोलन जीवन में उन्नतियों के स्तर पर आस्था को स्वामित्व करें अथवा उनकी आवश्यकता का अनुमान करने की आन्दोलन जीवन की गात्र देखते हैं। अन्ततः फिर ज्ञ से नीरन एवं विवरण से समर निवास के द्वारा जीवन को क्या उल्लेख ग्राप्त होगी? साहित्यिक कविता में फिरौरूस का अंग आलोचक है तीन समय में ग्राप्त हुआ है। कविता के लिए आवश्यक भर्ती है यह वर्तमान की घटी और मित्रार्थक भूमिका है। साहित्यिक कविता जहाँ तक चौहान कर उन्हें अपनी बर्तमानीयता को आयूष्य करने में सक्षम है तब तक वह अपनी चालावटा आ सक्षमता में नीं कविता रहेगी। केवल नारें या सूत्रों के पुकारों की मापना में वह सीमित रहना चाहेगा क्योंकि भाषा का चित्रण करने वाली रचन होगी। इन रचनाओं के स्तर एवं मूल्यास्त के विषय में काद-पुराण को न्याय दे लक्षित है।

प्रायोजक कविता के अंधन साहित्यिक कविता का सींवर्ध बीमार जीवन के अन्य स्तर का - बुद्धि एवं प्रश्न को लिए ग्राप्त हुआ है। साहित्यिक कविता की जीवन सींवर्ध बुद्धि मानव वार्ता की अवधारणा के लिए, व्यक्ति की नहीं समस्या के साथ एक सीमित घरैयां के बाहर रचना कर अवधारणा सींवर्ध आवश्यक स्तर करती है। इस तरह वह अनुभव को सीमित में साथ कविता के स्थापना एवं परिमाण साहित्य की भाषा में अभिव्यक्ति हुई है। कविता निरूपित लुप्त हो जा ग्राप्त हुई है।

निर्क्रिया:

साहित्यिक कविता में युक्त कक्षयों के निरूपित एवं आक्रोश के स्तर के साथ गहरी निराकरा का सुधार पाना नें उम्र आया है। अवधारणा के कक्षयों की जीवन-पुरस्कर उपाय के मजबूत के लिए नहीं है। गहरी निराकरा से परसुगण उन कक्षयों की कविता में वैद्य बिना वस्तुतियों द्वारा घरा हुआ है, इसमें बहते-बिहते मानव-मुद्रा ही हैं, जो संकुचित निरास-संकुचित है, जीवन-पुनर्वरित्ति गीत है। ऐसा स्तर ग्राप्त है।

केवल महानगरीय जीवन बीमा से समस्त मानव-व्यक्ति को मोड़ा और दुखित कह देता समस्त मानव-व्यक्ति के लिए अपावन का चुकाना है। तो बुद्धि और दुखवोधक, रूपें निरूपित
(४७६)

यह मानस की कविताओं में आशा का स्वर जोंचा उठा हुआ है जो स्वस्व-नमस्ख- नियंत्रण करता है। आदर दांतवेदी की लघुताओं में दुलिया के चारे जन्मा है जिसमें हुए गदर सातिक लघुत्र अर्थ और समाज की बाज में आग का व्ययार गुलाव है। उन्होंने काव्य-संरचना अव नी लघुत्राओं का बोलक रहता है। उन्होंने चित्र

विश्वास, जूता जंगले एवं इंडस्ट्री रचनाओं स्वम्भर की हुक्को है। राष्ट्रीय कलेक्टर गर्गित के प्राण वास्तव हैं और लघुत्राओं नियमानुशास्त्र है। प्रवास उन्हें अन्नदाय और भिड़ेर दरी क्यों हैं। जब टीश हरिया की शीर्षक "हरिया" की शीर्षक "हरिया" के दरी क्यों है, उनमें अनुमति का नुक्कर विवेचन नहीं है। दुर्लभित्र सूत्र की कविता में सप्रतिज्ञ नियमानुशास्त्र का व्याख्या वाँछनीय समय क्षण के लाई चित्र दिया है।

बाबूदेवी कविता में मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है। मानस का स्वर कविता परस मौर्यकला ने किया है।
की वस्तुधर्म, कैलानिक दृष्टि, पांडे के प्रति विक्राण की मात्रा, मूल प्रत्ययों
के प्रति आक्रोश यह उच्च निपटार उसका एक उपर्युक्त सम्पूर्ण रूप से प्रयुक्त करते हैं। मनुष्य निर्भवि
के प्रति प्रतिक्रिया की मात्रा भी उसे एक ताज्जूत रूप से नागृत दृष्टि उद्देश्य करता है।
उपर वाल्मिके में पुष्प की पौशी, गठबंधन सोमिन मूल की लूकारकीः
माणु मुखर की वंद-लंद पांडे फर्न, बल्लर-की-समुद्र-थे-समुद्र, राजकुमल जांचरी
की पुष्पि माण जननानान मृत्यु बुकिया हैं।